

NOT FOR SALE

शिवोऽहम् शिवः केवलोऽहम्

जून 2000

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यज्ञ

विज्ञान

मुवनेश्वरी कथा

गणपति और काल्पि-सिद्धि

एक मास में दो सूर्य ग्रहण

अनुभूत शिव साधनाएं





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

श्री वृक्ष-वृक्षाश्रम

॥ ॐ परमं तत्त्वाद्य ग्रन्थाद्यणाय वृक्षकृत्यो द्वारा ॥



सद्गुरुदेव

सदगुरु प्रवचन
सदगुरुदेव पूजन
गुरु वाणी

साधना

पारदेशवर साधना	27
महामूल्युग्र साधना	28
पाशुपतास्त्रेय साधना	29
सद्गुरु प्रयोग	30



विशेष

सूर्य ग्रहण	37
चन्द्र ग्रहण	41
निष्ठिलेश्वर समर्पण	85

विवेचन

शिवोऽहम् शिव तत्त्व	19
शिवलिंग रहस्य	23
महागणपति	55
इश्वरपनिषद् ज्ञान	72

उत्तोत्र शवित

भूवनेश्वरी स्तोत्र	77
--------------------	----



कुष्ठडिलनी

क्रिया योग रहस्य	49
------------------	----

अट्टभानी

तातोक्त नारियल	69
----------------	----



वर्ष 20
अक्ट 6
जून 2000 पृष्ठ 88



सिद्धाश्रम, 306 काशी पत्तलपुर, गोदावरी निलो-110034, फोन: 011-7182246, टेली फैन्स: 011-7196700
मोबाइल: 9810101010, ईमेल: siddhashram.org, वेबसाइट: www.siddhashram.org, E-mail add.: mtv@siddhashram.org

प्रेरक संस्थापक

डॉ. लालायणवत् श्रीमाली
(परमहंस स्वामी
गिरिश्वामीश्वराचार्य जी)

प्रधान सम्पादक
श्री विश्वामीश्वर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
एवं संयोजक
श्री वैष्णवाचाचन्द्र श्रीमाली

दयवद्वायक

श्री अर्पितद श्रीमाली

रामादन गुलाहंगार लाल
डृगो गम चतन्य शास्त्री,
श्री गुरु बेक ओवलम्बन,
श्री रमेश पाटील, श्री एस. के. मिशा,
श्री जान. सी. निंदा, श्री बामाप्रहर
महापात्र, श्री बलन पाटील, श्री
सतीश मिशा (ब्रह्मदेव), श्री एस.
मार. विंडर, श्री सुर्पीत सतोकर,
श्री विजय शास्त्री (हरियाणा),
श्री वृषभा गोडा (बंगलादेश),
उमा पात्र, के. धीराज (निमाया),

प्रकाशक एवं स्वामिन
श्री वैष्णवाचाचन्द्र श्रीमाली

द्वारा

नील कार्प इन्स्टर्स

102, DLF इंस्ट्रियल
एलिया, मोती नगर, नई दिल्ली
से मुख्यत तथा

मंत्र-तंत्र-वेच विज्ञान

ब्राइकोर्ट कौलाली, जोधपुर से
प्रकाशित।

मूल्य आवृत्ति अंतीम

एक ग्रन्थ 12/-

वार्षिक 195/-

नियम

पत्रिका ने एकाधित सभी रसायनों का अटिलर प्रक्रिया है। इस प्रत्येक-तरुण विश्वास भवित्व में प्रकाशित होते हैं जो सम्पादक का लक्षण होता अभिवर्द्धन होती है। लक्ष्मी-धूतर्क करने वाले लालक भवित्व में प्रकाशित पूर्व समर्थ के गले समर्थ। किसी नाम, स्थान व घटना का किसी से लोड रखना नहीं है, यदि कोई छला। नाम या तथा मिस बल्ले से उसे बचाया सकता। विश्वास के लेखक उपमहाव या द्यु-नन्त होते हैं अब उनके कोई कारों में कृष्ण भी उन्हें नहीं करते तस्वीर नहीं होता। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद-विश्वास या तक समझ नहीं होता वेरन तो इसके लिए लालक, प्रकाशक, गुरुक या सम्पादक विश्वास होते। किसी भी सम्पादक को किसी भी इच्छा के पारिवर्तनीय नहीं दिया जाता। किसी भी व्रकार के इन-विश्वास में चांधुर न्यायालय ही मान्य होता। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठ की बड़ी से भी प्रक्रिया कर नहीं है। विश्वास का लाभ से बेंगलुरु पर हम आजी १०५८ रु. न्यायालय और उसी समर्थ विश्वास यत्र भेजते हैं, यह उनके उपर के बाद में उसमें उसी व नक्की के बारे में अधिक जाप होते या न होने के बारे में उसमें उसी विश्वासी नक्की होती होता। इस विश्वास पर ही ऐसा सामग्री विश्वास का चाहत से भावयते। सामर्थ के मूल्य पर हर्ष व बाद-विश्वास मात्र नहीं होता। पत्रिका का अधिक शुल्क लैमान में ₹१५/- है, पर यदि किसी विश्वास एवं अस्तित्व कागजों से पत्रिका का ब्रेनियाल या बद्र कृष्ण एवं तो उसमें भी उन जापके धारा हो जाते हैं, तर्हीं में चांधुर राज्यवासी अद्यव वा वर्ष, तीन वर्ष या प्रत्येकी राज्यवासी में दूरी सामग्री इसमें किसी भी व्रकार की जारी या जातेवास किसी भी या में स्थानान्तर नहीं होती। पत्रिका में जानकारी किसी भी नायनामे सकारात्मकान्तर, जानी लाय के विश्वासी नाड़क वह स्वयं भी देखी तथा साथ कोई भी देखी जाताना, जो या उन प्रयोगों न कर, जो वैदिक, लालकिल इत्यादि नामों के प्रियर्तीत है। विश्वास में उकाशित रुद्धि के लेन्टक चर्ची व स्वयंसी लालक के विश्वास नाम देते हैं उन गम भाषा या ब्रह्मण विश्वास के कर्मशालियों ली तथा न होते हैं, गुणों की साथ पर उन विश्वास के विश्वास लेतों का भी उन वा त्यों समझें दिया गया है विश्वास की नायन यालक लाभ उठा जाके। साधक या लेन्टक इस्पन प्रत्याशिक प्रत्युष्मों व आधार पर जो न्यू तत्र या यत्र (प्रत्युषी व आधारीय व्याख्या वे इतर हो)। जाते हैं वे ही देखते हैं अतः इस भवन्यका में जातेवास करना दर्शक है। अवश्य तुम्हें पर या उनकर ये देखते हैं कोटि उकाशित होते हैं लालक न्यायालय में सामी विश्वासी जेटी भेजने वाले फोटोग्राफर विश्वास अटिलर की लागती हैं। दीक्षा यान लालक का रामपर्य कह नहीं है, कि नायन उन्हें विश्वासित लाभ द्युतेन यासा लाभ तर्के एवं दो धनों और भवत अप्रक्रिय है, अतः पूर्ण शब्द और विश्वास के नाय ही देखा जाना चाहता है। इस राज्यवास में किसी भवकर की जाई ही आपाति सालाहावन खोलाई रही होगी। तुम्हें या विश्वास विश्वास करना चाहता है।

प्राचीना

तोक प्रथन्यतित्वाद्वयके लिकरः
काव्येण वा हरिहरद्विष्वासमेति।
देवः य विश्वविश्वावाङ्गवात्सिव्यत्।
शक्तिः विश्व विश्वतु शक्तवद्वलव्यवः॥

जो विश्व जीवों के उपकारार्थ तानों लोकों को स्थिति पालन, नाश संहार और उपर्युक्त सम्बन्ध करते हुए विश्व, गुरु और ब्रह्मान्यजी धारण करते हैं तथा विश्व विश्व की शक्ति समस्त प्राणियों की बाणी और मन से अन्तर्लाभ नहीं है, वह स्वप्नप्रकाश विश्व परमेश्वर व्यवहा व्याप्ति कर्त्याण प्रशान्त करते।

३. सबसे लहान आहम ज्योति ॥

महर्षि वाज्वल्लक्ष्म वा पात्र महाराज जनक वेणु ये उन्होंने प्रथम पृष्ठा महर्षि से मन में एक शक्ति ड़, हम जो कृष्ण वेष्वते हैं वह कियकी ज्योति से देखते हैं।

महर्षि नेकदा आमेतो अन्तर्लाभाधरणा प्रथम पृष्ठा है प्रथेक लालक जानता है विश्वम् वा कृष्ण देखते हैं वह स्वयं की ज्योति के कारण देखते हैं।

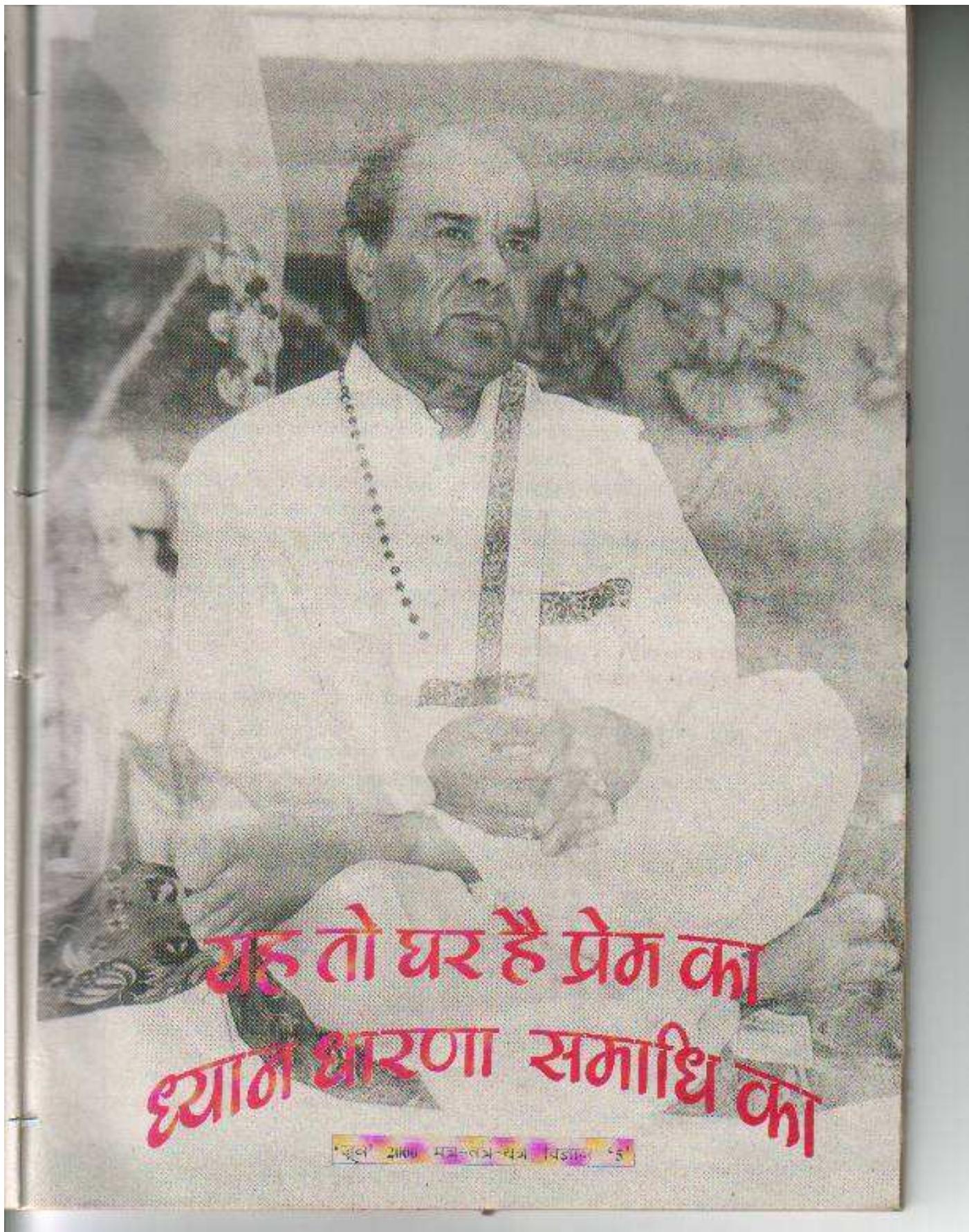
महर्षि नेकदा “तब सूर्य अस्ता हो जाना है तब हम विस्व प्रकाश रस देखते हैं” नेकदा के प्रकाश से जनक न पृष्ठा, “तब अन्द्रमा भी न हो, नदान भी न हो, अभावरसना के अक्षलों में भी प्रनवार जाऊंगा यात हो, नहीं? ”

महर्षि नेकदा, “तब हम शब्दों की ज्योति ये देखते हैं। विश्वास में जासों और विश्वास हे परिवर्त्याग नहीं याद है। वह अमाग जाता है, मुझे मार्ग दिखाओ?” तब इसगच्छीन द्वर खड़ा हुआ उप शब्द को सुनकर जहाना है, इधर आओ, ने मार्ग पर खड़ा हुआ और वह लालक शब्द के प्रकाश से मार्ग पर पहुँच जाना है।

विश्व ने पृष्ठा, “महर्षि! और जब शब्द भी न हो, तब हम किस ज्योति से देखते हैं? ” नेकदा बोल, “तब हम अस्ता की ज्योति से देखते हैं। आत्मा की ज्योति में ही संभव हो पाना है।”

वास्तविक ज्योति आत्मा की ज्योति है उस ज्योति को निरन्तर प्रज्ञविनित रखना आवश्यक है। सकन्तु अपने ज्ञान से शिष्य के भीतर स्थित आत्मज्योति को जाग्रत करते हैं शिष्य की इष्ट और परमात्मा से साक्षात्कार गुरु कृपा से आत्मज्योति में ही संभव हो पाना है।

योग्य विज्ञानभयः प्राणानु इथन्त ज्योति पुरुषः।



यह तो घर है प्रेम का
द्यान धारणा समाधि का

“द्यान” २००० रुपये - लेखन - प्रकाशन

आन में आपको हिमालय की उन उपस्थिकाओं में
मैर करना चाहता हूँ, हिमालय की उन बीजहाइड्रोजो पर जागे
बढ़ाना चाहता हूँ, जो कैलाश की ओर जाता है, जो भगवान शिव से
सामुद्र याप्त करने की आकाशा रखता है।

उत्तर में आपको अन नदी, नानी, पर्मर्गों और वर्षा चाहियों पर जाना
चाहता हूँ, जो वर्षा ने गंदित विश्व के ताज की तरह अद्वितीय प्रतीत होनी है... वर्षों के बे-
चाहणीद्वयों और पे गल्से चाहे ऊबड़-छाड़ हों, चाहे कटिने हों, चाहे इस राज्ञे पर टेहे मेहे पत्थर
पड़े हुए हों, परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि इन रास्तों का नो रामापन है, वह अद्वितीय है, एवं आनन्द
युक्त है, पूर्णा होने वाला है, जीर वहाँ पहुँच कर दूरी यात्रा की धक्कान अपने आप में रामापन हो जाती है।

ऐसे नमने लगता है, जैसे हमने आपने जीवन की कोई पूँजी प्राप्त कर ली हो, कोई निश्चि
अनन्द कर जानी हो, और उस पूँजी को प्राप्त करने के लिए, उस सम्पत्ति को इस्तगत करने के लिए कुछ
नीत्रण, कुछ परिश्रम, कुछ नकलीक वेखनी ही चाहती है।

उन रास्तों पर पैर लहूतुरुदान होते हैं, तो होते हैं, उसमें अकावट आती है, तो आती है, यदि इस रास्ते पर
धूप का सहन करना पड़ता है, तो करना पड़ता है, इसलिए करना पड़ता है कि इस यात्रा का प्रारम्भ जाहि कैसा भी राहा
हो, मगर इस का समापन अनिवार्य है, अलौकिक है। इस यात्रा की व्याप, धारणा और समाधि कहा गया है।

जहाँ जीवन का प्रारंभ व्याप से होता है, वहाँ जीवन का समापन समाधि से होता है। इसन जीवन का एक
अनिवार्य और आवश्यक तत्त्व है। पहले हम इस बात का विवेचन करें, चिंतन करें कि वास्त्रिर इस जीवन का
महत्वाद, मतलब क्या है?

जीवन का तात्पर्य है— वह सब कुछ प्राप्त करना, जो हमारे हाथ में नहीं है, वह सब कुछ इस्तगत करना, जो
अखण्ड आनन्द को देने में सहायक है।

यहाँ में 'अखण्ड आनन्द' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। अखण्ड आनन्द वा तात्पर्य है जो बीच में समाप्त नहीं
हो जाए। सुख तो आज है कल समाप्त हो सकता है।

आज वरीर स्वरूप है, कल बीमार हो सकता है। आज पेसा है, कल पेसा समाप्त हो सकता है। यह तो दुकड़ों
में जीवन जीने को एक प्रक्रिया है, अखण्ड जीवन नहीं है। अखण्ड जीवन तो केवल आनन्द के माध्यम से ही प्राप्त हो
सकता है..., और आनन्द वा तात्पर्य है, जहाँ किसी प्रकार का राग, द्रेष, छल, झूठ, अस्तव्य, व्याभिचार, दुख,
चिन्तण, देशानियाँ और बाधाएं नहीं हों।

— नहीं हो, यह बहुत बड़ी बात है, ऐसा नमन नहीं है, क्योंकि मानव जीवन छाना जीतन और दर्शीप हो गया
है, इनका कठिन और परिश्रम पूँजी बन गया है कि पग-पग पर कई बाधाओं और परेशानियों का सम्पन्न करना पड़ता
है, कई धननाओं के बीच में से गुजरता पड़ता है, और उसका प्रत्येक धण आग में से गुजरने की प्रक्रिया के समान
होता है। फिर भी आदमी उत्तराधि में से गुजर कर जो कुछ प्राप्त करता है, वह एक बहुत छोटी सी बात होती है।

— यादों के चंद्र सूर्य, मुख और पहनी, सम्बंधी, स्वजन, प्रश्नर्ग, मकान और वेश्वर ये सब ते-
नश्वर हैं, इसलिए नाश्वर है, क्योंकि ये आप हैं, नब तक हैं, यदि आप नहीं हैं तो किस दृष्टि की
अस्तित्व नहीं है।

आप निश्चय इन जीवन यात्रा समाप्त कर लेंगे, उस दिन आपके पास इस
इरार वें से एक मुद्दा भर राख के अलावा कुछ प्राप्त होना ही नहीं। आप

जब जीवन को मुकुल दे याए तो इस आनंद वाली पीड़ियों को "अमृता"
मन नन्द के अनावा कुछ दे रहे हैं।

आपके पास कुछ रहेगा नहीं, क्योंकि आप जो कुछ अनुभव
कर सकते हैं, जो कुछ आपने उपार्जित किया है, वह तो धर्म भगुर है,
इसलिए बाण भगुर है, क्योंकि आप हैं, तब तक वह है, यदि आप
समाप्त हो जाते हैं, तो वह स्वतः ही आपके लिए समाप्त हो जाते हैं।

यह आपके जीवन का अस्तित्व नहीं है, और आपके जीवन का धार्म भी नहीं है
मान नहीं है, इसलिए इसको आनन्द नहीं कहा जा सकता, इसलिए इसको अखण्ड नहीं
कहा जा सकता — और मैंने शब्द प्रयोग किया था अखण्ड आनन्द।

अखण्ड आनन्द का तात्पर्य है — एक ऐसा आनन्द, जो संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक
समान उपयोगी और अनुकूल है। सुख तो प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग हो सकता है। कुछ व्यक्ति
धन प्राप्त करने में सुख अनुभव करते हैं, कुछ व्यक्ति अपने शरीर को मजबूत और तनुस्लत बनाये रखने में
सुख अनुभव करते हैं, तो कुछ भी जिलास में सुख अनुभव करते हैं और कुछ भार-पीट, छल-कपट में सुख को
अनुभूत करते हैं।

सुख तो प्रत्येक व्यक्ति का अलग - भलग होता है, परंतु आनन्द तो संसार के प्रत्येक प्राणी का एक जैविक
होता है। प्रत्येक व्यक्ति उस आनन्द को प्राप्त करना चाहता है, जो तनाव रहित हो, जहाँ किसी प्रकार का तन्य
नहीं हो, जहाँ किसी प्रकार की अ्यार्थी नहीं हो।

और सुख को नारभाव शारीरों में को के क्षेत्र जहाँ सुख है, वहाँ कुछ अवश्यगंभीरी है। भर्तुहारि ने कहा है कि:

भौजे	सोमभवं	कृते	चुतिभवं	विन्ते	कृष्णाद	भवं
सौजे	देवय भवं	वते	दिषु भवं	स्वये	जराया	भवं ।
शस्त्रे	यातभवं	जुने	एवत् भवं	काये	कृतानन्ताद	भवं
सर्वे	वस्तु भयान्तिवत्		भुयि	तृणां	देवरात्यसेवाभवं ॥	

भगव भोग के, तो रोग की चिन्ता हर क्षण बनी रहती है, क्योंकि जहाँ भोग है, वहाँ रोग होगा ही। जहाँ कृत
है, जहाँ नाम न के, वहाँ हर समय आवाका रहती है कि कर्ता उद्देश नहीं हो जाए। उस समय में निपुणताएं आवासी
नहीं घूम सकते, हर व्याप उपको भय रहता है कि कहीं नेरा कायं ऐसा नहीं हो जाए, जो अपने आप में मेरे लिए परेशानी
आ कारण बन जाए।

वह सब कुछ करना तो चाहता है, मगर वह चुपकर करना चाहता है, गमाज से ऐसे हट कर करना चाहता है।
इसलिए कि हर धर्म एक भय की आकृतता उपके ऊपर बनी रहती है, और यदि पास में पेसा है, तो प्रत्येक धर्म हर बात
की आशंका और दुश्चिन्ता रहती है कि कोई नुरा नहीं ले, कहाँ दिलासवात नहीं हो जाए, कहाँ मेरा समय कम नहीं हो
जाए।

— और यदि हम बिल्कुल नीन रहते हैं, जबादा नहीं बोलते हैं — तो लोग यह समझते हैं कि यह व्यक्ति चिन्न
नहीं है, शास्त्रों का जानकार नहीं है, मूर्ख है।

इस बात की भी चिन्ता रहती है कि ऐसा नहीं हो जाए कि जोग इसे देख करने लगे, गूर्ख करने लगे,
इत्यालेह मीन रहना उन्मत्त भी अधिक तकली उद्यायक हो जाता है . . . और यदि बगवान है, इसी रूपान्वय है,
तावृकूल है, तो इस बात की हर समय आप का रहती है कि कोई बदलने आ जरके नुझे पड़ाए नहीं है,
बदलने में नहीं कर दे, परं नहीं दे, परापृत नहीं कर दे।

एक प्रकार से देखा जाए, तो प्रत्येक सुख के पीछे एक दुःख लगा हुआ है, और
जहाँ कुछ है, वहाँ तनाव है, वहाँ आशंकाएँ हैं, वहाँ दुर्विज्ञान है, इत्यालेह सुख तो

अपने-आप में कोई महत्वपूर्ण वस्तु नहीं है।

इसलिए महत्वपूर्ण बस्तु नहीं है, कभीकि उसके तीन हेतु है – सुख एक मृग गर्वधिका है, तो जान है कल नहीं है। सुख धृष्ट भंगर है, कठ धर्मों के लिए सच्च प्राप्त हो सकता है... और वह सुख होने वाली बस्तु है दुख का कलश बन सकती है।

जो प्रत्यी हम लाते हैं, वह सुख का कारण है, यदि वह करक्षण निकल जाती है, तो वही दुःख का कारण बन जाती है। जो समर्पण हमें उपर्युक्त की, वह सुख का कारण तो है, मगर हर अपयोग का बनी रहनी है कि कोई उसे चुरा नहीं सके, यह स्वतः ही दुःख का कारण भी बन जाती है, इसलिए सुख आपने आप में कोई महत्वपूर्ण, बहुस्वर्ण बना नहीं है।

भगवान् अश्वपद ज्ञानन्द की अनुभूति अपने अप में महस्त्वपूर्ण, अभिव्यक्ति और अद्भुत गत्व है। एक ऐसा गत्व है, जिसे प्राचीनोंके व्यक्तिमत्ता प्राप्ति करना चाहता है। वह चाहता है कि वह तमाम रक्षित हो, वह चाहता है कि उपरोक्त गत्व में किसी प्रकार की धिनाई नहीं हो, वह चाहता है कि किसी प्रकार का दुःख नहीं हो, वह यह चाहता है कि किसी प्रकार का शोग, अथवा कलह की स्थिति नहीं बने।

जारी साधन बृद्धन मात्र से अधिक आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता, उस के माध्यम से आनन्द नहीं चर्चीदा जा सकता, ताकि वे भाष्यम से आनन्द पूर्ण विग्रह प्राप्त नहीं की जा सकता, बुद्धि और चर्चागई से हम आनन्द को दृष्टगत नहीं कर सकते।

आनन्द ऐसी वस्तु नहीं है, जिसे प्राप्त किया जा सके, आनन्द तो लवय के अंदर से निकलने वाली ऊँचाई को कहते हैं। हवय के अंदर से एक रस प्रवाहित होता है, एक ऊँचा प्रवाहित होता है, एक चैतन्यता प्रवाहित होता है, एक ऐसी स्थिति प्रवाहित होती है, जो अपने-आप में निमग्न कर देती है, जो मस्त कर देती है, जो बेस्थ कर देती है, पागल कर देती है। वह अपने ख्यालों में, अपनी ही सृजनी में झगड़ा रहता है, और उसे वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जो जीवन का एक आवश्यक तत्व और गुण है।

ब्यक्ति का सारा तत्व सरी कहना है, और आवंटित हस्तान में है कि उम्मीद सुख, शोभाज्य धन, यश, माल, पद और प्रतिष्ठा मिले, गगर हमें साथ नहीं दें, इसके साथ ही साथ उसे किसी प्रकार की छिनाएं नहीं हों, यिसी प्रकार की समां में दश्चिन्ता नहीं रहे, बव नहीं रह, आँख नहीं रहे।

जब मन प्रसन्न होता है, तब उनमें काम आनंद होता है। जब मन प्रवल्ल होता है, तो आनंद की अनुभूतियाँ होती हैं। जब मन प्रवल्ल होता है, तब उनमें काम उद्देश्य होता है। एक प्रवाह होता है, उस प्रवाह को उस उद्देश्य को आनंद कहा गया है।

अगर यह आनन्द जीवन का इतना आवश्यक अंग है, तो यह आनन्द किस प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है, कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

इन ऐसे बनाया कि यह अनन्द रूपयों के माध्यम से तो नहीं खुरोड़ा जा सकता, ताकि के माध्यम से भी जीता नहीं जा सकता, इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए तो अपने हृदय का गंथन करना पड़ेगा, हृदय वे रूप प्रवाहित करना पड़ेगा, हृदय में उस रस का प्रवाह देना पड़ेगा, जिसके माध्यम से एक अलीम आनन्द, एक नमाम रहित गौरव, अपने-आप में चिन्नामुक गौरव की स्थिति बन सके... यह चिन्नामुक गौरव जीने की ओकलभन है, जो किया है, वही अपने-आप में ध्यान की प्रक्रिया है। इसीलिए इमए गणे उपनिषदों ने ध्यान को एक महत्वर्ण नियम घोषित किया है।

मगर उसको इस भाव का जान हर संलग्न है ते योगीक अन्यतो कमीशुल प्रवाल की विश्वा नहीं ही नहीं इन्हें बीच अपने दोनों में कमी इस प्रकार की शिक्षा भी दी जाती है इसके इन चौंक की नहीं दृष्टि तेज़ विद्या जैसा एक गोदा विनायक, विरचाम की, खूब जन को सम्बोधियों की प्रयोगियों को विश्वास दी जाती है यह आपका जाप-जागा भवति

जैसे दस्तकें, तो उसका निवारण ... अर्थात् नीतियाँ भले ही बहुत दे नाएँ, प्राप्त गोपनीयता ही उसका सफलता की जाल, बगड़ा बोलने का अप में बेसा का धैर्या बन, रखता है, जैवा बह लेकर आता है।

और उनके सामरिक व्यवस की पूछता। गान्धी ही नहीं, वे नातों, वे लेखन नवाचरण रखने वाले वन मकानों, जानन्द की अनुद्दीपन वाले वो सकारी, बाहर सेवा में जाह्ने, वे उठ ज्यवली, जीवन में एक प्रश्न हम हमें उड़ाकता, आख्यों में एक चमक, एक अवकाश का माहौल नहीं बन सकता।

अस्त्रों में एक प्रमाणता, एक चमक, एक आग, एक रफूनि, एक क्षमता, एक धैर्य और एक मम्म रहने की प्रक्रिया के बहुत आवश्यक से ही संभव है, और वह आनन्द के बहुत ध्यान के लिए ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसलिए वहाँ आवश्यक जीवन में सफलता प्राप्त करना सामाजिक दृष्टि ने आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार से अपनी पृथगता का इन्हिं के लिए, अपने आनन्द की प्राप्ति के लिए, तनाव गठित जीवन जीने के लिए आंतरिक जीवन को सम्बद्धना और आंतरिक जीवन के बीच करमा भी आवश्यक और अनिवार्य है।

आतंकिक नीतिन कारों में इस उन्ने ही कमजोर और कोई है, जिसने जन्म के समय में था। इसलिए कि हमारे नीतिन में कोई नहीं भित्ता नहीं, किसी ने इसारा हाथ नहीं पकड़ा, किसी ने राख्या पर चलते हुए टोका नहीं, किसी ने इससे कंधे पर दाढ़ नहीं रखा, किसी का वरद-इस द्वारे रिह पर रहा नहीं, किसी न इसमें समझा नहीं कि तुम्हारे जीवन का आतंकिक तत्व ज्यादा महत्वपूर्ण ज्ञान मूल्यान्, ज्ञान सार्थक है, ऐसा किसी ने बताया नहीं।

— और नहीं यताएँ, तो ज्ञावेनदः य उन लक्षणादा के पास भाग्ये पले जाते हैं, जिनकी यात्रा पहुँच और सम्प्रोति पर जाकर सम्पन्न होती है।

‘मां जीवन जीने से क्या कायदा है? ऐसे जीवन का अर्थ क्या है उपयोगिता क्या है? ऐसे जीवन में क्या लाभ होगा? वह जीवन तो जरूरी-आप में नहीं है, व्यर्थ है? मरण के बाद उस जीवन की कोई उपयोगिता, कोई गूढ़ नहीं रह जाता। इसलिए अपने आनंदिक जीवन में प्रवेश करने की किया जीवन का एक धूम है, जीवन का एक ग्राह्य है जीवन का एक सिन्दूर है।

इसलिए आप हम जीवन के जिस पड़ाव पर हैं, जिस पर उम्र खड़ी पर है, जहाँ पर जल स्वरूप है, जो आप साल की अवस्था नहीं है, चाहे आप हमारे बास साल की अवस्था में हैं, चाहे आप पुक्ष हैं, चाहे आप स्त्री हैं, चाहे आप भाषण अच्छे हैं, चाहे आप बुरे हैं – एक प्राण जहाँ सकते हैं सोचना हो पड़ेगा। किएया तो नहीं है कि हम आधा जीवन हो जो रह है? ऐसा ने नहीं है, कि आधा जीवन हमारा क्रोध का कोरा ही रह गया है? ऐसा ने नहीं है कि इस आधे जीवन के बारे में हमें कोई जान दें हो नहीं... और यह जान नहीं है, तो किर इस आधे जीवन को जीवर ही क्या लाभ हो जायेगा?

कुछ ५० लाख मरने के बावजूद आपने बटों के लिए रक्षाह भी जायेंगे, तो क्या हो जायेगा? तो यह बहुत गोद। ताजा पारिश लेकर यह समाप्त हो जायेगा - करा दा जंसारः? यदि चार-छ. गोकान जोड़कर लड़ते हो जायेंगे तो उनमें सब जारी हो देंगे तो क्या हो जायेगा?

वह तो जीवन का आप्य मान है, ही भेदभाव से उस आप्य मान में सुख का अनुभूतिगत तुल होगा, कुछ संतुष्टि मिली जाएगी, कुछ परसास तुला छोड़ कि मेरे पास यहाँ जी है जिसपर उत्तम ह, तो हमें उत्तम देखना है, मेरे पास यित्तम है, यह वह सब कठीन हो।

दूसरी तरफ विद्युत विभाग के अधिकारी ने बोला है कि जबकि लोगों का इच्छापूर्ण समर्थन उपलब्ध नहीं है, तो भी विद्युत विभाग के अधिकारी ने लोगों को अपनी विद्युत विभाग की सेवा का उपयोग करने की उम्मीद की है।

उपर्युक्त उत्तर संस्कृताद्वयोनि नामके भेद या अवधार के लिये बने हैं। इनमे शब्दों द्वारा विवेचन में पृष्ठीय प्रस्तुत होनेवाला कठोरोत्तर विवरण दिया जाता है। विवरण एवं ग्रन्थाद्वयोनि द्वारा अवधार का लिया का जान लेवा जाता है। प्राप्ति के विषयों पर विवरण एवं ग्रन्थाद्वयोनि द्वारा अवधार का लिया का जान लेवा जाता है।

प्रयाग का नाम रहा है किंतु विष्णुन्, परमिता और देवता यथोपचार तथा वृषभ महादेव का समान है।

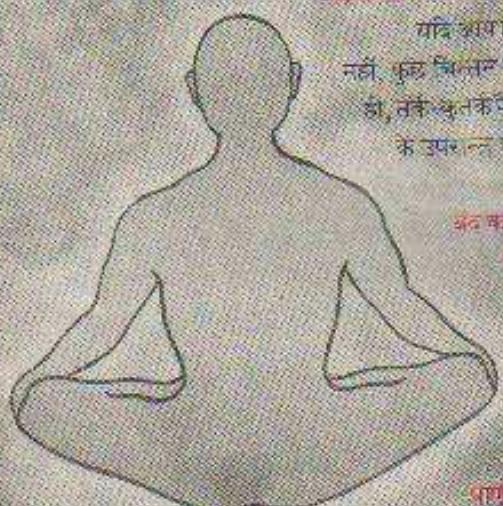
विश्वास करना चाहिए, किंतु उसकी विश्वास की दृष्टि से उसमें अध्यान पर थे, जहाँ किसी प्रकार का शोरखल नहीं हो। इसके लिए सर्वोच्च विश्वास करना चाहिए, किंतु उसकी विश्वास की दृष्टि से उसमें अध्यान पर थे, जहाँ किसी प्रकार का शोरखल नहीं हो। इसके लिए सर्वोच्च विश्वास करना चाहिए, किंतु उसकी विश्वास की दृष्टि से उसमें अध्यान पर थे, जहाँ किसी प्रकार का शोरखल नहीं हो।

जहाँ वहाँ उसके अमर्यादी नवीनीयों और उत्तेजित भाव से बैठे और धीर-धीर ज़रने में बहु करके भल्ला समाज से अपने सम्बद्ध नेतृत्व के द्विषयीयों प्रशंसन व अन्वयन के लिये आये, खीर धीर भावनर उत्तराने की छिटा करे, और ऐसा अनुभव करने की रूपी अंदर उत्तर रखा है। इसकी विश्वास करने के लिये भी अंदर ज़रूर रखा है। तो संक्षेप में कि प्राची में आपको इनमें राफतना नहीं निले, हो सकता है कि प्राची में है। इसका करने के लिये भी अंदर ज़रूर रखा है। तो संक्षेप में कि प्राची में आपको इनमें राफतना नहीं निले, हो सकता है कि प्राची में है। इसका करने के लिये भी अंदर ज़रूर रखा है। भावनर ऐसा नहीं है कि कुछ नहीं हो रखा है, बहुत कुछ हो रखा है, यह तुम्हें पता नहीं पहुँचा है।

अपका लक्ष्य, आपका उद्देश्य और आपका कार्य केवल यांत्रिक से बैठे रहना है। आपका कुछ करना नहीं है, न कि नामवाच के, न कुछ विचारना है, न कि उच्चतम अस्ति के पश्च में स्थृत भावना कि मैं कुछ ध्यान लगा रहा हूँ वा मैंने लगा रखा हूँ।

आपको तो केवल पूर्ण संसाधन में अधिकारी बनाकर करका, पथक हालत, अलग हालकर शान भाव से बढ़ावा दें, यहाँ तक
याद रखें, कर सिखें, बदलाव से मिलें, यासमान रखें। "साथी को लाया तो निष्क्रिय भाव से, बिना फिले-डुले, नेत्र बंद करके बैठ दें,
आपको यह अपने काम के लिये उत्तम करका रखें। अब तक आपने अपने अपने किंवद्धि प्राप्त हो जाएंगे, आपका पाता भी नहीं चलेगा।
आप धोरे खारे अपने के माध्यम से उत्तम रूप से, धूम, धूप, ड्रग्स इन, जन्मह विन, नहीं तो भर के बाहर स्वयं अत्यधिक बोधी कि
विषेश वैज्ञानिक कुछ विशेष जटिलताएं विद्या की रूप से, ऐसा नहीं, जैसे कुछ प्राप्त हो रहा है, जैसा नहीं, जैसे आप

यदि विद्युत का प्रयोग बिजली के लिए है। यदि विद्युत इस प्रकार से अन्धवास करे, शांत भाव में बढ़े रहे, कुछ रोचे नहीं, किंतु विद्युत नहीं करे, कुछ विद्युत नहीं बढ़े, किंतु प्रकार का स्तर में आलोड़न-विलोड़न नहीं हो, तब वह केवल विद्युत का उपयोग नहीं हो, वह विद्युत का उपयोग हो। और वह निरन्तर बढ़े रखने के लिया कुछ विद्युत के उपयोग नहीं हो सकता है।



जीर्ण इमार के गोपनीय दरग बात से होगा कि उस समय जहां यहले विन लाप और अन्त करने के लिए उड़ा जाएंगे आरण्य के भुवराई लिया, आवाज सुनाई दी, उन्होंको जलाया जाना चाहिए तो युत की अवाज सुनाई थी, रोने की, हमसे की आवाज सुनाई थी, वे घट जाते रहनाई तो यगर तीरोंवें विन लाप नहीं होगा, तीरोंवें विन लाप लेन्द्रियां जाप बैठे हैं और विस्तीर प्रकार की आवाज आएके कानों में नहीं आ

द्वितीय महालब्ध हुआ कि आप लाहौर गवार में ध्येय शोर पुश्कर हुए.

विद्युत विभाग के अधिकारी ने इसे बताया है कि यह अपने उपर्युक्त परिस्थितियों में अपनी विद्युत की उपलब्धता को बढ़ावा देता है।

क्षमा की विवरण अवधि प्रवर्तन करने उस स्थिति में क्षमा को कैसे नियंत्रित करें?

पांडित हैं जो यह नक्क पहुँच नहीं उस दर्शन वाली तक तो कुछ सम्बन्ध नहीं है।

किया करने की वजह से इसकी विद्युत और रसायनिक गुण होती है, जिसका इस सम्बन्ध में अधिक ज्ञान हो। इसकी विद्युत विद्युत विद्युत का लक्षण उत्तम नहीं कर पाता। इसकी विद्युत विद्युत के लक्षण उत्तम है, इस के बाद उस प्राप्ति के पास पहुँचने की क्षमा सम्पन्न की, जहाँ ध्यान के अंतर्गत विद्युत विद्युत के लक्षण उत्तम हैं।

और दस रापा वह के बाहर में जब और इसी प्रकार के आप्यास करते रहेंगे, इसी प्रकार से आप चिल्कुल निर्विकार भाव से बढ़ रहेंगे, तो हवारी मील नांच उत्तर सकते हैं। यह निर्विकार भाव से बेन रहना आपने आप में संतु उत्तमों को किया है, अगले आप में उत्तर जाने को किया है, अतल गहराइयों में जाने की प्रक्रिया है, क्योंकि शरीर में इतनी गहराई है कि इन्हाँ गील भी उपरके रामगे बहुत बढ़ने चाहते हैं।

आपका गरीब केवल मात्र चार फॉट का, पाल फॉट का या उन फॉट का ही नहीं है, इधर उत्तर में तो पवास हजार मील का गहराई है, उस गहराई ने आप धीरे-धीरे उत्तरते जा ले और जिसना अधिक उत्तर आयते न येंगे, उनमें ही असौन जानन्द की अपूर्णता का आपको हीनी रहेगी।

अतः इस प्रक्रिया के लिए किसी प्रबाहर का विनाश, विचार करने का अवश्यक बहुत है।

वह देखने की प्रक्रिया है। जब आप प्राण देह से आगे बढ़ेगे, तब आपके सम्मन एवं प्राण देह का स्वरूप होगा। वह प्राण वह से न स्वाक्षर मूल्य है।

सूक्ष्म देह का तात्पर्य है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से आपका सम्पर्क स्थापित होना।

इस ध्यान योग की प्रक्रिया से जहाँ आप बाहर से कटोफ (विरक्त) होते हैं, वह अंदर क्षमता से ब्रह्माण्ड से आप बुद्ध जाते हैं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आपके सामने साकार हो जाता है।

आप अपने धर परिवार, बंधु-आंशुव, रिसेदारों को देखने लग जाते हैं। आप देखने लग जाते हैं, विदांशार में कहाँ बराबर बदल बदल हो रही है, अनेकों दृश्य आपके सामने स्पष्ट होने लग जाते हैं।

एक प्रकार से देखा जाए तो आप स्वयं एक द्रुटा बन जाते हैं, याथी एकान्त शापिक सम्मन का द्रुटा लग जाती है। यह सूक्ष्म देह के माध्यम से संभव है, क्योंकि सूक्ष्म देह का तात्पर्य है कि आप प्राण देह से भी निवृत्त होकर हैं, इच्छा आप एक ब्रह्माण्ड के अधित नहीं रह जाते हैं, किंतु आप किसी छोटे से शहर से सम्बद्धित नहीं रह जाते, परं शहर, परं विश्व और परं राष्ट्र, पूरा सम्मन आपके सामने विलकुल खुली किताब की तरह स्पष्ट होता है... अपने आप अपनी आवाज से लह पाते हैं उस मध्यान्तरमें, उस कालमच्चु से... यह सूक्ष्म देह ध्यान की प्रक्रिया का अगला बद्धमान है।

ध्यान की प्रक्रिया का इससे अगला बद्धमान ब्रह्म देह है। ब्रह्म देह का नाम पर्वत है, इस स्वयं ब्रह्म में रह जाता है, अपने-आप में उस ब्रह्म से साकार स्थिति स्पष्ट करने लग जाते हैं, वहाँ अमर्त्यसंपाद एवं ब्रह्म का वर्णन है। यह समस्त विश्व नहीं, ऐसे विश्व तो करोड़ों हैं इस ब्रह्माण्ड में।

उस पूरे ब्रह्माण्ड को अपनी आंखों से देखने की प्रक्रिया एक ब्रह्म योग के माध्यम से आप ब्रह्म देह तक पहुंच पाते हैं। केवल एक ही वेद आंशुव, परं विश्व है, इस लह के अंदर दूसरी, तीसरी और चौथी देह भी है।

उस वेद तक पहुंचने पर केवल आप विश्व के किसी कान वा द्वे लह, अपनु ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में अपनी सूक्ष्म देह के माध्यम से पहुंच सकते हैं, एक लह के अनुप्रवान कर सकते हैं।

इस प्रकार की प्रक्रिया जब आपके सामने स्पष्ट होनी लगती है तब आप ध्यान अनुभूतियों से भर जाते हैं। आपको एहसास होता है कि आप एक ब्रह्माण्ड के अंदरन ही है, आपको एहसास होता है कि वास्तव में ही यह ब्रह्म देह एक विश्व अमर्त्यसंपाद का सामर है, समृद्ध है, जहाँ आनन्द के जलावा और कुछ ही ही नहीं, जहाँ अस्ति नहीं है, जहाँ किसी प्रकार की विद्या नहीं है, और वाधा नहीं है, अपने-आप में पूर्ण अस्ति नहीं है, जहाँ आनन्द की लहरें नहीं उठ रही हैं।

आप उस खुमारी में दूब जाते हैं, जो आपके चेहरे पर एक असामाजिक लह लगाता है तब जाता है। एक मस्ती, एक तुम्हि, एक पूर्णता, एक चैतन्यता जब आपके चेहरे की आम उपस्थिति परीक्षा होती है, तब आपका ब्रह्म देह के व्यक्तित्व बन जाते हैं, ऐसा लगता है, जैसे आप वी ही नहीं, जो वे, ऐसा लगने लग जाता है तब आप ब्रह्माण्ड के अंदर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में देखने की प्रक्रिया का आपको जान ही जाता है।

पूरे ब्रह्माण्ड को आप अपनी आंखों से देख सकते हैं, व्याघात उत्पन्न कर सकते हैं, उसमें इस्तोक्षेप कर सकते हैं, ब्रह्माण्ड में किसी भी स्थान पर ना सकते हैं, आ सकते हैं, अपनी इस सूक्ष्म देह के माध्यम से... और इस देह को सूक्ष्म देह में परिवर्तित कर सकते हैं और सूक्ष्म देह को इस पूर्ण देह में परिवर्तित कर सकते हैं।

यह बहुत महत्वपूर्ण घटना है। एक ऐसी स्टेज है, जहाँ आदमी पूर्ण पुरुष बनने की प्रक्रिया आरंभ करता है।

“अहं ब्रह्मास्मि द्वितीयो नास्ति”

ब्रह्माण्ड में दूसरा कुछ ही ही नहीं, पूरा ब्रह्माण्ड मेरे अंदर समाहित है, क्योंकि मैं ब्रह्म हूँ, और जहाँ ब्रह्म है, वहाँ ब्रह्माण्ड है, वहाँ जीवन की प्रत्येक हलचल है, घटना है... और इस जीवन की नहीं, इस विश्व की नहीं, इस सूर्य लोक, चन्द्र लोक, सारा लोक, नदान लोक और इन्द्र लोक जितने भी लोक हैं, उन सबकी हलचल, उन सबकी घटनायें मेरे अंदर समाहित हैं। मैं उन सबको देखूँ

सकता हूँ, वहां पहुँच सकता हूँ, वहां से वापिस आ सकता हूँ। जो भी ध्यान योग प्रक्रिया में जाता है, वह इस स्थिति को प्राप्त करता है... और जब इस स्थिति को प्राप्त करता है, तो उसे असीम आनन्द की अनुभूति होती है।

इस ध्यान योग के बाब स्थिति बनती है “धारणा की”। धारणा का मतलब है – जो कुछ हमने प्राप्त किया है, वह बना रह सके। ऐसा जबीं मैंने आपको बताया कि मूल तो धरण भंगर है, आता है और चला जाना है। उगर धरन से आपको मुख अनुभव होता है, तो जब तक धन प्राप्त होता है, तब तक तो आप मुखी हैं, मगर जिस दिन आपका धन चला जाता है, आप उस सुख से बंधन हो जाते हैं, वह टिका नहीं रहता, वह स्थायी नहीं होता, आनन्द भी रथयी नहीं रह सकता, यदि आप मैं धारणा शक्ति नहीं हैं।

इसलिए योगियों ने, शास्त्रों ने, पुराणों ने, लेखों ने, उपनिषदों ने इस बात को स्पष्ट किया है कि ध्यान का अगला दरण, ध्यान की अगली प्रक्रिया धारणा की अपने-आप मैं सुख और पुष्ट करना है, क्योंकि धारणा शक्ति के माध्यम से हम जीवन के प्रत्येक क्षण तक उस विश्व और उस ब्रह्माण्ड से एकाकार बने रह सकते हैं और इजारों-लाखों वर्षों की आयु प्राप्त कर सकते हैं।

यदि हमारे पूर्वों के पास हजार वर्षों की आयु थी, यदि वे इच्छा मूल्य की प्राप्त हो सकते थे, तो हम भी इच्छा मूल्य की प्राप्त कर सकते हैं। हम यहां तभी मूल्य प्राप्त हो, मूल्य हमें द्वाच नहीं सके, मूल्य हम पर आक्रमण नहीं कर सके, मूल्य हम पर हमला नहीं कर सके। ऐसी स्टेट तब आ सकती है, जब हम धारणा शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं।

और धारणा शक्ति की प्राप्ति के लिए यह जरूरी है कि आप अपने जीवन में उस ध्यान प्रक्रिया के माध्यम से आगे बढ़ें। इसलिए उपनिषदों में “धारणा इति गुरुः” गुरु को ही धारणा शक्ति कहा गया है।

क्योंकि गुरु ही आपनी विशेष तेजस्विता के प्रभाव से आपके शरीर में धारणा शक्ति को बढ़ा सकता है। आप जो सूक्ष्म देह और प्राप्त देह प्राप्त करने के आकांक्षी हैं, और जो ब्रह्म देह आपके पास होती है, उस ब्रह्म देह को निरन्तर ढाला देह बनाये रखने के लिए गुरु की यहां नितान्त अनिवार्यता है, आवश्यकता है।

गुरु आपको उस मंत्र को, उस चेतना को दें सकता है, उस तपस्या के अंश को दें सकता है, जिसके माध्यम से आप उस ब्रह्म देह को यथावत् बनाये रख सकें, ब्रह्म देह के बाब वापिस आप उसी मूल स्वरूप में आ सकते हैं, नांसारिक क्रियाकलाप सम्पन्न कर सकते हैं और उसके बाब वापिस ब्रह्म देह में पहुँच सकते हैं।

इसलिए ब्रह्म देह में पहुँचने के बाद गुरु का निरन्तर चिन्तन, ध्यान, मनन प्रक्रिया और गुरु की साज्जिध्यता बहुत उचित आवश्यक है।

आपी मैंने आपको बताया कि “धारणा इति गुरुः” धारणा को गुरु कहा जाता है, अर्थात् गुरु के माध्यम से ही धारणा शक्ति पुष्ट और प्रबल होती है, क्योंकि धारणा शक्ति के लिए जरूरी है कि एक बहुत बड़े नलके से आपके छोटे नलके में जल प्रवाहित हो, जहां जान का विशाल भण्डार मरा दुआ है। उस ज्ञान के भण्डार में से जान आपके पास प्रवाहित हो।

सूर्य के माध्यम से दीपक की लौ लगे, वसन्त के माध्यम

ले जाए तो सूक्ष्मध का दीर्घ प्रवाहित हो... और यह वसन्त, यह सूर्य गुरु थी ही सकता है, जहाँ वह अनेक भज्जार है, जहाँ साधना की पूर्णता है, उच्चता है, श्रेष्ठता है, दिव्यता है और अद्वितीयता है।

इसलिए जब ध्यान के माध्यम से आप उस स्थिति पर पहुँचते हैं, तब यह जरूरी है कि आपके सामने वह गुरु हो, जो इस प्रक्रिया में अपने-आप में पूर्ण सम्पन्न हो, जिसकी कृष्णलिङ्गी जागत है, जो क्रिया बोग में दश हो, जो सिद्धाश्रम में पूर्णता प्राप्त कर सकता हो, जो तुम्हें ज्ञानशब्देतना दे सके, जो तुम्हारी उंगली पकड़ के इस धारणा शक्ति में पूर्णता और प्रबलता प्रवाहित कर सके।

ऐसा ही गुरु अपनी ज्ञानशब्देतना के माध्यम से आपकी धारणा शक्ति को प्रबल और पुष्ट बनायेगा, जिससे आपने जो कुछ अनुभव किया है, जो कुछ प्राप्त किया है, वह ज्यों का त्यों बना रह सके, उसमें विश्वस्तुता नहीं आये, न्यूनता नहीं आये, किसी प्रकार की कमी नहीं आये... और यह कभी तब तक नहीं आ सकती, जब तक आप बराबर उस क्रिया और प्रक्रिया को चालू रखते हैं, परन्तु यदि आपने उस समय उस क्रिया को बंद कर दिया तो फिर ध्यान शक्ति में न्यूनता आ जायेगी।

आप इत्तम देह से वापिस इस स्थूल देह तक पहुँच जावेंगे, परन्तु आप धारणा शक्ति में पहुँच गए हैं, तो फिर आप जहाँ पहुँचे हैं, वहाँ से वापिस निकलने का रासना नहीं रहेगा, जिर आप में न्यूनता नहीं आ सकती, जो कुछ आपने प्राप्त कर लिया, वह तो रहेगा ही। निरन्तर आपे बढ़ने की प्रक्रिया होंगी, पीछे हटने की प्रक्रिया नहीं होगी।

और इस दूसरे चरण में, इस धारणा में जो आपने ध्यान प्रक्रिया सम्पन्न की है, उस ध्यान प्रक्रिया का मानसिक एकागता के साथ गुरु चिन्तन हो, गुरु पूजन हो, और सबसे बड़ी आत यह कि गुरु में एकागता हो, गुरु में पूर्णस्वप्न से समर्पण होने की प्रक्रिया हो... और पूर्णस्वप्न से समर्पण होने की प्रक्रिया के लिए नरसी है कि आप पूर्णस्वप्न से मन और मस्तिष्क से समर्पित हों, फिर आपका कुछ अस्तित्व नहीं रहे।

इस स्टेज पर, इस स्थिति में आने के बाद आपको कुछ भी भान नहीं रहे। आप अपने-आप में कुछ हैं ही नहीं, किसी प्रकार का अस्तित्व आपका नहीं है, जो कुछ है, वह गुरु में विसर्जित कर दिया, लीन कर दिया... जो दे दिया, तो फिर आपके पास कुछ रहा नहीं... और यह देने की प्रक्रिया धारणा शक्ति है, अपने-आप में समर्पण करने की प्रक्रिया धारणा शक्ति है।

मगर यह समर्पण शब्दों के माध्यम से नहीं हो सकता, यह समर्पण हाथ जोड़ने के माध्यम से भी नहीं हो सकता। यदि आप समझते हैं, कि गुरु की आरती उतारने से या अगरबत्ती लगाने से ही समर्पण हो जाता है, तो गलत है।

समर्पण का तात्पर्य है कि गुरु जो आज्ञा दे, उसका जिमा नानूच किये पालन किया जाए, क्योंकि गुरु अपने स्वार्थ के लिए कभी आज्ञा नहीं देता। गुरु तो बहुत दूर की देखता है, वह देखता है कि इसको जीवन की पगड़पटी पर कहाँ खड़ा करना है, और जहाँ खड़ा करना है, उसके लिए आज इसको कौन सी आज्ञा देनी है।

हो सकता है वह परीक्षा हो, हो सकता है वह आगे बढ़ाए, आप नहीं समझ सकते कि वह आगे बढ़ाने की प्रक्रिया है या परीक्षा लेने की प्रक्रिया है। आपका मन्तव्य, चिन्तन केवल इतना है कि जो कुछ आज्ञा ही जाए, उसको पूरा करना है, वह चाहे आपके हितों के विपरीत हो, वह चाहे आपके हितों के अनुकूल हो।

आपका हित और अडित, आपका जीवन और अजीवन, अस्तित्व और अस्तित्वकी-ता यहाँ कुछ नहीं है, आप ही हो नहीं। जहाँ समर्पण है, वहाँ धारणा शक्ति है, जहाँ गुरु आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करने की प्रक्रिया है, वहाँ धारणा शक्ति है, जहाँ उनका अनुगमी बनने की प्रक्रिया है, वहाँ धारणा शक्ति है।

जहाँ आपके पास तर्क आया, जहाँ आपने झूट और छल का यहारा लिया, आश्रय लिया, जहाँ आपने पार्खण किया, जहाँ केवल हाथ जोड़कर, मन में कुछ और चिन्तन किया, आपने यह

प्रदर्शन किया कि मैं गुरु की शक्ति पूर्णता ने करता हूँ, पञ्चीस लोग खड़े हों आप जोरों से तालियां पीट रहे हों या आरती कर रहे हों आग लगा रहे हों और दीक्षिणा दें रहे हों... यह सब तो दिखाना है, यह सब तो प्राखण है। गुरु इस बात को समझता है, वह मन ही मन मुख्यरात्रि ने हुए इस बात को अनुमति करता है कि यह सब कुछ गलत है, मगर वह उस नीला की ओर बढ़ देखता रहता है, उस किया को ब्रह्म देखता रहता है, यह सापकी धारणा शक्ति नहीं है।

धारणा शक्ति को तो यह है कि आपके आँखों से उनके पद प्रक्षालित हैं। उनके चरणों में आप सिर रखकर, आँखों ने उनके चरणों को धोये, आपने जल की पूजा जैसा किया। आपका हृदय गदगद हो, गला भर जाए, संधे हृषे गले से लो कुछ शब्द निकले, गुप्तदंड इच्छा ने निकले, जैसी पूर्णता थी।

शक्ति का विषय का विषय है... आपने हर क्षण यह इच्छा हो कि मैं दीक्षकर गुरु के पास जाऊँ। यह अलग बात है कि आपका शरीर साथ नहीं दे और आप नहीं जा सकें। यह अलग बात है कि आपका शरीर साथ नहीं दे और आप नहीं जा सकें... नहीं जा सकें, यह अलग चीज़ है, मगर आपकी उल्काता, आपकी उल्काता नहीं दे और आपकी उल्काता नहीं जा सकती है, आपके मानस में हर क्षण एक छटपटाहट बनी रहे कि मुझे हर छालत के साथ पहुँचना है, ... और यदि मैं नहीं पहुँचता हूँ, तो एक छटपटाहट, एक बेचैनी, एक अभूत अनुभव है।

यह अनुभव होना ही धारणा शक्ति की प्रबल बनती है, तब एहसास होता है कि आपन का यह भाग एक महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि कोई मेरा है, जिसके पास मुझे जाना चाहिए, मेरा है... निसको प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य है, उद्देश्य है।

कोई मेरा है, जिसके हाथों में अपना शथ बेठकर मैं निश्चिन्त हूँ। कोई ऐसा

बैठकता है, जिसके चरणों में बैठकर एक अभीम सुख की अनुभूति होती है। कोई

बैठकता है, जिसके पाथ बैठकर अपने हुरें और बर्द को पूरी तरह से कह सकता हूँ...
आर कह रहा है, जो अपने आप का गलका कर लेता हूँ, अपने मन का बोझ दूर कर लेता हूँ, अपने आप को

सम्बद्ध करना है।

जो आपको जल में नहीं बना सकता है, जो मेरा कुछ विचार हुआ, वह मैंने उनके सामने व्यक्त कर दिया, मगर

उनके विचारों में जल नहीं बना सकता है, जो आपको जल के सम्बद्ध नहीं।

जो आपको जल में नहीं बना सकता है, जो आपके चरणों में जल के सम्बद्ध है, पत्नी के साथ भी बन जाते हैं, पुत्र के साथ भी अन

द्वितीय जन्म के लिए जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल में नहीं बना सकता है, जो सकृदान वापिस लौटे। हम इस बात की भी चिंता रखते हैं

कि उनके जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल के सम्बद्ध है।

जो आपको जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल के सम्बद्ध है... और प्राणगत

सम्बद्ध है नामरूप है कि आप हारों गीत वूर बैठे हों, यहां गुरु के पांव से काटा चुभे और दर्द आपको

एहसास है, तो सम्बद्ध हो जाएँ कि प्राणगत सम्बद्ध है। यदि यहां गुरु की तजियत ठीक नहीं है और

आपका जीवन बहुत ही बड़ा है, यहां छटपटाहट महसूस होती है, ऐसा लग रहा हो, जैसे कुछ खो गया है,

जो आपको जल के सम्बद्ध है, कुछ ऐसा है, जो ठीक नहीं है, अगर ऐसी छटपटाहट, ऐसी बेदना

जो आपको जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल के सम्बद्ध है, जो आपको जल के सम्बद्ध है।

अपने बाल में हर समय उत्कृष्ट और जाकांका रहती है कि मैं गुरु के पास पहुँचूँ,

मैं गुरु के पास तरह के से भी खुश हूँ, प्रसन्न हूँ, उस तरीके से मुझे खुश और प्रसन्न करना है।

ये मुझे किस प्रकार उपयोग करते हैं, यह उनकी इच्छा पर निर्भर है, यह

उनकी इच्छा पर निर्भर है कि वे मुझसे क्या काम लेना चाहते हैं। मैंने तो अपने-

आप को उनको समर्पित कर दिया है, अब वे जिस प्रकार से बाहे मेरा उपयोग

करें, वे उपयोग करे और हम अपना उपयोग करने वै, इसको धारणा शक्ति कहा

जाता है। इसको जीवन की पूर्णता कहा गया है, इसको जीवन का आनन्द कहा गया है।

प्रारम्भ शक्ति का तात्पर्य है, गुरु की पूर्ण शक्ति आपके साथ रहे.. और गुरु की पूर्ण शक्ति रूप से विद्वाई तो नहीं कहा, बल्कि आपके पीछे बराबर वह शक्ति, वह ताकत बनी रहती है।

एक मामूली सा पुलिस बाला बड़े से बड़े गुणों को थप्पड़ मारकर रोक देता है, और वे गुण वरदराने लग जाते हैं। हमका नित्य यह नहीं कि पुलिस ताकतवर है उन गुणों से, इसका तात्पर्य है कि पुलिस के पीछे गुण का, गवर्नर का प्रभाव है, पूरी कीर्ति है, उस कीर्ति की बजह से उस पुलिस में ताकत है।

ठीक उसी प्रकार से आप चाहे तुबले-पतले हों, पर आपके पीछे एक फोर्म हो, जो विद्वाई की दी, अगर उनको वापस भाव में पूरी ताकत, पूरी क्षमता आती है, वह ताकत, वह क्षमता गुरु की दी दुई है, जिसका उपर्युक्त अधिकार वही है जो आपको वापस भाव में पूर्णता प्राप्त करते रहते हैं।

ध्यान और धारणा के बाव तीसरी स्थिति 'समाधि अवस्था' की होती है। जब गुरु के चरणों में बैठ गए, जहाँ आपने अपने-आप को गुरु के चरणों में विसर्जित कर दिया, जहाँ आप इस बात के लिए कृतकृत्य होते हुए कि गुरु ने आपको आज्ञा दी, आपको कोई काम सौंपा, आपकी सेवाओं का उपयोग किया, और आप ने दिना किल्ली किंतु किछीहट के, उस आज्ञा का पालन किया, चाहे वह आज्ञा आपके हित में रही या अहित में रही, वह चाहे आपके लिए नुकसान दायक रही या लाभदायक रही, वह अनन्त बात है, मगर आप ने उन आज्ञाओं का पालन किया, उनके लिए उपयोगी बने, वह गुरु शक्ति है... और इस धारणा शक्ति के आगे की स्थिति 'समाधि अवस्था' है।

समाधि अवस्था का तात्पर्य है – आप उन समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर जाएं, जो पूरे शपथमें विद्वित है, वे चाहे अणिगादि विद्वित्यां हों, वह चाहे महाकाली हों, महालक्ष्मी हों, महारात्रियों हों, गणतान्त्रियों हों, विजयस्त्री हों, धूमावती हों, वे चाहे हन्द्री हों, विष्णु हों, ऋषि हों, कार्तिकीय हों, शौक्यांशु चक्रवर्ती हों, देवता हों, भूत हों, प्रेत हों, पिशाच हों, राक्षस हों, गन्धर्व हों, विजर हों... इन सबकी इस्तगत कर लेने की क्रिया समाधि अवस्था में ही हो आ सकती है।

समाधि का तात्पर्य है – आप स्वयं पूर्णरूप से ब्रह्म बन जाते हैं। ग्रन्थ कहा जाता है कि इस से अनुभूति भी नहीं, ब्रह्म की सामीक्षा नहीं, अपने-आप को पूर्णरूप वावृत्तमय करने की प्रक्रिया समाधि अवस्था है... और समाधि का तात्पर्य है, अपने-आप से पूर्ण निषिद्धं होकर द्रुब जाने की प्रक्रिया।

यह क्रिया गुरु अपने-आप आपको सिखाएगा, मार्ग दर्शन करेगा, वह आपको दीक्षा देगा, वह आपको समझायेगा कि समाधि अवस्था आपको क्या समाप्त हो सकती है। ज्यों गुरु की शक्ति आपको प्राप्त होगी, त्यों आप इन तीन समाधि अवस्था की ओर चलते रहेंगे।

उस समाधि अवस्था में जाने के लिए आपको किसी प्रकार का प्रयत्न और परिश्रम करने की जरूरत नहीं है। उस समाधि अवस्था में जाने के लिए आपको कोई धूक्ति या तरकीब हाथ में लेने की जरूरत नहीं है, न प्राणायाम की जरूरत है।

आप तो उस एक शक्ति के सहारे निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे, और यह निरन्तर आगे बढ़ने की क्रिया समाधि अवस्था में होगी, निरन्तर आगे बढ़ने की क्रिया ब्रह्ममय होने की क्रिया ही होगी, आप अपने-आप आगे बढ़ेंगे।

जहाँ आप आगे बढ़ते रहेंगे, वहाँ पुख और सीमान्य की अनुभूतियाँ होंगी, आपके चेहरे पर एक विशेष प्रकार का आभास पड़ल स्थापित होगा, ऐसा

लगेगा जैसे आपके चेहरे पर एक भव्यता है। आपके ललाट पर खड़ी नकीरें इस बात का परिचायक होंगी कि वास्तव में ही अपने समाधि अवस्था को प्राप्त किया है। एक सामान्य मनुष्य की जो ललाट की लकीरें होती है, वे बाद से बात की ओर होती है या दृष्टि से बायीं की ओर होती है, मगर जो उच्चकोटि का योगी है, जो उच्चकोटि की स्थिति प्राप्त करने वाला है, उसकी नाक से अपने लगाकर के ऊपर सहस्रार तक जो लकीरें जाती हैं, वे अपने-आप में इस बात का परिचायक हैं कि आपका आभासगड़ल पूर्णता प्राप्त किये हुए हैं।

आप इस समाधि अवस्था को प्राप्त किये हुए हैं, आप स्वयं अपने-आप में ज्ञात हैं, ऐसी स्थिति जब आप प्राप्त कर लेते हैं, तो फिर उस समाधि अवस्था में जाने के बाद आप कई दिनों की समाधि प्राप्त कर सकते हैं, इस समाज से कट कर।

उस समय आप सांसारिक कार्य करते रहते हैं, मगर फिर भी आप निर्विकल्प रहते हैं, निर्विचार रहते हैं। सब कुछ निर्वाह करते हुए भी आप किसी के नहीं हैं, और सबके हैं, ऐसी स्टेज होने पर, आपके चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेज विष्व, प्रतिबिम्बित होता है।

ऐसा लक्षण है, जैसे यह व्यक्ति अत्यन्त भव्य और अद्वितीय है, सुदर्शन है, बार-बार आपको देखने की इच्छा होती है। आप यदि किसी को कुछ कहेंगे भी, तो उसको एक पूछ के समान अनुभव होगा, वह एक चुम्बक की तरफ आपके पास लिंगा हुआ चला आएगा, आपके सात्रिध्य में रहेगा, आपकी सामुज्ज्यता में रहेगा, फिर हरतम उसकी हड्डा, आकांक्षा रहती है कि चाहे आप कुछ कहें या नहीं कहें, मगर आपके पास बैठने से ही उसको एक विशेष अनुभूति, सुख और तृप्ति का भान होगा।

ऐसी स्थिति बनने पर आप कई-कई महीनों की समाधि लगा सकते हैं। जिस समय चाहे जिस प्रकार से चाहे किसी भी लोक में उस सूक्ष्म देह के नाभ्यम से जा सकते हैं, आ सकते हैं... वह चाहे बहु लोक हो, चाहे विष्णु लोक हो, चाहे सद्गुरु लोक हो, चाहे कैलाश हो, चाहे मानसरोवर हो, चाहे कोई धारा हो, चाहे नक्षत्र मण्डल हो, आपके लिए वह तब कुछ सहज सुलग है।

यह ज़रूरी देह तो यहीं रहेगी। उपरी देह तो हमी प्रकार से प्रक्रिया करती है रहेगी। बाहरी व्यक्ति भी आपकी उपरी देह को ही बेहुमत, जबकि सूक्ष्म देह से आप उस समय कहीं अन्यत्र विचरण कर रहे होंगे। सूक्ष्म वेह उस समय किसी और स्टेज पर होती है, और उस स्टेज पर खड़े होकर आप वहाँ की स्थिति को वेष्ट सकेंगे, अनुभव कर सकेंगे, अपने जीवन की देख सकेंगे, और सबसे बड़ी बात इस जीवन में आप जो कुछ करना चाहते हैं, जो कुछ देना चाहते हैं, उस प्रकार से आप इस मनुष्य जाति को बहुत कुछ प्रदान कर सकेंगे। यह स्टेज, यह स्थिति पूर्णता की स्टेज है। इस स्टेज को यदि हम कलाओं में कहें, तो यह दस कलाओं की प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

दूसरी इसके आगे की कियाएं भी हैं, मगर वे तो युर के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती हैं कि हम एकाश कला को प्राप्त करें, बारहवीं कला को प्राप्त करें, तेरहवीं, चौहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं कला को प्राप्त करें। सही अर्थों में हम पूर्ण बन सकें, पूर्णशोतम बन सकें, सही अर्थों में पूर्ण चैतन्य बन सकें, ब्रह्म बन सकें... फिर हम गृहस्थ में रहते हुए भी पूर्ण योगी बने रह सकते हैं, और पूर्ण योगी रहते हुए भी पूर्ण गृहस्थ रह सकते हैं।

यह स्टेज, यह स्थिति जीवन की पूर्णता का परिचायक है, और ऐसी स्टेज आने पर वह व्यक्ति अखण्ड आनन्द में निमग्न रह सकता है, फिर उसको राग, द्वेष, दुःख, भय, कष्ट और पीड़ाएं व्याप्त होती है। नहीं या उसके जीवन में आती ही नहीं, क्योंकि वह प्रकृति में द्रस्तव्येष कर जो कुछ प्राप्त करना चाहता है, वह प्राप्त कर लेता है, विशीर्ण परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है, उसको किसी प्रकार की विनाश व्याप्त नहीं होती।

यद्यपि उसके जीवन में चिन्ताएं आती हैं, यद्यपि उसके जीवन में धारण, परेशानियां आती हैं, दुःख और कष्ट आते हैं, जामाव और पीड़ाएं आती हैं, आलोचनाएं होती हैं, गालियां मिलती हैं, पर उसके चित्त पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

वह इस बात की चिन्ता ही नहीं करता कि कोई उसे गालियां दे रहा है, वह तो अपने ख्यालों में, अपनी मरनी में आगे बढ़ता रहता है, और पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान उन जानता है। ऐसा ज्ञान बहु जाना है कि

वह जहां भी निस प्रकार का उदाहरण देना चाहे, वे सकता है। जीवन पर भाष्य लिख सकता है, घण्टों बोल सकता है महाभास्त
पर, रमायण पर, उपनिषदों पर, विश्वामित्र पर, विज्ञान पर, चेतना पर... जिस पर भी बोलना चाहे।

ज्युकि घण्टों तक के साथ बोल सके... वह समाधि अवस्था के बाब ही संभव है। चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज
ज्ञानिक्षित होता है, यह समाधि अवस्था के बाब ही संभव है, और यह धारणा शक्ति के बाब गुरु के बताये हुए रास्ते से निरन्तर आगे
बढ़ने की प्रक्रिया है।

आप कुछ नहीं करें, आपको कुछ करने की जरूरत ही नहीं है, अपने आप गुरु की शक्ति आपको आगे बढ़ाती रहेगी...
जो बढ़ानी रहेगी, और वह सब कुछ आप प्राप्त करते रहेंगे, जो आपके जीवन में अनिवार्य और आवश्यक है।

ऐसी स्टेज, ऐसी स्थिति जब आपके जीवन में प्राप्त होती है, अनुभव होती है, तब आप सही अर्थों में पूर्ण व्यक्तित्व
बनते हैं, तब आप सही अर्थों में पूर्ण बड़ापड़ का एक भाग बनते हैं, एक चैतन्य पुरुष बनते हैं, जिसको महापुरुष कहा जाता है,
जो एक विशिष्ट मानव की चंजा से विभूषित होता है, जिसको बड़ा कहा जाता है, जिसको अखण्डानन्द कहा जाता है, जिसको
जीवन की परिकल्पना कहा जाता है।

इसलिए शास्त्रों में ध्यान, धारणा और समाधि को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है, क्योंकि यह आंतरिक जीवन की परिपूर्णता है।
इस आंतरिक जीवन के माध्यम से ही व्यक्ति उन समस्त सत्यों को अनुभव कर सकता है, जिन सत्यों के माध्यम से वह जीवन में पूर्णता
प्राप्त कर सके। इन सत्यों के माध्यम से वह आनन्द की अनुभूतियों प्राप्त कर सके, इन सत्यों के माध्यम से उसे वह सब कुल प्राप्त हो
सके, जो उसके जीवन की आकांक्षा है। फिर उसके जीवन में भूख-प्यास दृश्य, दर्द, बेचैनी, लटपटाहट कुछ भी व्याप्त नहीं होती।

वह निस प्रकार से चाहे प्रकृति को अपने अनुकूल बना लेता है, प्रकृति का दोहन कर सकता है, और प्रकृति से लाभ उठा
सकता है।

मैं यहां पर इस समाधि अवस्था को प्राप्त करने की प्रक्रिया के लिए या ध्यान, धारणा और समाधि तीनों अवस्थाओं को एक
साथ प्राप्त करने की प्रक्रिया के लिए उस मंत्र का उच्चारण कर रहा हूँ, जो मंत्र अपने आप में एक अद्वितीय मंत्र है, और निरन्तर इस
मंत्र को सुनने से भी स्वतः ध्यान की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, स्वतः धारणा शक्ति बलवर्ती हो जाती है, स्वतः समाधि अवस्था में
आदमी पहुँच जाता है, इसके लिए किसी प्रकार का प्रयत्न करने की जरूरत नहीं है।

इसलिए जब आप ध्यानावस्था में जान की कोशिश करें, तो इस मंत्र को बार-बार सुनें, इस मंत्र को सी बार सुनें, हजार बार
सुनें और अपने आप, आप अपने ओंदर उत्तर से रहेंगे, गहराई में उत्तर से रहेंगे, वह सब कुछ प्राप्त करते रहेंगे, जो जीवन का अधीनित
है। उस गोपनीय, विशिष्ट और अद्वितीय मंत्र को मैं आपके सामने उच्चरित कर रहा हूँ, जो आपके लिए पहली बार स्पष्ट ही रहा है,
जो अत्यन्त महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

मंत्र

ॐ यरं वै प्रतन्त्र पूर्वः सःसतां सर्वीर्या सःउद्धी सर्वेतत्त्वम् सर्वशिष्ठृताम् ।
परिपूर्णताम् पूर्णताम् वां पूर्वः समाधि वैः सतः सा शतः सा शतः सहस्रमयि ॥

उपरोक्त मंत्र मैंने आपके सामने स्पष्ट किया, जिसके माध्यम

में एक सामान्य व्यक्ति भी 'यानावस्था' में जा
सके। यदि इस मंत्र को इसकी मूल ध्वनि में

किसी केसेट पर बार-बार रिपीट कर लें

और उस केसेट को बजाते रहें, तो यह

मंत्र बार-बार आपके

करनों के माध्यम से आपके हृदय में प्रवेश करता रहेगा।

हृदय के उन तन्तुओं को, उन स्थितियों को जाग्रत करता रहेगा, जिसके माध्यम से आदमी की ध्यान शक्ति मजबूत होती है, जहाँ अन्दर उत्तरने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है, अंदर उत्तर कर वह उस सूक्ष्म देह के प्राप्त कर सकता है, ब्रह्म देह को प्राप्त कर सकता है, जिससे समस्त ब्रह्माण्ड में उसकी गति बन सके, समस्त ब्रह्माण्ड में वह गतिशील ही सके।

— और इसी मंत्र का निरन्तर उच्चारण करने से उसकी धारणा शक्ति में भी प्रबलता और पुष्टता आती है। यदि उसके जीवन में गुरु सुलभ नहीं होते, तो गुरु सुलभ हो जाते हैं, और जब गुरु सुलभ होते हैं, तो उनकी कृपा प्राप्त होती है, उनकी कृपा प्राप्त होने के साथ-साथ व्यक्ति की धारणा शक्ति में वृद्धि होती है।

इस मंत्र का निरन्तर श्रवण करने से जहाँ ध्यान और धारणा में परिपूर्णता आती है, वहाँ साथ ही साथ उसको समाधि अवस्था भी प्राप्त होने लग जाती है, वह अपने-आप में पूर्ण ब्रह्ममय हो जाता है।

वह अपने-आप में पूर्ण ब्रह्ममय होता हुआ, समस्त वैतन्यता को प्राप्त करता हुआ, जिसे लोक हैं, ब्रह्माण्ड के प्रत्येक लोक में जा सकता है, वहाँ जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकता है, और सही अर्थों में वह अखण्ड आनन्द की अनुभूतियों को प्राप्त कर सकता है।

इसलिए इस प्रवचन में मैंने आपके सामने उन क्रियाओं को स्पष्ट किया है, जिन्हें ध्यान, धारणा और समाधि कहा जाता है, जिनको जीवन की पूर्णता कहा जाता है, जो अपने-आप में ‘जहं ब्रह्मास्मि’ का सूत्र है, सूक्ष्मता है।

मैंने उस गोपनीय मंत्र का आपके सामने उच्चारण किया, जिस मंत्र का नित्य प्राप्त, श्रवण करना आपके लिए जरूरी हो ही। इसलिए मूल मंत्र को आप सुनें, निरन्तर सुनते रहें, तब यह एहसास करने लगेंगे कि वास्तव में यहले की अपेक्षा बहुत तेजी के साथ अग्रसर होते हुए आप ध्यान शक्ति प्राप्त कर रहे हैं।

बहुत तेजी के साथ बढ़ते हुए आप धारणा शक्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपको पूर्णरूप से आशीर्वाद देता हूं कि आप अपने जीवन में महामानव बनें, पूर्ण वैतन्य बनते हुए उस समाधि अवस्था को प्राप्त करें और ब्रह्माण्ड का एक भाग बनें। मैं आपको ऐसा ही आशीर्वाद देंगा हूं,

— परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी महाराज

शिवोऽहं शिवोऽहं



शिव रत्न

विश्वेश्वर महादेव शिव स्वरूप है कल्याण स्वरूप होने से शंकर है मंगलप्रद होने से अमंगलों के विद्धवंसक और प्रलयकर है जो सत्यं ज्ञानं आनन्दं ब्रह्म का ही स्वरूप तत्व है।

उपनिषदों के प्रारम्भ में ब्रह्म के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट करते हुए प्रश्न पूछा गया कि 'कि कारणं ब्रह्मः' अर्थात् जगत का कारण जो ब्रह्म है, वह कौन है? आगे चलकर ब्रह्म के स्वान पर सूक्ष्म और शिव शब्द का प्रयोग किया गया है। 'एकोहि सूक्ष्मं शिव' अर्थात् जो जगत पर शासन करते हैं वे एक भगवान् एक ही हैं, वे प्रत्येक जीव के भीतर स्थित हैं, यामस्त जीवों का निर्माण कर पालन करते हैं और प्रलय में सबको समेट लेते हैं। अर्थात् यह जगत् पूर्ण रूप से सूक्ष्म स्वरूप ही है, एक ही सूक्ष्म से अणु परमाणु रूप में जीव आत्मारूप में बोटि-कोटि सूक्ष्म उत्पन्न हुए जो सूक्ष्म में ही विलीन हो जाते हैं।

नारायण उपनिषद में भगवान् शिव को अनेक नामों से प्रणाम किया गया है—

शिवाय नमः शिवलिङ्गाय नमः भवाय नमः भवतिङ्गाय नमः शब्दाय नमः सर्वलिङ्गाय नमः यस्याय नमः वत्प्रथनाय नमः इत्यादि एवं अधोरेभ्योऽथ धोरेभ्यो धोरमोऽस्तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्रस्येभ्योः।

इशान सर्वविद्यान्मोश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्म शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्। नमो हिरण्यवत्त्वाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय

हिरण्यपत्तवेऽमित्यकरपतवे उमरपतवे यशुपतवे नमो
नमः।

इसीलिए भगवान् सूक्ष्म के सम्बन्ध में कहा गया है कि भगवान् शिव ही इन्द्र इत्यादि देवताओं की उत्पति हेतु वृष्टि हेतु अधिपति और सवर्ग्य हैं, वे परमदेव सबको सब्जुङ्गि से संयुक्त करें।

इस संसार में कर्म कल देने के लिए ही श्रृंग होती है। व्यक्ति अपने जीवन में नाना प्रकार के सुख और दुख भोगता हुआ अन्ततः पूर्ण श्रृंग में विलीन हो जाता है। इसलिए भगवान् शिव को प्रलय का देव कहा गया है जो व्यक्ति के जीवन में सब दुखों को हर लेते हैं, इसीलिए वे हर हैं और प्रार्थना में भी कहा जाता है— हर-हर महादेव अर्थात् जो हरण करने वाले हैं, वे ही तो महादेव हैं।

अव्यक्त और व्यक्त दोनों ही रूपों में शिव को जाना जाता है, इसीलिए शिव सर्वज्ञ भी है और निर्गुण भी है। निर्गुण रूप में वे लिंगाकार रूप में और सर्वज्ञ रूप में क्रिमित रूपों में सर्वपूज्य हैं।

शिव भक्ति के अधीन शिव को तिनेत्र, त्रिशूल, मुण्डमाला धारी एवं विगम्भर, शमशान वासी, अर्धनारीश्वर,

भ्रमधारी माना है। वास्तविक रूप में शिव के विनेत्र निकाल अर्थात् भूत-भविष्य और वर्तमान ज्ञान के बोधक हैं।

शिव के विनेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि स्वरूप हैं।

शिव की मुण्डमाला प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु का स्मरण कराती रहती है, जिससे वे दुष्कर्मों से विरक्त रहने का प्रयास करते हैं।

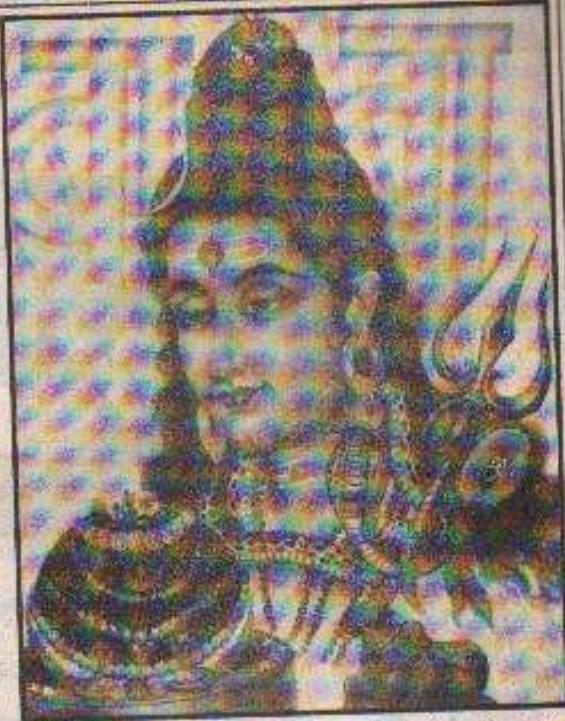
शिव दिग्मवर होते हुए भी भक्तों के धेवर्य को बढ़ाने वाले और मुक्त हस्त से वान करने वाले हैं। श्मशानवासी होते भी तीनों लोकों के स्वामी हैं अर्थात् शब्द होते भी योगाधिराज हैं, भद्रनजित अर्थात् काम की जीतने वाले होकर भी सदा महा शक्ति भगवती उमा के साथ हैं, भ्रमधारी होते भी अनेक रत्नराशियों के अधिपति हैं, वही शिव अजन्मे और अनेक रूपों में अभिभूत हैं, व्यक्त भी हैं और अव्यक्त भी।

भगवान् शिव के महादेव, भव, दिव्य, शंकर, शम्भु, उमाकांत, हर, मृद, निलकंठ, इशा, इशान, महेश, महेशवर, परमेश्वर, सर्व, सद, महारुद्र, कालरुद्र, श्रिलोचन, विरुपाक्ष, विश्वरूप, कामदेव, काल, महाकाल, कालविकरण, पशुपति हत्यादि अनेक नाम हैं।

शिव शब्द का अर्थ है कल्याण, शिव ही शंकर है, शंकर का अर्थ है कल्याण, क का अर्थ है करने वाला अर्थात् शंकर ही कल्याणकारी देव है, वहा ही शिव है, सुष्ठि की उत्पत्ति और पूर्णता शिव में ही है।

जिस प्रकार पुष्प में गंध, चन्द्र में शीतलता, सूर्य में प्रभा सिद्ध है, उसी प्रकार शिव में शक्ति भी सिद्ध है, शक्ति को किसी भी रूप में भी कहा जाए उमा, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, छाङ्गाणी, इन्द्राणी, महाकाली सब शिव के साथ ही निहित हैं। शिव पुरुष रूप है तो उमा स्त्री स्वरूप, शिव ब्रह्म है तो उमा सरस्वती, शिव विष्णु और उमा लक्ष्मी, शिव सूर्य तो उमा छाया, शिव चन्द्र है तो उमा लाला, शिव घन है तो उमा वेदी, शिव अग्नि है तो उमा स्वाहा, इसीलिए शिव और शक्ति दोनों की संयुक्त रूप से ही आराधना की जाती है। लिंगाकार रूप में भी शिव और शक्ति का समन्वित रूप लिंग और वेदी के रूप में प्रकट होता है।

प्रणव अक्षर ॐ शिव का गान कहा गया है अर्थात् संसार की प्रथम ध्वनि ॐ ही थी, ओंकार की ध्वनि अर्थात् प्रणव से सम्बन्ध में कहा गया है, कि यह सर्वव्यापी है, यह तारक मंत्र है, छान्न विद्या है, यह सकल मंत्रों का मूल है, इसीलिए प्रत्येक मंत्र के पहले प्रणव मंत्र अर्थात् ॐ बोला जाता है।



सवाइशिव को मृत्युंजय कहा गया है, उन्हें व्यक्ति कहा गया है, सांसारिक प्राणी सदैव यम अर्थात् मृत्यु से बचने का प्रथम करता है और केवल शिव को ही महाकाल, मृत्युंजय और अमृतेश्वर कहा गया है, शिव ही काल से ऊपर महाकाल है, मृत्यु को जीतने वाले हैं, इसीलिए मृत्युंजय हैं, जीवन में बार-बार मृत्यु से बचाकर उमृत विलाने में समर्थ हैं।

भौतिक द्युग और द्यात्र

भगवान् शिव आध्यात्मिकता के देव हैं तो भौतिकता के भी देव हैं, भौतिक जगत में व्यक्ति को जीवन में परिवार, पुत्र आनन्द, विद्या, ज्ञान, भवदीनता, सब कुछ तो चाहिए और ऐसा ही तो भगवान् शिव का स्वरूप है, शक्ति स्वरूप उमा पार्वती सदैव साथ है, देव अर्याणि गजानन्द पुत्र है, वहीं शीर्ष देव कात्तिकाय दूसरे पुत्र है, कम्बिओर सिंहि पुत्र वधुए हैं, सब कुछ होते हुए भी आनन्द से युक्त द्वोकर, भ्रम धारण कर हिमालय वासी हैं अर्थात् सब गुणों को रखते हुए भी मोह से परे हैं, जहां शिव है वहां भगवती है, जहां शिव हैं वहां गणपति है, जहां शिव हैं वहां शीर्यपति कात्तिकाय हैं, जहां शिव हैं वहां कम्बिओर सिंहि हैं। जहां शिव हैं, वहां जल है क्रयोकि शिव की जटाओं में जल धारण करने की क्षमता है और जहां जल है वहीं जीवन भी है।

कुण्डलिनी शक्ति जागरण में ज्योति स्वरूप शिवलिंग का पूजन शिव और शक्ति का समन्वित पूजन है, वह पृथ्वी रूपी इष्ट और आकाश रूपी लिंग का मिलन है। जिन साधना, शिव सिद्धि, शिव कृपा बिना शिवलिंग पूजन अन्यथा ही नहीं और निरन्तर बहनी जल धारा जीवन के जल तत्त्व को अभिव्यक्त करती है, यदि मनुष्य की देह से जल तत्त्व हटा दिया जाए तो जीवन समाप्त हो जाता है, इसीलिए जीवन के प्रतीक शिवलिंग का सौवैशिष्ट्य किया जाता है। अभिषेक का तात्पर्य है आर्पण, अभिषेक का तात्पर्य है ग्रहण करना, अभिषेक का तात्पर्य है निरन्तर प्रवाह होते रहना अर्थात् जहाँ विवर है वही निरन्तर प्रवाह है। यह सृष्टि भी जल से उत्पन्न हुई है और जल में ही विलीन हो जाती है। इसीलिए कहा गया है जल के बिना जीवन की कल्पना व्यर्थ है।

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सुन,
पानी गए न उबरे मोती मानस चून।

अर्थात् मनुष्य में जल ही जीवन प्रदान करता है, जब तब जल है तब तक जीवन है, वेह में भी लधिर के रूप में जल तत्त्व ही तो विद्यमान है, इस प्रतीर में पंचतत्वों में आकाश, भूमि, जल, वायु, ... में भी जल तत्त्व को प्रधान माना गया है। नेत्रों की भाषा भी आनन्द स्वरूप, कसणा-स्वरूप प्रेम अशु के रूप में ही प्रकट होती है, जीवन का निरन्तर क्रम भी जल तत्त्व वीर्य के माध्यम से प्रकट होता है, सत्त्व और रुज ही तो सृष्टि का क्रम निर्विघ्न रूप से चलाते रहते हैं।

वर्षा क्रतु - श्रावणमास

जल को देखते ही मन में प्रसन्नता उत्पय होती है क्योंकि ग्रहीर के भीतर का जल बाह्य जल से अपने आप को जोड़ता है, देह को हजार विधियों से स्वच्छ रखता जा सकता है लेकिन देह के ऊपर जल डालकर स्नान करने से जो निर्मलता प्राप्त होती है वह और जिसी अन्य माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती है। वर्षा में बरसते हुए जल को देखकर आत्मा भी प्रसन्न हो जाती है, मनुष्य हर क्रतु में अर्थात् शीत, उष्ण क्रतु में अपने आप को संयोगित कर लेता है लेकिन वर्षा की न्यूनता में सब कुछ शुष्क हो जाता है, वर्षा तो भगवान शिव का वरदान है जो आकाश मार्ग से पृथ्वी को तून करने के लिए आती है और जब तक मनुष्य के जीवन में तमीं नहीं आती तब तक वह शुष्क अनुभव करता है, इसीलिए भगवान शिव को रसेश्वर कहा जाया है, रस का तात्पर्य है जल तत्त्व और जीवन में जितने जल तत्त्व हैं वे भगवान शिव से ही उत्पन्न माने गये हैं।

पूजन उठता है कि व्यक्ति अपने जीवन में जल तत्त्व को सार्वत्कृत करे जिससे उसके जीवन में शुद्धता समाप्त हो जाए, वह कलाण, प्रेम, आनन्द के रस तत्त्वों से सरोबार रहे ? तो उसके लिए वर्षा क्रतु और वर्षा क्रतु में भी भगवान शिव का किसी न किसी रूप में आवाहन, पूजन और साधना उसके जीवन को पूर्णता प्रदान करती है। वर्षा का काल श्रावण मास माना गया है, उस समय ऐसा लगता है कि प्रकृति रूपी शक्ति पृथ्वी भी आकाश रूपी शिव को अपने साथ पकाकार करने के लिए तत्पर है, कहीं बीज बोये हुए हों या नहीं हों प्रकृति में से अपने आप हरियाली पृथ्वी के शुष्क सौन्दर्य को संवार देती है, इसीलिए श्रावण मास को शिव कल्प या शैव कल्प कहा गया है। जिस प्रकार शिवलिंग में और बाण पुरुष और प्रकृति का मिलन है, उसी प्रकार श्रावण मास भी ब्रह्मापदीय शिवलिंग और पृथ्वीरूपी प्रकृति का महामिलन है। इस कल्प में, इस काल में शिव की किसी भी रूप में आराधना की जाए वह अधुरी नहीं रह सकती क्योंकि शिव साकार-निराकार हर रूप में विद्यमान है, जहाँ जीवन है वहाँ शिव है, जहाँ श्रावणमास है वहाँ शिव अपनी कृपा प्रदान करने के लिए आतुर है। कितने आश्चर्य की बात है कि रात्रेस भी शिव भक्त हैं, देवता भी शिव भक्त हैं, राम भी शिव भक्त हैं, रावण भी शिव भक्त है, महिषासुर भी शिव भक्त है और महिषासुर मर्दिनी शक्ति भी शिव स्वरूप हैं। ऐसा इसलिए है कि ये नेत्रों वाला कुछ भूल कर सकता है लेकिन जिसका त्रिनेत्र है वह उस प्रकाश से, उस आशीर्वाद से किसी को भी अभावा नहीं रख सकता।

श्रावण मास प्रेम और अनंग का प्रतीक भी है और प्रेम और अनंग के देव शिव से अधिक कीन हो सकते हैं जिन्होंने अपनी प्रत्येक लीला में 'एकोही सद्गु' होते हुए पूरी सृष्टि में अनेकानेक रद्द उत्पन्न किये हैं। जब मन में प्रसन्नता हो, रुप भाव हो, सौन्दर्यभाव हो तो रसेश्वर शिव की साधना अवश्य करनी चाहिए और जहाँ शिव पूजा शिवलिंग पूजा हो वहाँ आधाशक्ति, गौरीपूजा, गणाशिष्ठति, गणपति पूजा शौर्य पति कातिकिय पूजा, कलिंग और सिद्धि की पूजा जीवन में शुभ और लाभ की प्राप्ति के लिए अत्यावश्यक है।

जो सत्य है वह शिव है, जो शिव है वह सुन्दर है, इसीलिए जो शिव है सत्य है, जो शिव है वह आनन्द है और यही है -

॥ सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ! ॥

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिज्ञ अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समाज रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे
अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

तिब्बती धन पढ़ाता लाना यथा

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहचान करा ही देती हैं... इन्हें कहने की आवश्यकता नहीं होती वह तो अपनी उपस्थिति मात्र से, अपनी मुग्धता से ही आस पास के लोगों को एहसास करा देता है। अपने होने का... उत्तम कोटि के मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिभित्ति दिव्य यंत्रों के लिए भी किसी विशेष साधना विधान की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे यंत्र तो स्वयं ही दिव्य रशियों के भण्डारण होते हैं, जिनसे राशियां स्वतः ही निकल कर सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति एवं स्थान को दैत्यर्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा अवश्य है परन्तु त्रिपंथ में जो उपलब्धियां तिब्बत के बीच लामाओं के पास हैं, वे आम आदमी को आश्चर्य थकित कर देने और दांतों तले उंगलियां ढबा लेने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसे ही एक सुखूर बीच लामा मठ से ग्रास गोपनीय पद्धतियों एवं मंत्रों से लिपित व अनुप्राणित यह यंत्र साधना के आर्थिक जीवन का कायाकल्प करने के लिए पर्याप्त है। यंत्र के स्थापन से तिब्बती लामाओं की धन देवी का वरद साधक के घर को धन-धान्य, समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है, किर अभाव उसके जीवन में नहीं रहते, खण्ड का बोझ उसके सर से हट जाता है और उसे किसी के आगे हाथ न पसारने पड़ते।

साधना विधि – किसी रविवार की शात्रि को यह यंत्र लाल कपड़े में लपेट कर औं मणिपद्मे धनदायै हुं औं फटः मंत्र का ? ? बार उच्चारण कर नौलि से बोथ दें। फिर इसे अपने घर की लिजोरी में रख दें। इससे निरन्तर अर्थ वृद्धि होगी।

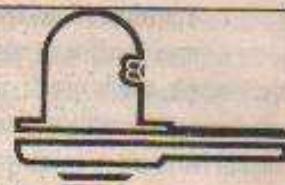
यह तुलभि उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक लाभर्या अपले किसी मेन्ट्र, रिक्टेन्ट्र या उत्तराल को बलाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के लाभर्या नहीं हैं, तो आप इत्यां भी लाभर्या बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पीटटक्कार्ड नं ४ तके उपर अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम इत्यां करेंगे।

वार्षिक लाभर्या शुल्क – 195/- डाक रस्ते अधिकर्ता 30/- Annual Subscription 195/- + 30/- postage

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – 342001. (राज.)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001. (Raj.), India.

Phone : 0291-432209 Fax : 0291-432010



शिवलिंग उपासना एहस्य

माघ कृष्ण चतुर्वेदी नहाशिवरात्रि के दिन कोटि सूर्य के ननान परम सेषोमय शिवलिंग का उद्भव हुआ है, एक मात्र शिव ही निर्गुण, निराकार, निष्कल हैं, शेष सभी सगुण, विग्रह युक्त होने से सकल कहे जाते हैं। निष्कल होने से ही शिव का निराकार स्वरूप अर्थात् शिवलिंग स्वरूप ही पूज्य है। अन्य देवताओं का नाकार विग्रह ही पूज्य होता है। भगवान् शिव स्कल और निष्कल दोनों हैं। अतः इनका निराकार स्वरूप और साकार स्वरूप दोनों ही पूज्य है।

शिवलिंग के सम्बन्ध में लिंग पुराण में लिखा है—
मूले ब्रह्मा तथा प्रथ्ये विष्णुस्त्रिभुवनेश्वरः।

स्त्रोपरि महादेवः प्रणवारुद्यः सदाशिवः॥

निजवेदी महादेवी लिङ्ग साक्षान्प्रहेष्वरः।

तथोः सम्पूर्णनानित्यं देवी देवदत्त यूनिती॥

शिवलिंग के मूल में ब्रह्म, सत्य ने विष्णु और ऊपर प्रणवात्मक शंकर हैं, शिवलिंग महेश्वर और अर्था महादेवी हैं।

आकाशं तित्य मित्याहुः पृथिवी तस्य पीतिका।

आत्मदः सर्वदेवज्ञत लक्ष्यत्वं तज्जुञ्चते॥

अर्थात् जिसमें सभी देवता अपनी विशिष्ट शक्तियों के साथ स्वापित हैं वही शिव है, वही शिवलिंग है और जिसकी पीठिका यह पृथ्वी और विस्तार आकाश पर्यन्त है।

गरुड पुराण में विभिन्न प्रकार के शिवलिंग से सम्बन्ध में विवरण आया है। ये शिवलिंग हैं—

१. गंध लिंग — दो भाग करन्तुरी, दूसरा चंचल और दूसरा कुंकुम भिन्नाकर गंध लिंग का निर्माण किया जाता है।

२. पुष्प लिंग — विभिन्न सुगन्धित पुष्पों से बनाकर

पूर्ण नाभ के लिए पुष्प लिंग का पूजन किया जाता है।

३. कर्पूर शिवलिंग — कर्पूर का बना शिवलिंग आश्यात्मिक उत्तरि के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। अष्ट धातु शिवलिंग सर्वसिद्धि साधना के लिए उपयुक्त है।

४. माणिक्य शिवलिंग — शुद्ध माणिक्य से निर्मित यह शिवलिंग तेजस्विता, निरोगता और राज्यबाधा से मुक्ति दिलाने में विशेष सहायता है।

५. नीलम शिवलिंग — शुद्ध नीलम से बना आभा युक्त शिवलिंग गृह कलह का नाश कर, घर में अशुभ वातावरण को समाप्त कर पूर्णता प्रदान करता है।

६. पत्रा शिवलिंग — बुद्धि, चातुर्य, व्यवहार बुद्धि के साथ यह शिवलिंग पूर्ण पीसत्र प्रदाना है।

इसके अलावा लवण, धन्य, दूर्वा, रजत इत्यादि से भी शिवलिंग निर्माण किया जा सकता है।

साधक किस समय, किस प्रकार के शिवलिंग का पूजन करे यह अन्तर्नात आवश्यक है। उपरोक्त शिवलिंग का निर्माण सहज नहीं होता है। इन्हें नित्य निर्मित करना और इनकी नित्य पूजा अर्चना करना भी सम्भव नहीं है। कलियुग में तीन प्रकार के शिवलिंगों के पूजन का विशेष महत्व है। ये तीन शिवलिंग हैं।

१. पारदेश्वर शिवलिंग

२. स्फटिक शिवलिंग

३. नमदीश्वर शिवलिंग

इन तीनों शिवलिंग के सम्बन्ध में यह विचार जा सकते हैं, लेकिन साधक को यह जानकारी होना आवश्यक है कि इन तीनों शिवलिंगों का क्या महत्व है, इनका निर्माण किस प्रकार

किया जाता है और इनकी क्या विशेषता है।

१. पारद शिवलिंग

पारद शिवलिंग तो एक चमत्कार है, मानव जाति को एक बरदान है, क्योंकि पारे को स्वयं शिव कहा गया है और इस पारे से बद्ध यदि शिवलिंग का निर्माण किया जाय, और उसे घर में स्थापित किया जाय तो उसकी तुलना अन्य किसी भी देवी-देवता या यज्ञ आदि से हो ही नहीं सकती।

पारद को रम, शिव व्यर्ण, रोगमुक्तिकरण, अजर, अमर, ग्रनन्तरारी और रसेन्द्र कहा गया है, शास्त्रों में तो बताया गया है—
हृषीगकणिकान्ता स्थं रसेन्द्रं परमेश्वरि।

स्वरन विमुच्यते पापे: तस्मो जन्मान्तरजिते।

अर्थात् जो मनुष्य पारद शिवलिंग का दर्शन करता है या उसका मतिभाव से स्मरण करता है, वह कई जन्मों के पापों से छूट जाता है और उसे परम पुण्य की प्राप्ति होती है।

इस रसाकर गंथ में पारद शिवलिंग के बारे में बताया है कि घर में पारद शिव को स्थापित करना और उसके दर्शन करना सभी समस्ताओं से मुक्ति एवं ममोकामनाओं की पूर्ति करना है, इस प्रकार के पारद शिवलिंग पर चढ़ाये गये जल को जो व्यक्ति ग्रहण करता है वह समस्त दुखों से मुक्त होकर जीवन में उन सारी इच्छाओं की पूर्ति कर लेता है जो उसके मन में होती है, ऐसे व्यक्ति के समरूप रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

स्वयं भूलिंगसाहस्रैर्यत्कलं सम्यग्बन्धनात्।

तत्कलं कोटिगुणितं रसलिंगार्थनादभरेत्॥

इन चिन्तामणि गंथ में बताया है कि जो व्यक्ति अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करता है और यदि केवल नित्य प्राप्ति उसके दर्शन ही करता है, तो भी उसके सारे पाप, दोष और दुःख समाप्त हो जाते हैं, उसका मन शान्त हो जाता है, और उसके घर में लक्ष्मी पूर्णता के साथ स्थापित हो जाती है।

लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप

व्यापि पारद शिवलिंग को भगवान शिव का विश्रह माना है, परन्तु लक्ष्मी उपनिषद् और अन्य ग्रंथों में पारद शिवलिंग को लक्ष्मी का ही प्रतिरूप स्वीकार किया गया है क्योंकि स्वयं विश्व ने कहा है कि जिसके घर में शिवलिंग स्थापित होता है, उसके घर में लक्ष्मी अवश्य ही अपनी सम्पूर्णता के साथ स्थापित होती है, और उसके जीवन में आर्थिक अभाव रह ही नहीं सकता।

इसराज समुच्चय गंथ में पारद शिवलिंग को तंत्र कहा गया है, उसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर लेता है, तो यदि घर पर, दुकान पर, व्यक्ति पर या परिवार पर किसी प्रकार का कोई तात्त्विक प्रयोग होता है, तो वह अवश्य ही समाप्त हो जाता है क्योंकि पारद शिवलिंग से स्वतः ऐसी किरणें निकलती हैं जो घर के अनिष्ट करने वाले तंत्र को समाप्त कर देती हैं, फलस्वरूप वह घर सभी वृष्टियों से सुखी और

स्वयं भूलिंगसाहस्रैर्यत्कलं सम्यग्बन्धनात्।

तत्कलं कोटिगुणितं रसलिंगार्थनादभरेत्॥

अर्थात् संसार के हजारों शिवलिंग की पूजा करने से मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है, उससे भी कठोड़ौगुबा फल पारद शिवलिंग की पूजा करने से मात्र होता है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को बाहिए कि वह जैसे भी ठो पारद शिवलिंग प्राप्त करे और घर में रथापित कर उसके दर्शन करने जीवन का सौभाग्य प्राप्त करे, क्योंकि इसका दर्शन करना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है।

सम्पन्नता की और अग्रसर होने लगता है।

पारद शिवलिंग रचना

धर्मधर संहिता में पारद शिवलिंग के निर्माण के बारे में बताया गया है कि पारद के आठ संस्कार कर उसे स्वर्ण के शास ये और किर पारद को धी घ्वार, चित्रक, कटेरी की जड़, त्रिफला, भरसों, राई और हल्दी का काढ़ा बना कर उसमें पारद को खरल करना चाहिए, और उससे जो श्रेष्ठ पारद प्राप्त हो, उसे कांजी से धो कर, कपड़े से पोछ कर पारद को प्राप्त कर लें, किर पुनः इसे स्वर्ण शास वे और बेल पत्र के रस में धोटें, इस प्रकार जो पारद प्राप्त हो उससे पारद शिवलिंग का निर्माण करें।

वसन्त ऐसे शिवलिंग से ही जीवन में पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सकती है, क्योंकि ऐसा पारद पूर्णतः मल रहित, शुद्ध, स्वच्छ और दिव्य होता है।

२. स्फटिक शिवलिंग

स्फटिक शिवलिंग कांच में भी ज्यादा सरेक, हीरे की तरह द्रमकता हुआ, गुम श्वेत, होता है और वास्तव में भी बहुत कम शिवलिंग के आकार के स्फटिक प्राप्त होते हैं, इसलिए स्फटिक शिवलिंग को सर्वाधिक महत्व दिया गया है।

यह स्फटिक अण्डाकार और पारवशी होता है, साथ ही साथ इसकी विशेषता यह होती है, कि यह अपने आप में एक अपूर्व ज्योति और चमक को समाहित किये हुए रहता है, इस शिवलिंग में दिव्य गुण होते हैं और इसका दर्शन ही अपने आप में सभी पापों को नाश करने वाला माना गया है।

जिस घर में भी यह स्फटिक शिवलिंग होता है, उस घर में किसी प्रकार की बीमारी या परेशानी नहीं आती, साथ ही साथ इस प्रकार का शिवलिंग जिसके घर में होता है, वह शिवलिंग मृत्युजयी कहलाता है। इसे बेटी पर स्थापित कर विशेष पूजन किया जाता है। इस प्रकार के शिवलिंग के सम्बन्ध में लिखा है।

नमदिनं पद्मासनस्य शशिधर मुकुटं पद्म वक्त्र विनेत्रं
मूलं वज्रं च चतुर्हयं पदम् भूमध्यवं दक्षभास्ये वहनतम् ।
लालं पाणं च घण्टा प्रस्थिहुतवहं सांकुशं वामभास्ये ।
नानालकार युत्तं एकटिक मणिलिम्बं पार्वतीशं नमामि ॥

एकटिक लिंग प्रतिष्ठापय नित्यं वज्रस्तो भाज्य वदावकम् ।
धनं धार्द्वं प्रतिष्ठां च आरोच्चं प्रवदाति च ॥

एकटिक लिंग की आराधना तथा पूजन सभी सौभाग्यों का प्रतीक है। धन, धार्द्व तथा प्रतिष्ठा के साथ पूजक को वह सम्पूर्ण आरोग्य भी प्रदान करता है।

एकटिक लिंग प्रतिष्ठापय नित्यं वज्रस्तो पुमान् ।
रोजं शोकं च दारिद्र्यं सर्वं वश्यति तद गृहात् ॥

जो व्यक्ति अपने घर में एकटिक शिवलिंग की प्रतिष्ठा कर नित्य पूजन करता है, उसके घर से रोज, शोक और दरिद्रता समाप्त हो जाती है तथा वहाँ लक्ष्मी का वास होता है।

पूजनावस्थ लिंगस्थ अस्त्वर्धनात् सश्रद्धया ।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवं साच्चु न्यमारक्ष्यात् ॥

जो साधक श्रद्धा पूर्वक प्रतिदिन एकटिक शिवलिंग का अर्चन और पूजन करता है, वह उसी पापों से मुक्त होकर शिव स्वरूप को प्राप्त करता है।

३. नमदिश्वर शिवलिंग

इन्हें है कि नमदा नदी में प्रत्येक कंकर सही रूप में शंकर है और उसका आकार शिवलिंग की तरह विखाई देता है। एक बार नमदा तट पर बाणासुर ने तपस्या कर भगवान शंकर को प्रसन्न किया और वर मांगा कि आप नमदा तट के पर्वतों पर इमेशा लिंग रूप में निवास करें और ऐसा प्रत्येक शिवलिंग चैतन्य हो, भगवान शंकर ने तपासन कहा, तब से नमदा के एक बाण लिंग की पूजा करने से अनेक शिवलिंगों की पूजा का फल प्राप्त होता है।

मध्य प्रदेश में खड़वा स्टेशन से २१ मील दूर बीर स्टेशन है जहाँ से १५ मील दूर पुनासा गांव तक पक्की सड़क है, यहाँ से आगे पैदल ५ मील जाने पर नमदा का सबसे बड़ा प्रपात मिलता है जो कि ५० फीट ऊपर से गिरता है। प्रपात के नीचे कुण्ड है, इस कुण्ड का नाम धवड़ी कुण्ड है। अधिकांश नमदिश्वर शिवलिंग यहीं से लोग ले जाते हैं तथा यहीं से प्राप्त शिवलिंग का महत्व है।

नमदिश्वर शिवलिंग का विशेष अस्तकार कर ही पूजन किया जाता है, नमदिश्वर शिवलिंग निन्द्यन हो। निन्द्य का तात्पर्य है कंकण, चपटा, एक पात्र स्थिन, छिद्र युक्त, वे शिवलिंग याथना के लिए बिलकुल उपयुक्त नहीं हैं। श्वेत, नीला, शब्द के रंग का शिवलिंग जो कि अंडाकार स्वरूप में ही वही शिवलिंग साधना के योग्य है।

इस प्रकार का शिवलिंग यदि घर में स्थापित होता है तो यह उस गृहस्थ का सौभाग्य ही माना जाता है। आवण महीने में यदि कोई व्यक्ति एक बार भी इस प्रकार के मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त नमदिश्वर शिवलिंग पर दृध या जल चढ़ाता है तो उसकी समरत मनोकामना पूर्ण होती है और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

आवण महीने में एक ओर जहाँ नमदिश्वर शिवलिंग के पूजन का विधान है, वही दूसरी ओर आवण प्रयोग श्री सम्पन्न होते हैं। परन्तु ये प्रयोग आवण महीने में ही सम्पन्न हैं और इस प्रकार के प्रयोग अपने घर में स्थापित नमदिश्वर शिवलिंग पर ही होते हैं।

चौथ शिवलिंग

१. जो शिवलिंग शहद के रंग के होते हैं वे लक्ष्मीदायक माने जाते हैं।

२. जिस शिवलिंग का रंग मेघ समान हो वह आर्थिक दृष्टि से लाभदायक रहता है।

३. जिस शिवलिंग का रंग भंवर के समान काला हो, वह अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है।

४. सबसे अच्छा शिवलिंग क्रमल गहे के समान होता है और उसका पूजन अत्यन्त ही शुभ माना गया है।

५. मुग्गी के अण्डे के आकार का शिवलिंग पूर्ण भीतिक सुख प्राप्त करने के लिये श्रेष्ठ माना गया है।

६. जो शिवलिंग नीली शार्व युक्त हो, वह शिवलिंग शुभ माना जाता है।

७. सफेद रंग का शिवलिंग जीवन में पूर्ण उत्तमि पर्यं समृद्धि देने में सहायक होता है।

८. नीले रंग का शिवलिंग नीला हो, वह अत्यन्त ही श्रेष्ठ माना गया है।

९. पीले रंग में छलकी सी लाली मिले हुए लिंग के आकार का शिवलिंग गृहस्थ व्यक्तियों के लिये पूर्ण भोग और मोक्ष देने में सहायक माना गया है।

१०. एक से अधिक रंग वाला शिवलिंग श्रेष्ठ माना जाता है।

११. जो शिवलिंग धारीदार हो वह अच्छा शिवलिंग माना जाता है।

१२. यदि शिवलिंग चन्द्रमा या यज्ञोपवीत युक्त हो अर्थात शिवलिंग में इस प्रकार का चन्द्रमा या यज्ञोपवीत प्राकृतिक रूप से विखाई देता हो तो वह शिवलिंग अत्यन्त ही श्रेष्ठ माना गया है।

अपर विभिन्न प्रकार के शिवलिंगों से सम्बन्धित सक्षिप्त विवरण दिया गया है। साधक किस समय किस प्रकार का शिवलिंग स्थापित करे और कौन सी साधना के लिए कौन सा शिवलिंग उपयुक्त है यह जानकारी भी आवश्यक है।

भगवान् विष्णु द्वारा पुक बार शिव आराधना
करने समय पुक बिल्व पत्र काम पठ भवा और
अग्निरेत में अपूर्णता होने लगी, तो उसी समय
अपना पुक तेज तिकाल कर अर्पण कर दिया,
इसीलिए विष्णु को पुण्डरीकाक्ष कहा जाता है।

यह निश्चित है कि प्रत्येक शिवलिंग परमानन्दसुख,
रुद्रसुख, नीलरुद्रसुख, तवरिक्ष मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा पूजा और मंत्र
सिद्ध चैतन्य अवश्य होना चाहिए। ऐसे ही शिवलिंग को बाप
सहित स्थापित कर पूजन एवं साधना करनी चाहिए।

भगवान् राम ने कहा है कि जिस घर में शिवलिंग स्थापित
नहीं होता और ऐसी पूजा होती है तो वह पूजा निरर्थक है। वास्तव
में कलियुग में भगवान् शिव ही शीघ्र प्रसन्न होने वाले और
मनोवालित कल देने वाले देव हैं। प्रत्येक गृहरथ के घर शिवलिंग
स्थापित होना ही चाहिए।

शिवोपालना और लक्षाक्ष

कद्रस्व उक्ति लद्राक्षः, अद्युयतवितम्
असु, तज्जन्त्यः वृक्षः

अर्थात् भगवान् शंकर के अशुद्धों से उत्पन्न हुआ वृक्ष
सद्ग्राहक वृक्ष कहताता है। एक बार भगवान् शंकर ने देवहित और
मनुष्य हित की भावना से विपुराल्पुर राक्षस का वध करने हेतु
अपनी तपस्या के माध्यम से अधोररत्र का चिन्तन किया और
उस चिन्तन में उनके नेत्रों से अश्रु बिन्दु गिरे। उन्हीं अशुद्धों से
रुद्राक्ष वृक्ष के उत्पत्ति हुई। सद्ग्राहक मूलतः श्वेत रस पीत और कृष्ण
बर्ण का होता है। जिस रुद्राक्ष में स्वयं छिद्र होता है वह उत्तम माना
गया है।

रुद्र साधना करने वाले प्रत्येक साधक को और उद्द आस्था
रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को रुद्राक्ष अवश्य धारण करना चाहिए।
रुद्राक्ष धारण में न कोई जटि भेद है नहीं स्त्री पुरुष भेद है।
शिवपुराण के अनुसार प्रत्येक आश्रम वर्ण और स्त्री पुरुष को
रुद्राक्ष धारण करना ही चाहिए।

मूलतः रुद्राक्ष एक मुख्य से चतुर्थी मुख्य तक होते हैं, पर
सामान्यतः पंचमुखी रुद्राक्ष ही सहन प्राप्य है। पंचमुखी रुद्राक्ष
पंचवेद विष्णु शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति का स्वरूप है।

प्रत्येक शिव साधना रुद्राक्ष की माला से ही सम्पन्न की
जानी चाहिए। रुद्राक्ष माला धारण करने से पहले 'ॐ ही नमः'
इस मंत्र का उच्चारण कर यह माला धारण करनी चाहिए।

रुद्राक्ष शरीर में शीतलता प्रदान करने वाला है और
आशुनिक विज्ञान की खोजों में यह आश्चर्यजनक तथ्य सिद्ध हुआ
है कि ब्लडप्रेशर माला व्यक्ति यदि रुद्राक्ष माला धारण करता है तो
उसका रक्त चाप सहुलित रहता है।

रुद्राक्ष भवता रुद्राक्ष माला धारण करने के सम्बन्ध में

लिखा गया है

ग्रहणे विषुणो वैवरथ्ये संक्षेप्यि वा।
दर्शयु पूर्णमासे च यर्णेषु विवरेषु च।
रुद्राक्षधारणात् सद्य सर्वपापैर्विमुच्यते ॥

यहाँ में विषुवस्त्रांति (गेवक तथा तुलांति) के दिन
कक्ष सक्रांति और मकर सक्रांति, अमावस्या, पूर्णिमा एवं पूर्ण
तिथि को रुद्राक्ष धारण करने से सद्य पाप दोष मुक्ति होती है।

शिवलिंग और बिल्वपत्र

पत्र, पूज्य, फल ये सभी मुख्य नीवे करके नहीं चढ़ाने
चाहिए। बिल्वपत्र ढंगन तोड़कर उड़ने करके चढ़ाने चाहिए।

बिल्वपत्र, खेजडा, आंबला, तमालपत्र और तुलसी इनके
पते टूटे फूटे होने पर भी पूजा में शहरण करने योग्य माने गये हैं।
बिल्व पत्र, कुंद, तुलसी, कमल के नुस्ख आदि एक दिन पहले
लाकर पूजा में प्रयोग किये जा सकते हैं क्योंकि इनको बासी होने
का दोष नहीं लगता।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये भगवान् शंकर की कमन या बिल्व
पत्र से पूजा की जानी चाहिए। एक लाख बिल्व पत्र चढ़ाने पर
साधक को कुबेर के समान सम्पत्ति प्राप्त होती ही है।

जो व्यक्ति एक लाख बिल्व पत्र शिव को बढ़ाता है उसके
नीचन की प्रत्येक इच्छा पूरी होती है। और उसके जीवन में किसी
भी प्रकार का कोई अमाव नहीं रहता है।

बिल्व पत्र

भगवान् शंकर को सर्वाधिक प्रिय बिल्वपत्र है।
शिव को बिल्व पत्र उपर्युक्त करने का मंत्र यह है -

ॐ नमो विनिमिते च कव चिन्ते च नमो विमिते च

वस्थिते च तमः श्रुताय च श्रुतसेताय च नमो

तुल्सुल्लाल्याय चाहनल्याय च नमो शृणुते प्रमृशाय च ॥

(सदा ३५)

निम्न प्रार्थना बिल्वपत्र चढ़ाने समय की जानी
चाहिए-

काशीवास लिवासी च कास्तमैरव पूजनम् ।

प्रद्यावे मावमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१॥

दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्वर्णनं याप्नताशनम् ।

अद्योर पाप संहारे बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥

त्रिवलं त्रिजुलाकरं त्रिज्जेत्रं च त्रिवायुधम् ।

त्रिजलं पाप संहारे बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥

अस्त्राङ्गे बिल्वपत्रैऽच यूजयेत् शिवशंकरम् ।

कोटि कल्पा महावालं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥

गृहणा बिल्वपत्राणि सपुष्याणि महेश्वर ।

सुग्रन्थीनि भावानीश बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥

जीवन का सौभाग्य पारदेश्वर शिवलिंग साधना

साधना विधि

इस साधना की किसी भी सोमवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। इसके लिए आपके पास ११ तोले का मंत्र सिद्ध शब्द प्रतिहित पारदेश्वर शिवलिंग होना आवश्यक है।

सर्वप्रथम अपने सामने किसी पात्र में पारदेश्वर शिवलिंग को स्थापित करें। दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें —

ध्यायेन निर्वयं महेशं रजतपिण्डि निर्वयं चारु चन्द्रावत्सं
स्त्वाकल्पोऽस्त्वलोगं परशु मृगवरा धीनि हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरणीव्याघ्रं कृतिं वसानं
विश्वासं विश्ववन्दं निखिलं भयं हरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।
इदं ध्यानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

आवाहन

पुण्य लेकर भगवान पारदेश्वर का आवाहन करें —
आवाहयामि वेशं आदि मध्यांतं बर्जितं
आधारं सर्वलोकानां आश्रितार्थं प्रवायिनम्।
ॐ पारदेश्वराय नमः इदं आवाहनं समर्पयामि नमः।

आसन

विश्वात्मने नमस्तुभ्यं विश्ववर निवासिने
स्त्वस्मिंहासनं चारु दयामि कलणनिधे।
इदं आसनं समर्पयामि ॐ पारदेश्वराय नमः।

पाद

नमः शर्वाय सोमाय सर्वं मंगलं हेतवे
तुभ्यं सम्प्रददे पाषां पारकेशं कलानिधे
ॐ पादं समर्पयामि। दो आचमनों जल छढ़ावें।

अधर्य

अधर्यं समर्पयामि नमः ॐ पारदेश्वराय नमः।
किसी पात्र में धोड़ा जल लें और शिवलिंग पर चढ़ावें।



आचमन

आचमनीयं जलं समर्पयामि श्री
पारदेश्वराय नमः।

रुग्णान्

गंगा विलव जटा भारं सोम सोमाद्वं शेषवरं,
नद्या मया समानीते स्नानं कुरु महेश्वरं।

स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।
शिवलिंग को शुच्च जल से स्नान कराएं।

पथः स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।
दूध से शिवलिंग को स्नान कराएं।

वधि स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।
दहो से शिवलिंग को स्नान कराएं।

धूत स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।
धी से शिवलिंग को स्नान कराएं।

मधु स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।
मधु से शिवलिंग को स्नान कराएं।

शर्करा स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।
शर्करा से शिवलिंग को स्नान कराएं।

शुच्च जल से स्नान कराकर शिवलिंग को मोछ दें। पुष्प,
अक्षत लेकर निम्न उच्चारण करते हुए शिवजी पर चढ़ाएं।

ॐ श्वाय नमः ॐ जगतपित्रे नमः ॐ लद्धाय नमः
ॐ कालान्तकाय नमः ॐ नागेन्द्रहाराय नमः ॐ कालकण्ठाय
नमः ॐ त्रिलोचनाय नमः ॐ पारदेश्वराय नमः।

इसके बाद किसी पात्र में पांच बिल्व पत्रों पर कुकुम,
अक्षत रखकर भगवान पारदेश्वर पर अर्पित करें —

विवलं विगुणाकारं निनेत्रं च त्रिधातुधं।

विजन्म पाप सहारं विलव पत्रं शिवार्पणं॥

किसी पात्र में गाय का कच्छा दूध व पानी मिलाकर
रख लें तथा निम्न मंत्र को बोलते हुए शिवलिंग पर प्रत्येक
मंत्रोच्चार के साथ एक आचमनी जल १ घंटे तक चढ़ावें।

॥ ॐ शं शम्भवाय पारदेश्वराय सशक्तिकाय नमः ॥

श्रावण मास ने चूर्णी सोमवार यह प्रतोग सम्पन्न करें।

इस साधना को सम्पन्न करने के बाद भगवान पारदेश्वर को
अमोघ शक्ति एवं उनके दिव्य स्वरूप का लाभ प्राप्त होता है
तथा मनोवालिस कार्य की पूर्ति होती है।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

पूर्ण रक्षा, आपत्ति उद्धार एवं भयनाश हेतु
अमोघ तांत्रोक्त साधना

महामृत्युंजय साधना

भगवान महामृत्युंजय शिव का रूप है, जिनकी साधना कर साथक समस्त रोगों, आकस्मिक दुर्घटनाओं असामयिक मृत्यु आदि के योगों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है। दुसाख्य रोगों के निवारण हेतु भी यह प्रयोग सफल होते देखा गया है। इस प्रयोग को करने के लिए महामृत्युंजय यंत्र, और रुद्राक्ष माला की आवश्यकता होती है। प्रातः शुक्र होकर साधना में सफलता के लिए गुरुदेव से प्रार्थना करें—

योगीश्वर गुरुस्वामिन् देशिकस्वरत्मनापर,

आहि त्राहि कृपा सिन्धो, नाशयण परत्पर।

त्वयेव माता च पिता . . .

इसके बाद गणपति का स्मरण करें—

विघ्नराज नमस्तेऽस्तु पावती ग्रियनन्वन्,

गृहाणाचामिमां वेव गन्धपूज्याकृतैः सङ्।

ॐ गं गणपतये नमः

आग्ने धाती पर कुकुम से ऊँचे व स्वस्त्रिक बनाए।

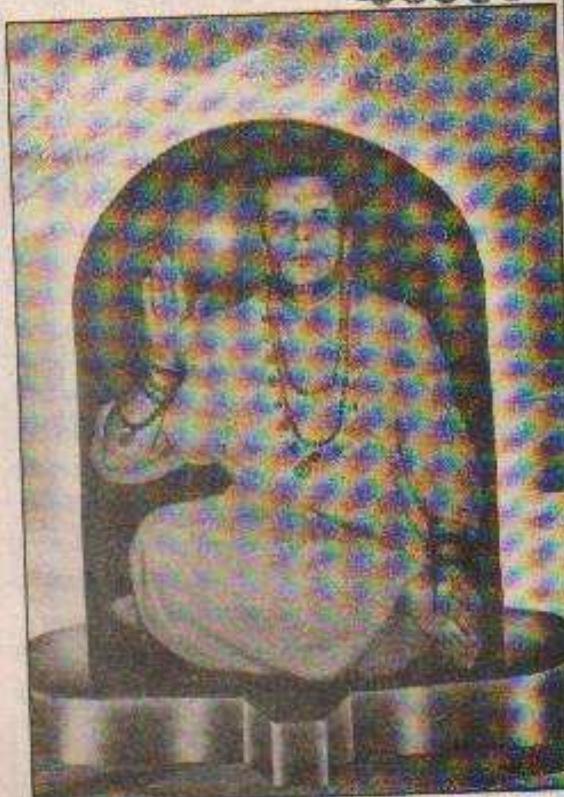
ॐ पर महामृत्युंजय यंत्र एवं स्वस्त्रिक पर कोई भी शिवलिंग रथ्यापित करें। दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें—

ऊँ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति
निमित्तं अमृकस्य (नाम) शरीरे सकल रोग निवृत्ति पूर्वकं
आरोग्य प्राप्ति हेतु महामृत्युंजय मन्त्र जप करिष्ये।

जल को भूमि पर ढोँडें त भगवान महामृत्युंजय का ध्यान करें
मृत्युञ्जय महादेव सर्वसौभाग्यदात्यकं

त्राहि मां जगतां नाश नरा जन्म लयाविष्टः।

इसके बाद ऊँचे जूँ से प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा



मन्त्र बोलते हुए एक-एक कर १०८ शिल्प पत्र यंत्र पर चढ़ाएं,
आरोग्य प्राप्ति की कामना करें, फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र
की ३ माला जप करें—

॥ ऊँ हौं जूँ सः भूर्भुवः स्यः। ऊँ ऋग्मवकं यजामहे
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उवरुक्तमिव बन्धनान्पृत्योर्मुक्षीय
मामृताद्। स्वः भूः भूः ऊँ। सः जूँ हौं ऊँ॥

दह विशिष्ट सम्पुट धूक मंत्र है, आवानमास में प्रत्येक
शनिवार को यह मन्त्र जप तो अवश्य सम्पन्न करें और भगवान
शिव का अधिष्ठेत अवश्य करें। जब भी किसी प्रकार की अय
कारक विधि बने अथवा परिवार में कोई व्याधी आये तो ऊँ
जूँ सः (नाम जिसके लिए किया जाए) पालय पालय सः जूँ ऊँ
इस मन्त्र का पांच माला जप करने से पीड़ा से मुक्ति प्राप्त हो
जाती है।

चारों शनिवार यह साधना करने के उपरान्त सामग्री
को किसी शिव मंदिर में अर्पित कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 450/-

साधनाओं में पूर्ण सिद्धि व भाग्योदय के लिए

पशुपतास्त्रेय साधन

महाभारत के युद्ध से पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सलाह की थी, कि वह महाभारत में विजयी होना चाहता है, वह यदि शैरों की असंख्य मेना पर सफलता पाना चाहता है, वह मृत्यु को जीतना चाहता है, और वह यदि नीबन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहता है, तो भगवान शिव की पशुपतास्त्रेय साधना के अलावा और कोई ऐसी साधना नहीं है, जो कि जीवन में पूर्णता दे सके।

पशुपतास्त्रेय साधना के विषय में विश्वामित्र जैसे दुर्धर्ष ऋषि ने एक स्वर में स्पष्ट किया है, कि पशुपतास्त्रेय साधना प्राप्त करना ही नीबन का सीधा भाग्य है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिये, उनसे समस्त साधनाओं में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने का बदान प्राप्त करने के लिए यही प्रयोग बेष्ट और विश्वसनीय है।

१. यह स्थेयोगी एवं स्वयं के कर्म दोषों से साधनाओं में सिद्धि मिलते मिलते रह जाती है, उन सभी का प्रभाव भगवान पशुपति की कृपा से समाप्त हो जाता है, और उगले वर्ष भर के लिए कर्म दोषों व यह नक्षत्रों का विपरीत प्रभाव लगभग नगण्य हो जाता है, जिससे किसी भी साधना में सफलता असन्दर्भ हो जाती है।

२. भगवान शिव मोक्ष प्रदायक देवता है, इस साधना के प्रभाव से साधक का परलोक सुधर जाता है।

३. साधक को जीवन में कहीं पर भी असफलता, अपमान या पराजय नहीं देखनी पड़ती।

४. भगवान शिव भाग्य के अधिपति देवता है। जिन का भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमज़ोर हो



तिथि

इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निधत्स्व,
यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः।
इसके बाद रुद्रायामल तंत्र के अनुसार रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें—

॥ ॐ हर, महेश्वर, शूलपाणि, पिनाक धूक, पशुपति,
शिव महावेद ईशान नमः शिवाय ॥

यह सम्पूर्ण प्रकार की सफलता देने वाला मंत्र है और इसके माध्यम से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। शास्त्रों में इसे अष्टाष्ट मंत्र या अष्ट शिव मंत्र कहते हैं, जो जपने आप में अद्वितीय है। प्रयोग समाप्ति के बाद आरती करें। बाद में रुद्राक्ष माला व बाण लिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 290/-

स्वस्थ देह से स्वस्थ मन और स्वस्थ
मन से स्वस्थ चित्त, यहीं तो जीवन है।

रोग मुक्ति रुद्र प्रयोग

प्रयोग विधि

रोगनाश एवं आयु वृद्धि के लिए मगवान रुद्र की साधना भवेष्यति है। उसके लिए विशिष्ट सामग्री का होना आवश्यक है, जिससे कि पूर्णरूप से साधना को सम्पन्न किया जा सके। इसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री है –

१. ग्राण-प्रनिषित एवं मंत्र मिहू ज्योतिर्यथ शिव यंत्र, मधु कण्ठ रुदाक्ष एवं रोगनाशक गुटिका।
२. दूर्वा या उत्तर विशा की ओर मुँह करके बैठे।
३. सफेद या पीले आसन पर बैठे।
४. प्रातः ५ बजे से ८ बजे के मध्य इस प्रयोग को करें या फिर रात्रि ८.३० से १२.०० बजे के मध्य करें।
५. सोमवार को यह साधना करें। किसी भी सोमवार को इसे सम्पन्न कर सकते हैं।
६. अपने सामने ब्राह्मोट के ऊपर सफेद वस्त्र बिछाकर, किसी याती में कुंकुम से ल्वरिणीक बनाकर शिव यंत्र को स्थापित कर दें व धूप दीप जला दें। फिर पूजन आरम्भ करें –

इवान

दोनों हाथ जोड़कर भगवान रुद्र से रोग नाश के लिए तथा सुख-सौभाग्य प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें –

इवायेत्तित्य महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकर्लोक्यवत्ताणं परशुभृगवराभीति हस्तं प्रसद्धं।

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणेव्याघ्रवृत्तिं

वसानं,

विश्वादं विश्व वन्द्यं निखिल भवहरं पञ्चवक्त्रं

विनेन्मः॥

आवाण

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहन समर्पयामि ॥

आसन

देवता को बिठाने के लिए आसन के रूप में पुष्प रखें
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनार्थं पुष्पं समर्पयामि ॥

रुग्णान

स्वान के लिए शिव यंत्र पर जल चढ़ायें

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि ॥

गंध, चन्दन या कुंकुम, जक्षत, पुष्प समर्पित करते

हुए निम्न मंत्र बोलें –

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः गंधं समर्पयामि ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां पृष्ठाणि समर्पयामि ॥

त्रिवेद्य

त्रिवेद्य के ऊपर जल प्रदिशणा करते हुए, रुद्र गायत्री मंत्र बोलें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महावेदाय धीमहि तत्वो रुद्रः

प्रचोदयात्

इसके बाद भोग लगायें –

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना कातुफलानि च समर्पयामि ॥

इसके बाद निम्न मंत्र का ५१ बार उच्चारण करते हुए शिव यंत्र पर जल की धारा चढ़ायें –

मंत्र

॥ ॐ सर्वरोगहराय रुद्राय हों क्रीं कद ॥

शिव यंत्र पर चढ़ाये हुए जल को किसी पाव में एकत्र कर ले तथा इसे रोगी के सिर पर तीन बार घुमाकर जल को किसी पवित्र वृक्ष की जड़ में चढ़ा दें।

शिव यंत्र को अपने पूजा कक्ष में सबा माह तक स्थापित रखें, इसके पश्चात शिव यंत्र, गुटिका एवं मधुरुपेण सदाचार की नवी में प्रवाहित कर दें।

इस साधना को करने वाले साधक की सभी प्रकार के रोग से मुक्ति प्राप्त होती है एवं इसे स्वस्थ व्यक्ति सम्पन्न करें, तो समस्त रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है।

साधना समाप्ती पैकेट – 270/-

जिसे अगदान राम ने लंका विजय ऐ पहले
खदयं सम्पन्न किया था शत्रुमर्दन साधना

रामेश्वरम् साधना

यह साधना प्रदोष कालीन है, संध्या काल में सूर्यस्त
से पूर्व और सूर्यास्त के बाव अर्थात दिन और रात्रि के सन्धिकाल
में साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

दक्षिण की ओर मुख करके पौले आसन पर बैठ जायें,
तथा अपने सामने बाजोट पर एक पात्र में खदयन के बनावर
चौकी पर रखें, उस पर स्फटिक शिवलिंग स्थापित करें, इस
पूजन से पूर्व गुरु और गणेश पूजन करें, स्फटिक शिवलिंग को
दृश्य, दही, धू, शहद और शक्कर से पंचामृत स्नान कराकर,
फिर शुद्ध जल से उसे स्नान कराकर पौछे लें, तथा उस पर
चंदन, केसर का तिलक करें, अशत चढाएं एवं माल्य अर्पण
करें तथा धूप व दीप विस्तार कर नैवेद्य अर्पित करें, जिस
मनोकामना के लिए यह साधना की जा रही है, उसका भी
चितन करें, अपने नाम, गोत्र तथा उस दिन का भी उच्चारण
करें, फिर इसके पश्चात जल को जमीन पर छोड़ दें तथा
आशुव्वास माला से निम्न संत्र वा ५ माला संत्र जप करें।

मंत्र

॥ ॐ हौर्णी शिवाय शिवपराय कट ॥

मंत्र जप के बाद वड माला अपने गले में धारण कर
नें, यह तीन दिन की साधना है, जो कि अचूक फल देने वाली
है, हर साधक को अपने जीवन में पूर्ण सुख, सम्पदा प्राप्त
करने तथा बिगड़े हुए कामों को बनाने हेतु इस साधना को
सम्पन्न करना ही चाहिए। साधना काल में एक समय रात्रि को
ही भोजन घलण करें।

साधना समाप्ति के पश्चात स्फटिक शिवलिंग को
अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा नाला को प्रतिदिन
पहिनें।

साधना सामग्री प्रेक्षण - 300/-

ज 'जून' 2000 मंत्र-तत्र-यंत्र विज्ञान '31'



कामना पूर्ति वाले देव महादेव शिव ही हैं।
इनके समक्ष भक्त यदि कोई कामना करता
है तो वह अर्थूरी कैसे रह सकती है -

इच्छिता कामना रिट्रिवरोग

श्रावणमास में सोमवार के दिन प्रातः स्नानादि कर्मों
से निवृत्त होकर पीली धोती पहिने तथा पौले आसन पर
पूर्वाभिष्ठु या पश्चिमाभिष्ठु होल्ड डेंटे। अपने सामने किसी
बाजोट पर चौला कपड़ा बिछा लें, उस पर एक ताङ्रपात्र में
न्योतिर्भव तेजस स्फटिक शिवलिंग को स्थित कर दें। किसी
दूसरे पात्र में रुद्राक्ष कार्यसिद्धि गुटिका तथा सिंहिदायक फल
को स्थापित कर दें।

शिवलिंग पर बाटक करते हुए इच्छित कामना की
पूर्ति हेतु निम्न मंत्र का पन्द्रह मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ ॐ साम्ब स्वाशिवाय नमः ॥

मंत्र जप समाप्ति के बाद शिवलिंग, गुटिका, रुद्राक्ष
तथा सिंहिदायक फल को किसी स्वच्छ कपड़े में बांध लें और
किसी पवित्र ल्पान पर या किसी तीर्थ जल में अगले दिन
किसीर्जित कर दें।

साधना सामग्री प्रेक्षण - 330/-



महाकाल प्रथोंग

बहु यामल में एक जगह कहा गया है, कि यदि साधक गुरु द्वारा प्रदान विव्य शक्तिपात दीशाओं (राज्याभिषेक, शिव्याभिषेक, शास्त्रवी आदि) को असुष्ण बनाये रखना चाहता है, तो उसके लिए महाकाल साधना अनिवार्य है।

रुद्र यामल में स्पष्ट है, कि साधक इस साधना में गुरु आज्ञा एवं उनका विव्य आशीर्वाद प्राप्त करके ही प्रवृत्त हो। आज्ञा मानसिक रूप से प्राप्त की जा सकती है . . . पर यह है भीति आवश्यक, क्योंकि महाकाल अति ऊर्ध देव है और साक्षात् महाकाल को उपस्थित करना एक प्रकार से मृत्यु का आलिंगन करना है।

तभी तो देव से अभिषृत महाकाल कभी भी साधना के दीरान साधक के सामने उपस्थित नहीं होते . . . फिर भी साधक को स्पष्टतः अनुभव हो जाता है, कि कोई आदा है और उसे आवाज भी सुनाई देती है। तब महाकाल आशीर्वाद स्वरूप मृत्यु देते हैं . . . मृत्यु देते हैं साधक की दरिद्रता को, उसकी दासनाओं को, उसके रोगों को, उसके अहपाशों को, उसके जीवन की असफलताओं को . . .

और चूंकि महाकाल स्वयं कालस्वरूप है एवं उस पर आरूढ़ है, अतः ऐसा साधक स्वतः ही द्रिकालदर्शी हो जाता है, कई-कई जन्मों पूर्व एवं आने वाले कई जन्मों की स्थिति उसके समाने स्पष्ट हो जाती है। वह जिसकी भी देखता है, उसका भूत, वर्तमान एवं भविष्य भी उसे साफ़-साफ़ दिखाई देने लगता है।

ऐसा साधक शताभ्यु प्राप्त करता है, उसके जन्मकालीन ग्रह लोक स्वतः ही नह हो जाते हैं, शनु उसके सम्बन्ध आते ही वीथीहीन हो जाते हैं एवं अधिकारी गण, भूत्रियों आदि के लिए भी उसकी आज्ञा शिरोधार्य होती है।

किसी भी सोमवार से यह साधना प्रारम्भ करें। रात

**महाकाल तो वह धूरी है, जिस पर समस्त ब्रह्माण्ड नतिशील है।
महाकाल में ही यह समस्त चराचर मिश्वत्याप्त है, महाकाल शिवक्लवाह स्वरूप है, लोकिस्त्वयंशिव से सहस्र गुणा ज्यादा तेजस्विता सुकृत है।**

को ५ बजे के बाद रन्नान कर, स्वच्छ धोती धारण कर गुरु पूजन सम्पन्न करना चाहिए और अपने पूजा कक्ष में बाजोट बिला कर उस पर एक धानी में 'महाकाल यंत्र' स्थापित कर धूप, दीप, पुष्प, सिन्दूर, नैवेद्य से पंचोपचार पूजन करें।

इसके बाद महाकाल का ध्यान करें—
सहस्ररेत्ति-प्रजानां प्रवत्सवभ्यमव्याद वं लमस्यन्ति देवा ॥
वावत ते सम्प्रविष्टेऽप्यवहितमन्तर्याम्याज्ञमुक्तात्मजां चेव नृत्य ॥
तरोकाज्ञासाविदेयः स जयतु भगवाऽपर्णीमहाकारस्त्रवर्मरा ।
विभ्राणः सोमतेर्वा महिवत्ययुतं व्यक्तलिङ्गं कपालम् ॥

ध्यान के उपरान्त महाकाल माला से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जप ११ दिन तक नित्य करें—

मंत्र

॥ ॐ एं वत्तौ न्मो भगवते महाकालाद
सिद्धिप्रदाद्य हौं अूँ उँ फट ॥

यदि साधना के दीरान भयानक दृश्य उत्पन्न हो, तो ठरे नहीं, गुरु स्मरण कर साधना में लगे रहें।

साधना समाप्त होने पर यह तथा माला को किसी नदी में विसर्जित कर दें।

साधना साधनी पैकेट - 350/-

प्यासा पपीहा पीहु पीहु करता रोता जारी जारे

सदगुरुप्रेम

आज तो बरस बीत गये लेकिन प्रभु क्या मेरे जीवन भी जीवन है, हम तो आखेर भर कर जाते थे—

कमल पंक बिन, आरती शश्व बिन, पही पंख बिन, गणित अंक बिन, निशा मंथक बिन, पृष्ठ बाग बिन, गान राग बिन, शीश नमन बिन, नवन दरस बिन, प्रिया कंत बिन, ये एवं बिन बेकार हैं। यह जीवन आप बिन सारहीन लगता है, मोह माया में हमें डालकर, प्रेम का पाठ पढ़ाकर आप तो कहा खो गए? पाठ तो आप ने पढ़ाया है प्रीत लगाकर प्रीत निधान भूल गए, किस वर भटके किस वर अटके।

आपके लिए तो सरल है कहना हँसा उड़हूं जगन की ओर निय दिन काटे हैं, आंसुओं की धार से कहा अपना दर्द दिखाऊँ, जब आपका नाम लेते लेते बांधेर ही हो गए हैं तो अब यह पाशल मन तो यही कहेगा मन का पपीहा प्यासा दरम बिन रोता जारे जारे, कब जानोगे दिल की लगन को बोलो तुम सावरिया, मेरा मन प्यासा का प्यासा, नित दिन नैना तरसे रे, आंख बिछाकर निय दिन ताकू तेरी ही डगरिया।

हे गुरुदेव, इतना तो निश्चित है कि सदगुरुदेव आप जैसा दुनिया में कहा होगा, इस संसार आगन में जिनने भी सितारे हैं, नजारे हैं ये सारा गुलशन आपकी फिजा में महेगा, प्रेम का एक भाव है वह भाव ही मेरी पूरी है, वह भाव तो यह संसार छिन ही नहीं सकता है, भुलाना चाहता हूं, ये बिन लेकिन मेरी तो हर रसना गुरु गुरु बोले हैं।

प्रेम तो उसी से किया जा सकता है जो प्रेममय हो, जो हमारे इदय में सावन के छोंक के समान आए और हमें सुरभित कर दे, हमें अपना बना ले, जिसमें कोई स्वार्थ न हो जो हमें अपने रंग में रग ले, जो हमें भी प्रेममय बना ले और इस प्रकार से प्रेम की धारा वही प्रवाहिन कर सकता है, जो स्वयं प्रेममय हो, जीवन में श्रुगार का सूतन वही कर सकता है जो स्वयं प्रकृतिमय हो, और पूर्णता भी वही प्रदान कर सकता है जो स्वयं पूर्ण हो, प्रकृति में लीन हो, स्वद पूर्ण ब्रह्मस्वरूप हो।

क्या कहूं तुम पर प्रभु मेरी कहां ओकात है,
कोई नहीं तुम सा धरा पर यह मुझे एहसास है,
गुरुओं में तुम सबगुरु हो, योगियों में परमहंस,
कृष्ण सा मोहन है तुम में, शंकर सा शांकर है,
जान का तुम हो सरोवर, खुशबू का शोका हो तुम,
करुणा दया की मूर्ति हो, प्रेम का स्वरूप हो
साधना का रूप हो तुम, सिद्धियों का पुंज हो,

गंगा से निर्मल हो तुम, साझर से भी गुरुबर विशाल
सिद्धाश्रम का रूप हो तुम, पूर्णता भी हो तुम्हीं,
इस धरा पर इस जहां में बस तुम ही तुम हो प्रभु।

प्रेम करने की कला सिखाने वाला ऐसा युगपुरुष सदगुरुदेव प्रातः स्मरणीय भगवत्पाद स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के अतिरिक्त और कौन हो सकता है?

इनके प्रेम में सिद्धाश्रम के क्रषि, योगी, सन्यासी लोग रहते हैं, जो सिद्धाश्रम की प्राणश्चेतना है, जिनके दर्शनों को पाने के लिए देवता भी ललायित रहते हैं, और जो कि सिद्धाश्रम के संचालक परमबद्धनीय दादागुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी के इदय की धड़कन हैं, जिनका रोम-रोम जान की चेतना से आप्नावित है, जो शिष्यों में निरन्तर अपने जान का प्रस्फुटन करते रहते हैं, जिनके विषय में शब्दों से कुछ भी कह पाना संभव नहीं है।

जीवन में पूर्णता प्राप्ति के लिए यह नितांत आवश्यक है कि हम सदगुरु रूपी प्रेमसागर में अवगाहन करें, उनके

श्रीचरणों में स्वयं को समर्पित कर, उनसे प्रेम करने की कला को सीधने का प्रदास कर सके तभी तो जीवन सुरभित हो सकेगा। प्रेम का एहसास करते हुए निरन्तर सदगुरु मैं लीन रहने से ही संसार के बंधनों से मुक्त हुआ जा सकता है, जीवन में तरक्ष्यता की स्थिति बनाई जा सकती है। समाज में रहते हुए भी मन के तरों को सदगुरु से जोड़े रखना और निरन्तर गुरुमय होते हुए जीवनका पन करना ही सही अर्थों में जीवन है। इसी तरह से जीवन के घर्म को, जीवन के औचित्य को समझा जा सकता है।

प्रेम की इस बहनी हुई धारा में आगे बढ़कर मिल जाना ही तो जीवन का सौभाग्य है। सदगुरुवेद के इवद्य से निरन्तर प्रवाहित होती इस धारा से अपने आपको पकाकर कर लेना ही सदगुरु की ओर एक कदम रखना है, उनको अपनी बांह यमा देना है। और यदगुरु तो उस शाश्वत सत्ता के प्रतिनिधि बनकर हमारे बीच उपस्थित होते हैं, हमें जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य समझाते हैं, हमें जीवन की सार्थकता का बोध कराते हैं।

यह प्रेम की राह सत्य की राह है, धर्म का मार्ग है, क्योंकि इसमें सदगुरुवेद का सन्निध्य है, यह राह हतनी सरल नहीं हो सकती। इसीलिए तो प्रेमपंथ को कठिन बताया गया है।

इश्के फिरत आंसू हैं, और वर्ण विल इनाम है,
राह ये कांटो भरी, मुश्किल बहुत अंजाम है।

समाज क्लर पग-पग पर दिए गए व्यंग्य, परिहास और अपमान के क्षणों में भी सदगुरु हमारे साथ रहते हुए उस छलाहल का निरन्तर पान करते रहते हैं, और अपने इदयांशों की गतिशील बनाए रखने में सहत प्रयत्नशील रहते हैं। किर सदगुरुवेद तो हमारे सुख-दुख के साथी बनकर सदा हमारे रोम-रोम और खून के कतरे कतरे में समाहित है, ऐसा लगता है मानो वे हमें कह रहे हों।

जल जाने में मजा क्या पूछ गम्भा से जरा,
खुब को जला कर क्यों न तू शमां बनना चाहता,
पास गुरु के होकर भी क्यों खो न जाना चाहता,
आंसुओं ओर वर्ण विल की परवाह करता क्यों है तू?
साथ तेरे में खड़ा किर गम से डरता क्यों है तू?
क्यों तू इतना तड़फता, क्यों दूर पाता है मुझे,
हम सफर गम के सफर में क्यों न पाता है मुझे,
मैं तेरे विल में बसा तू क्यों न पाता है मुझे॥

जब उनसे प्रेम कर लिया तो उनके तो अनन्त रूप हैं, वे तो अपने सभी शिष्यों के हृदयों में निवास करते हैं परन्तु प्रेम में व्यथा तो रहती ही है, उनसे सशरीर मिलने की चाह तो हमेशा रहती ही है। इस विरह में सब कुछ सुना सा लगने लगता है। परन्तु वे तो सर्वव्यापी हैं, अपने शिष्यों के हृदय में उठते भावों की निरन्तर पठते रहते हैं, और तभी वातावरण में एक सुगन्ध का झोंका कीष जाता है, वातावरण की सुरभित कर देता है, मानो सदगुरुवेद यहीं पास में ही खड़े मंद मंद मुस्कुरा रहे हैं, और आज भी अपनी मधुर वाणी में इसे सिद्धाश्रम का सवेश प्रदान कर रहे हैं।

चांद निकलता है तो बस रोशनी हो जाती है,
बो नो आते हैं तो खुशबू भी केल जाती है।

उनका इस प्रकार आकर समझा देना ही प्र्यास बुझा देता है, और किर वह आसू की अविरल जड़ी अपने आप ही सक जाती है, मन पर से पड़ा जलानना का परदा हट जाता है। यह सदगुरुवेद की करुणा ही तो है कि दृम जैसे तुच्छ औंचों पर भी अपनी अनुकम्भा बनाए रखते हैं।

सदगुरुवेद का यही तो वह बहु स्वरूप है जो सर्वव्यापी है, इसीलिए तो वे प्रेम का एक सागर हैं। उनका यही स्वरूप तो उन्हें अद्वितीय युगपुरुष की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है।

सिद्धाश्रम के ऐसे दिव्य सदगुरु को याद करते हुए यह विशाल शिष्य समूह उनसे आज भी मिलने को आतुर रहता है, नित्य उनकी राह निहारता रहता है। वे आज भी ब्रह्मस्वरूप में होते हुए भी अपने विशाल शिष्य समुदाय को निरन्तर भागदर्शन प्रदान करते रहते हैं, तथा कभी इस बात का एहसास ही नहीं होने देते कि वे हम से दूर हैं, क्योंकि वे तो अपने शिष्यों के हृदय में धड़कन के नमान निरन्तर संपर्कित रहते हैं, और उनका यह शिष्य समुदाय भी उनकी उपस्थिति को भवसून करता है, परन्तु उनसे सशरीर न मिल जाने से उनके विरह की अग्नि में जलता भी रहता है, तथा सिद्धाश्रम लियत ऐसे सदगुरु के चरणों में निरन्तर अपने आंसुओं के अर्च को अर्पित कर उनके प्रेम में आग्नलित रहता है।

वहै गम का एहसास लिए जीता हूं,
तुमसे मिलने की बस आस लिए जीता हूं
बहुत दूंडा तुम्हें गूलवर, जहाँ तक न नर गई,
तुम्हारे मौजूद होने का एहसास लिए जीता हूं।



दो खग्रास सूर्यग्रहण और आपकी नवोक्तुमा पूर्ति साधना

सूर्य और मनुष्य का विशेष सम्बन्ध है। सूर्य ग्रहण एक खगोलिय घटना न होकर तीव्रतम प्रभावकारी काल खण्ड होता है जिस का प्रभाव पूरी सृष्टि पर पड़ता है। आने वाले समय में २ सूर्यग्रहण एक ही वर्ष में आ रहे हैं, ज्योतिष की दृष्टि से इसका महत्व अलग है लेकिन साधनात्मक दृष्टि से यह काल तीव्र तांत्रोक्त प्रभाव से युक्त है। ग्रहण और तंत्र का परिणाम सम्बन्ध है, आप भी इस ग्रहण काल में तांत्रोक्त-मांत्रोक्त क्रिया अवश्य करें।

अंतरिक्ष मंडल में सूर्य को स्थिर ग्रह माना गया है और सारे ग्रह इसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं। पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा ३६५ दिन अथवा एक वर्ष में पूरी होती है, पृथ्वी धूरी पर युग्मी हुई सूर्य की भी परिक्रमा करती है, अपनी धूरी पर धूमने हुए पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सम्नुख रहता है वह भाग दिवस कहलाता है और जिस दृष्टि पर भाग पर सूर्य की किरणें नहीं पहुंच पाती वह समय रात्रि कहलाता है। ठीक इसी प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करता है, यह पूरी परिक्रमा एक मास में या ३० दिन में पूरी कर लेता है।

ग्रहण और तैज्ज्ञानिक दिनांक

खगोल शास्त्रियों के अनुसार जब पृथ्वी और चन्द्रमा परिक्रमा करते हुए एक ही रेखा पर आ जाते हैं अर्थात् जब सूर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाता है तो उस काल खण्ड के

दो सूर्यग्रहण — अद्भुत योग !

कई-कई शताब्दियों के बाद ऐसा अवसर आता है कि एक ही माह में दो सूर्यग्रहण आएं, इस वर्ष प्रथम खग्रास सूर्य ग्रहण आषाढ़ कृष्ण पक्ष अमावस्या दिनांक १ जुलाई २००० को घटित होगा और दूसरा सूर्य ग्रहण श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या सोमवार ३१ जुलाई को घटित होगा।

विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि १ जुलाई से ३१ जुलाई की बीच में अर्थात् दो ग्रहणों के बीच में किसी भी प्रकार की तांत्रिक साधना सम्पन्न की जा सकती है। साधकों के लिए ये ३१ दिन प्रचण्ड साधना मुहूर्त हैं। कामना पूर्ति तो एक छोटी सी साधना है जिसे अवश्य ही सम्पन्न करना है।

समय सूर्य की किरणें पृथ्वी पर नहीं पहुंचतीं और पृथ्वीवासी को सूर्य का उतना भाग कटा हुआ दिखाई देता है, उस समय को सोलर इकलिप्ट या सूर्य ग्रहण कहा जाता है।

खगोल शास्त्रियों के अनुसार केवल सूर्य के प्रकाश से ही आकाश मंडल के सारे ग्रह प्रभायुक्त हैं, पृथ्वी और चन्द्रमा को सूर्य से ही प्रकाश प्राप्त होता है, सामान्यतः पूर्णमासी को चन्द्रमा सम्पूर्ण रूप में पृथ्वी से दिखाई देता है। जब चन्द्रमा अपनी कक्षा में घूमता हुआ पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करता है और किसी पूर्णमासी के बिन चन्द्रमा और सूर्य के बीच में पृथ्वी का कोई भू भाग आ जाता है तो उस कालखण्ड के द्विरान सूर्य की किरणें चन्द्रमा तक नहीं पहुंच पाती हैं और उसना हिस्सा कटा हुआ दिखाई देता है, उसे चन्द्रग्रहण कहा जाता है।

भारतीय मनीषियों ने और खगोल शास्त्रियों ने भी वराहमीहि काल से इस बात पर विचार किया कि अंतरिक्ष की इस घटना का मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, विशेष ध्यान दिया कि यह अपनी अपनी गति से परिक्रमा अवश्य कर रहे हैं लेकिन नक्षत्र मंडल में स्थित इन ग्रहों का जीव जन्मताओं सहित मनुष्य से गहरा सम्बन्ध अवश्य है। इनी कारण जब नक्षत्र मंडल में ग्रहण की स्थिति बनती है तो प्रकृति पर, पृथ्वी पर प्रभाव अवश्य ही पड़ता है।

सूर्य ग्रहण और साधना विज्ञान

भारतीय साधना के क्षेत्र में ग्रहण का अपना अनग्रही महत्व है। वैसे तो ग्रहण काल कई कार्यों के लिए बहिर्भूत है, उस समय तो भीजन और जल भी ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि उस समय जो रश्मियां गतिशील होती हैं, वे प्रायः नुकसानदायक होती हैं, परन्तु यह बात भी सत्य है, कि विष भी कई बार अमृत की तरह लाभकारी होता है और वह जान लेने के बजाय जीवन बेता है।

इसी प्रकार ग्रहण में वैज्ञानिक रूप से भले ही बुराइयों की न हो, पर उसमें एक गुण अवश्य है, और वह यह, कि ग्रहण साधना हेतु अत्यधिक उपयोगी काल है। साधारण समय में किया गया एक लाख जप, सूर्य ग्रहण के समय किये गए कुछ मंत्र जप के बराबर होता है अर्थात् ग्रहण के समय किया गया मंत्र जप साधारण समय के किए गए मंत्र जप से कई गुना अधिक प्रभावी होता है। इस तरह कोई भी साधना यदि ग्रहण काल में सम्पन्न की जाए, तो उसका शातगुणा फल साधक को प्राप्त होता है, जिससे कि उसकी सफलता निश्चित होती है।

प्रथम खग्रास सूर्यग्रहण और

द्वितीय खग्रास सूर्य ग्रहण यद्यपि भारत में दिखाई नहीं देंगे लेकिन उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। ग्रहण का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर उतना ही पड़ेगा जितना दृश्यमान सूर्यग्रहण का पड़ता है। पूरी पृथ्वी टुकड़ों में बटी हुई नहीं है, यह अपने आप में एक साकार पिण्ड है और मनुष्य इस साकार पिण्ड पर रहने वाला चैतन्य प्राणी है।

सूर्य सभी ग्रहों में प्रमुख है। एक और जहाँ वह मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, रूप्याति, ज्ञान, बुद्धि, संतान, पूर्ण आद्य, स्वास्थ्य आदि का कारक है, वहीं आत्मकारक होने के कारण वह आत्म कल्याण में भी सहायक होता है।

ग्रहण काल का महत्व

जीवन में सब कुछ तो दुबारा भी प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु क्षण जो बीत गया उसे दुबारा वापस नहीं लाया जा सकता, नक्षत्रों का जो संयोग, ग्रहण का जो प्रभाव इस बार बन रहा है, वह एक बार बीत गया तो दुबारा नहीं आ सकता। सूर्य ग्रहण तो आएगा पर जो नक्षत्र संयोग इस बार है, वे ठीक उसी प्रकार नहीं होंगे। हो सकता है, आपको अपने जीवन काल में वस सूर्य ग्रहण का लाभ उठाने का अवसर मिले, परन्तु जो अवसर एक बार चूक गए तो जीवन में मात्र नहीं ही ग्रहण बचेंगे और कीन जाने कल कैली परिस्थिति हो, साधना कर सकें या नहीं कर सकें। इसलिए श्रेष्ठ साधक वही है, जो क्षण के महत्व को पहिचान कर निर्णय लेने में विळम्ब नहीं करते हैं।

साधना की प्रक्रिया उतनी कठिन या जटिल नहीं होती, महत्व तो क्षण विशेष का होता है, भारतीय कृष्णियों ने काल ज्ञान और ज्योतिष पर इतने अधिक ध्येय लिखे हैं, तो उसके पीछे मंत्रव्य यही है कि काल बहुत बलवान होता है।

अवतारों के जीवन में भी ग्रहण की महस्त के प्रसंग

करने को मिलते हैं। भगवान राम ने अपने गुरु से दीक्षा ग्रहण के समय ही प्राप्ति की थी, इसी प्रकार भगवान कृष्ण ने भी सान्धीपन ऋषि से दीक्षा जब प्राप्ति की थी, तो उस समय ग्रहण काल चल रहा था क्योंकि ग्रहण के समय ही तपस्याश को, दीक्षा या साधनात्मक प्रवाह को पूरी तरह से ग्रहण किया जा सकता है।

महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने जा रहा था, उधर कौरवों की सेना सुसज्जित हो चुकी थी, भीष्म, द्रोणाचार्य, कौरव सभी अपने-अपने रथों पर आरूढ़ थे। इस ओर पाण्डवों की भी सेना तैयार खड़ी थी, कि कब युद्ध का बिशुल बजे और युद्ध प्रारम्भ हो। पाण्डवों ने श्रीकृष्ण से युद्ध को प्रारम्भ करने की स्वीकृति मांगी, परन्तु कृष्ण ने उन्हें रोक दिया। कृष्ण ने कहा, कि यदि अभी युद्ध आरम्भ हो जाया तो विजय किसकी होगी निश्चित नहीं कहा जा सकता है, परन्तु अभी कुछ देर में ही सूर्य ग्रहण लगने वाला है, यदि तब युद्ध का शोखनाव किया जाए, तो विजय निश्चित ही पाण्डवों के हाथ लगेगी। कृष्ण ग्रहण के इन सिद्ध क्षणों को समझ रहे थे, और निश्चित समय पर जब पाण्डवों ने युद्ध प्रारम्भ किया तो द्वितीय साक्षी है, कि एक-एक कर सारे कौरव काल के गर्त में समाते चले गए, परन्तु पाण्डवों को कुछ भी नहीं हुआ, विजय श्री पाण्डवों के हाथ लगी।

सूर्यग्रहण साधना विधि

इस दिन की गई छोटी सी साधना भी सबा लाख मंत्र नज बाले अनुष्ठान के बराबर होती है, क्योंकि जो फल सबा लाख मंत्र नज करने से प्राप्त होता है, वही ग्रहण काल में ५ माला या ११ माला मंत्र नज करने पर ही प्राप्त हो सकता है।

जो जानी होते हैं, जो विद्वान होते हैं, जो उच्चकोटि के योगी, संन्यासी होते हैं, वे ऐसे क्षणों को चूकते नहीं हैं, वरन् ऐसे क्षणों के लिए प्रतीक्षारत रहते हैं, जिससे कि अल्पकाल में ही वे अपने मनोरथों को पूर्ण साकार रूप प्रदान करने में सक्षम हो सकें।

बड़े से बड़ा तांत्रिक भी इन क्षणों का उपयोग करने से नहीं चूकता, क्योंकि यही क्षण होते हैं – विशिष्ट तंत्र क्रियाओं में सफलता एवं सिद्धि प्राप्त करने के, यही क्षण होते हैं अभावों से मुक्ति प्राप्त करने के, यही क्षण होते हैं सम्पन्नता और श्रेष्ठता प्राप्त करने के . . . और अद्वितीय व्यक्तित्व प्राप्त कर लेने के।

ग्रहणकाल अजानियों के लिए अशुभ और जानियों के लिए शुभ होता है, क्योंकि वे ऐसे स्वर्णिम क्षणों को हाथ से

**सूर्य ग्रहण साधना मुहूर्त
प्रथम ख्याति सूर्यग्रहण**

**साधना २ जुलाई २००० को
सायं ७ बजाकर १२ मिनट से
रात्रि १२ बजाकर ४८ मिनट
तक विशेष रूप से सम्पन्न
करनी है।**

द्वितीय ख्याति

**सूर्यग्रहण साधना ३२ जुलाई
२००० को प्रातः ५ बजाकर
१६ मिनट से ७ बजाकर ५६
मिनट तक प्रातः काल विशेष
रूप से सम्पन्न करनी है।**

नहीं जाने देते, जब पूर्णिमा स्वयं प्राप्त होने के लिए साधक का द्वार खटखटा रही हो, ऐसे व्यक्ति उसका स्वागत कर पूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि यह क्षण ही भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों में पूर्णिमा प्राप्त कर लेने का है, इसीलिए ऐसे व्यक्ति, ऐसे साधक या योगी इस क्षण का लाभ उठाने के लिए बहुत पहले से ही तैयारी शुरू कर देते हैं, जिससे कि वे निश्चित समय पर साधना, मंत्र नज द्वारा अपने जीवन में सफलता एवं सम्पन्नता प्राप्त कर श्रेष्ठ मानव बन सकें।

सूर्य ग्रहण के समय यदि साधक मुण्डकाली प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो उसके चेहरे पर व्याप्त दुख, निराशा अपने-आप ही समाप्त हो जाती है, क्योंकि यह प्रयोग समस्त मनोरथों की पूर्ति करने वाला जो है। अलग-अलग प्रयोग विधानों की अपेक्षा, यदि इस प्रयोग को सम्पन्न कर लिया जाय, तो जीवन से रोग-शोक, चिन्ता, बाधा सब कुछ समाप्त होता ही है, इसमें कोई दो राद नहीं। यह प्रयोग जोपर्वीय, दुर्लभ और तीक्ष्ण प्रभावकारी है . . . खुब ही अनमा कर देख लीजिए!

ग्रहण काल में इस प्रयोग को निम्नलिखित कार्यों की

पूर्ति हेतु सम्पन्न किया जा सकता है –

१. यदि व्यक्ति गरीब हो, निर्भन हो और इनाम का कोई स्रोत नहीं हो या नहीं मिल पा रहा हो।

२. यदि रोगों से छुटकारा नहीं मिल पा रहा हो।

३. यश, वैभव, मान, सम्मान, ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु।

४. यदि कोई व्यक्ति किसी कारण ब्रशिरोधी हो जाय और उससे हनिहोने की आशंका हो, तो उसे निस्तेज और परास्त करने लिए।

५. किसी भी व्यक्ति को अपने विचारों के अनुकूल अनाकर कार्य पूर्ति हेतु।

६. यदि किसी साधना में जार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पा रही हो।

वस्तुतः सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए ही इस प्रयोग को इन विशिष्ट क्षणों में सम्पन्न करने पर निश्चित लाभ प्राप्त होता ही है।

प्रयोग विधि

१. इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री है – काली यज्ञ, मनोकामना चैतन्य माला, मुण्ड फल।

२. प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर साधक स्नान आदि नित्य क्रियाओं को पूर्ण करने से ही सम्पन्न कर ले।

३. पूर्वामिसुख होकर बैठें।

४. पीले आसन का प्रयोग करें और बस्त्र भी पीले ही धारण करें।

५. अपने सामने चौकी पर लाल बस्त्र बिछा दें तथा सभी पूजा सामग्री को एक जशह एकत्र करके अपने समीप रख लें।

६. स्थूलोदय होने पर किसी लोटे में जल लेकर, उसमें कुकुम और अक्षत मिला लें, और निम्न मंत्र को ३ बार पढ़कर सूर्य को अर्घ्य दें –

मंत्र

॥ ॐ आवित्यं जातवदरो नमः ॥

क्या आप और जानकारी प्राप्त करना चाहेंगे

वो सूर्य ग्रहण के बीच का काल अर्थात् १ जुलाई से ३१ जुलाई के बीच का समय साधनात्मक क्रियाओं का स्वयं सिद्ध मुहूर्त काल है। आप इस पूरे महीने जो भी साधना करना चाहें उसके सम्बन्ध में जोधपुर अथवा विल्ली फोन कर विशेष जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें। तांत्रिक साधनाओं के सम्बन्ध में जो भी जानकारी चाहें वह पत्र अथवा फोन पर आपको तुरन्त उपलब्ध करवा दी जाएगी।

७. फिर आसन पर बैठकर, सामने एक प्लेट में यंत्र पर कलाकार या मौली बांधकर, उस पर कुकुम या लाल चंदन से चार बिन्दी लगायें, जो कि धर्म, जर्य, काम और मोक्ष की प्रतीक हैं, फिर यंत्र को प्लेट में स्थापित कर दें।

८. अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य आदि से यंत्र की पूजा करें।

९. यंत्र की दाहिनी ओर चौकी पर कुकुम से रंग बावली की एक हेठी बनाकर उस पर मंत्रिसिद्ध मुण्ड फल को स्थापित करें।

१०. मुण्ड फल का कुकुम से तिलक कर अक्षत, पुष्प से पूजन करें।

११. इसके पश्चात दाहिने हाथ ने जल लेकर अपनी हँडा की पूर्ति हेतु संकल्प ले, और अपने नाम व गोद का उच्चारण कर जल छोड़ दें।

१२. फिर निम्न मंत्र का सांच ३ बजकर ४५ मिनट से लेकर २, बजकर ४५ मिनट तक मनोकामना चैतन्य माला से जप करें –

मंत्र

॥ ॐ मुण्डाय सर्व कार्य साधय ए नमः ॥

१३. मन जप के पश्चात समर्पण सामग्री को बाजोट पर बिछे लाल बस्त्र में बांधकर उसी दिन वा अगले दिन सुबह बहते जल अद्यात नदी या समुद्र में विसर्जित कर दें।

१४. पूरे साधना काल में धूप और दीप प्रज्ञवलित रहना चाहिए।

वह प्रयोग अपने आप में दिव्य और शीघ्र पलवायी है, इस ग्रहण काल में जिस मनोकामना की पूर्ति के लिए साधना की जाती है, वह अवश्य पूर्ण होती है।

सूर्य ग्रहण इस वर्ष में पहली बार आया है, जो अपने आप में समर्पण सिद्धियों को समेटे हुए है, इसलिए इस क्षण को चूकना, व्यक्ति के दुर्भाग्य का ही सूचक होगा, जो इतने बहुमूल्य क्षण को यों ही गवा दे।

चन्द्रग्रहण साधना

चन्द्रमा, मन, भावना, कल्पना शक्ति, ऐश्वर्य, संगीत, कला,
सोन्दर्य, माधुर्य, चरित्र, यश, कीर्ति का ग्रह है, ऐसे ग्रह की साधना
चन्द्रग्रहण पर तो आवश्यक ही है।

इस बार खग्रास चन्द्रग्रहण १६ नुलाई को पढ़ रहा है, और यह लगभग एक घंटे तक रहेगा, जिसका लाभ प्रत्येक साधक को उठाना ही चाहिए। चन्द्रग्रहण साधनात्मक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि चन्द्रग्रहण के समय वायुमंडल में एक विशेष प्रकार की शक्ति व्याप्त होती है, जो साधनात्मक दृष्टि से सफलतादायक होती है।

चन्द्रमा अपनी शीतलता, कोमलता और सीन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए चन्द्रमा व्यक्ति को सीन्दर्य, समस्त भौतिक-सुखों और गृहस्य सुखों को देने वाला है, अतः चन्द्रग्रहण के दिन का विशेष समय साधक के लिए महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि उन क्षणों में साधना सम्पन्न करने पर साधक की अन्तरिक्षति विशेष तरंगों द्वारा ग्रहों से जुड़ जाती है, और जिस व्यक्ति का भी इन तरंगों से सामर्ज्य हो जाता है, वह अपने जीवन में सफल हो जाता है।

चन्द्रग्रहण के समय साधना सम्पन्न करने पर व्यक्ति अपनी आड़ओं, समस्याओं और परेशानियों से हमेशा के लिए छुटकारा पा सकता है, क्योंकि समय का अपने-आप में विशेष महत्व होता है, और इस दिन का भलीभांति उपयोग कर वह अपने लिए सफलता के द्वारा खोल लेता है।

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि वह समय का दुरुपयोग न करते हुए पूजा पाठ, मंत्र जप, अनुष्ठान आदि सम्पन्न कर इसका संयुक्त्योग करे, क्योंकि किसी भी प्रकार की समस्या

से मुक्ति पाने के लिए इससे अच्छा समय और कोई नहीं है, इसका कारण यह है, कि इस विशिष्ट समय में किये गए पूजा विधान, मंत्र जप आदि का साधक को सौ गुना फल प्राप्त होता है, क्योंकि शहर काल में की गई एक माला मंत्र जप अन्य समय में की गई सी माला मंत्र जप के बराबर होती है।

बड़े-बड़े नौकरियों व मात्रिक भी ऐसे ही क्षणों की प्रतीक्षा में टक्कट्की लगाए बैठे रहते हैं, क्योंकि उन्हें उसके द्विगुणित फल प्राप्ति का ज्ञान पहले से ही होता है, और साधारण मानव इस जाति से अपरिचित रह जाने के कारण ऐसे विशेष क्षणों को यां ही गवां बैठता है, चूंकि सामान्य गृहस्थ के जीवन में समस्याएं व कठिनाइयां अधिक होती हैं, जिस कारणवश वह हर क्षण दुखी व तनावग्रस्त ही विश्वासी देता है, वे व्यक्ति इस ज्ञान का लाभ उठाकर अपने जीवन से उन समस्याओं और बाधाओं का निराकरण कर सकते हैं, और इस दृष्टि से सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण वरदान स्वरूप होता है।

वैसे तो चन्द्रग्रहण के समय कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है, किन्तु यहां पर कुछ विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, जो धौतिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति के लिए ग्रहण के समय करने पर अधिक लाभदायक सिद्ध होंगे, और साधक हनमें से कोई भी एक प्रयोग, जो उसकी अवश्यकता के अनुकूल हो, सम्पन्न कर सकता है।

१. शत्रुहन्ता प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शत्रु होते ही हैं, यदि शत्रु द्वारा धन का हरण कर लिया गया हो, जूँठे मुक्तमें में शत्रु द्वारा फँसा दिया गया हो या शत्रु द्वारा इज्जत, मान, सम्मान को हानि पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा हो, तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेने से शत्रु बाधा समाप्त हो जाती है।

इस प्रयोग के लिए शत्रु बाधा निवारण यंत्र और खड़ग माला की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम पीले वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख हो बैठ जाएं, फिर एक लकड़ी के बाजौट पर लाल कपड़ा बिछाकर, उस पर एक ताशपात्र में यत्र को स्थापित कर, पंचमृत से स्नान कराएं और फिर जल से उसे धोकर कुंकुम, अक्षत, पुष्प से उसका पूजन कर धूप, दीप जला दें।

इसके पश्चात हाथ में जल लेकर यह संकल्प लें, कि मैं अमुक कार्य के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूँ और मुझे इसमें सफलता मिले, ऐसा कहकर जल जीना पर छोड़ दें, फिर खड़ग माला से १३ माला या एक घंटे में जितनी भी माला हो निम्न मंत्र जप सम्पन्न करें —

मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं शत्रुहन्त्ये फट ॥

मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात यंत्र और माला को लाल वस्त्र में हो लैपट कर किसी नदी या कुएँ में विसर्जित कर दें, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 290/-

२. रोग मुक्ति प्रयोग

जिसके जीवन में चन्द्रना की स्थिति कमजोर होती है, वे व्यक्ति निर्बल और पेट वर्द, सिर दर्द तथा अन्य प्रकार की बिमारियों से ग्रसित होते हैं, अतः अन्य बिमारियों के निराकरण हेतु इस प्रयोग को चन्द्रघटण के समय सम्पन्न किया जाना चाहिए।

सोफेद या पीले वस्त्र धारण कर, ऊपर गुरुनामी चादर औढ़कर, पूर्व दिशा की ओर आसन बिछाकर बैठ जाएं, फिर संक्षिप्त गुस पूजन सम्पन्न कर, जल लेकर संकल्प लें, इसके पश्चात आरोग्य बहिर्भी माला से निम्न मंत्र का पूरे शहण काल तक जप करें —

॥ ॐ चन्द्र तमसे नमः ॥

मंत्र जप सम्पन्न होने के पश्चात उस माला को नदी या कुएँ में विसर्जित कर देना चाहिए, इस प्रयोग को रोगी

ज्ञ 'जून' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '42'

ग्रहण स्थिति	मा. स्टे.	समय
३६-७-२०००	घं	मिनट
कान्ति मालिन्यारम्भ	सांध	५
सम्मीलन	६	३५
मध्य	७	२७
उन्मीलन	८	१९
मोक्ष	रात्रि	९
चन्द्रघटण काल	३	५२

स्वयं या फिर कोई अन्य भी उसके नाम का संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है, ऐसा करने पर रोग का निराकरण स्वतः ही हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 150/-

३. बाधा निवारण प्रयोग

इन क्षणों में यदि व्यक्ति इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर ले, तो वह हर प्रकार की शह बाधा तथा अन्य प्रकार की गृहस्थ बाधाओं से मुक्त हो जाता है, क्योंकि ग्रहण के समय किया जाने वाला यह महत्वपूर्ण प्रयोग है।

पीतवस्त्र धारण कर, पूर्वभिमुख हो आसन पर बैठ जाएं, फिर अपने सामने एक बाजौट पर पीले रंग का वस्त्र बिछावें, तथा उस पर ११ दीपल के पत्तों को जल से धोकर उनके ऊपर ११ कुलाल चक्रों को स्थापित करें, इसके पश्चात उन चक्रों का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें और निम्न मंत्र जप सम्पन्न करें —

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं बाधा निवारिण्ये नमः ॥

मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात पूजन सामग्री को पीले वस्त्र में ही बांधकर नदी या कुएँ में विसर्जित कर दें। चन्द्र घटण प्रारम्भ होने से लेकर शहण मोक्ष तक साधक मंत्र जप करता रहे, और मंत्र जप को सम्पन्न करने के पश्चात उसमें प्रयुक्त सभी सामग्री को किसी नदी या कुएँ में अवश्य ही विसर्जित कर दें। प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात गुरु आरती अवश्य करें।

वास्तव में ही इन प्रयोगों को शहणकाल में किए जाने पर साधक को अवश्य ही लाभ प्राप्त होता है, तथा इसे स्त्री या पुरुष कोई भी कर सकता है, या फिर पति-पत्नी दोनों अलग-अलग प्रयोगों को भी सम्पन्न कर सकते हैं, इन विव्य प्रयोगों को सम्पन्न करने पर उनकी मनोकामनाओं की पूर्णि अवश्य ही हो जाती है।

साधना सामग्री पैकेट - 121/-

शिष्य धर्म

संसार में कुछ है, हर कुछ का कारण है, और हर कुछ का निवारण भी है... सदगुरु की कृपा प्राप्त करने का सरल उपाय ही वीक्षा है... और शिष्य का धर्म यही है, कि पुनः गुरु चरणों में उपस्थित होकर वीक्षा द्वारा अपने असौष की सिद्धि करे। सदगुरु करुणा करके भले ही शिष्य को कुछ प्रवान कर दे, वह उनकी कृपालुमा है, परन्तु शिष्य का धर्म तो यही है, कि वह प्रार्थना कर गुरुदेव से वीक्षा प्राप्त करे। भगवान् शिव ने पार्वती को शिष्य के इस धर्म के बारे में वीक्षा के महत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया है—

दीक्षा विधिं प्रथक्ष्यामि साधकात्मां हितेच्या ।

विधाय विधिवृ दीक्षां पशुत्वात् स विमुच्यते ॥

शास्त्रोत्त विधि द्वारा वीक्षा श्रहण के बाद साधक पशुत्व भाव से मुक्त होकर विमिष्ट भाव में प्रवेश करता है।

दीक्षते पश्मा सिद्धिः क्षीरते कर्मवासना ।

आप्यते पश्मं धाम तेन दीक्षा समृता शिवे ॥

हे पार्वती! जिस क्रिया के माध्यम से सांसारिक भोग वासना की समाप्ति व परम तत्व की प्राप्ति संभव होती है, उसे वीक्षा कहते हैं।

ब्रह्माविकीटपर्वन्तं जगत्सर्वं महेश्वरि ।

पशुत्वं मोहितं देव्यास्तस्माद् दीक्षां वरेत् कर्त्तौ ॥

हे महेश्वरि! ब्रह्मा से लेकर कीट पतंग समस्त प्राणि पशु भाव से आवेदित हैं, उससे मुक्त होने के लिए वीक्षा श्रहण करना चाहिए।

दीक्षितो वाति शरणं दीक्षाहीनो भवेत् पशुः ।

दीक्षितस्तु भवेजडानीं पशुभावोऽद्वितो विभुः ॥

दीक्षा के बिना पशुभाव की समाप्ति हो ही नहीं सकती, वीक्षा के बाद पशुभाव से मुक्त होकर वह साधक ज्ञान एवं ब्रह्मत्व को प्राप्त कर सिद्धि पुरुष बन जाता है। — श्रीमद्

* गुरु पूर्णिमा * गुरु पूर्णिमा * गुरु पूर्णिमा * गुरु पूर्णिमा *

शिष्य रुक नहीं सकता

शिष्य के लिए गुरु पूर्णिमा से बढ़कर कोई पर्व नहीं है हर शिष्य मन आत्मा बुद्धि को साक्षी रखते हुए गुरु पूर्णिमा शिविर में पहुंचता ही है।

इस बार गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर वेव धूमि प्रयाग इलाहाबाद में हजारों लाखों शिष्य मिलकर निखिल आत्म धारण पूजन सम्पन्न करेंगे यह पूजन सिद्धाश्रम दिव्य मंत्रों से संस्पर्शित निखिल सौभाग्य सिद्धि यंत्र निखिल जीतन्य माला, सिद्धाश्रम स्वरूप दर्शन गुटिका, सिद्धाश्रम वर्णित निखिलेश्वर शिवलिंग, निखिल ज्योति रत्न से सम्पन्न किया जाएगा यह साधना सामग्री गुरु पूजन का महत्वपूर्ण भाग है आप प्रयाग इलाहाबाद आकर यह पूजन अवश्य सम्पन्न करें।

चिन्ता नहीं करें, यदि किसी कारणवश विवशतावश गुरु पूर्णिमा पर इलाहाबाद नहीं पहुंच सके तो आपको गुरुधाम जोधपुर से यह विशेष अभिमंत्रित सामग्री भेज दी जाएगी आप फोन या पत्र द्वारा जोधपुर सूचना अवश्य भेज दें।

गुरु पूर्णिमा पूजन विधान पवित्र के जुलाई अंक में प्रकाशित किया जाएगा। न्यौत्तर - 390/-

गुरुवाणी

* इस काया मैं इतनी अधिक धमता
ओहरकि है कि यदि हम चाहे तो असंभव काय
को श्री समर्पण कर सकते हैं प्रश्न इतना ही है कि हम
उन सम्भावनाओं को पहचाने और करने में
विहित उन विशेषताओं को जगाने का प्रयत्न

कर जिससे हम पूर्णतः तक पहुच सके।

* उक्जबल भविष्य के लिए निरन्तर प्रयत्नशील होना पड़ेगा इसके लिए प्रबल पुरुषार्थ की
आवश्यकता है।

* नेरा स्वप्न यह भी है कि मेरे शिष्य सिद्धाश्रम की पवित्र भूमि का स्पर्श कर अपने जीवन को
उन्नय कर उसकी चेतना से ओतप्रेत होकर वहा की सविधता में तरल होकर वहा पावनता में पवित्र होकर
वहा की ज्योत्सना से शुश्र होकर इस समाज को यह बता सके कि ब्रिना धौतिकर्ता को छोड़ हुए भी केसे जीवन
के उस तरीज लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

* यह संघर्ष जो मन का है प्रत्येक शिष्य के मन में रहता है और यही उसके जीवन में पाप है और जीवन
में आनन्द मस्ती इस संघर्ष में विजय होने की क्रिया को कहते हैं मन खिचता है विषय की ओर छल की और इट की
ओर कपट की और दूसरे के बहकावे में आकर अपने आप को निराशा में धकेलने की ओर किसी का अहित पहुचाने
को प्राप्तना की ओर चालाकी की ओर ये तो सचारी भाव है।

* गुरु तो शिष्य को मादा में इसलिए घरस्त करता है कि वह सोचता है इसको धक्के देकर देख लूं एक बार दो
बार लाट लार धड़के देकर देख लूं क्या यह जीवन मर शिष्य बन सकता है या केवल ब्रोता ही रहेगा श्रीना शिष्य नहीं बन
सकता।

* शिष्य तभी बना जा सकता है यदि धीर-धीर मन के विकारों को धकेलता हुआ गुरु की ओर बढ़ सके।
जग्म ज्ञाप्त मद, लेम ये विकार होने हैं जो शिष्य को गुरु में समर्पित नहीं होने देते।

* जब शिष्य विचलित होने लगता है अपने आप में पञ्चात्प करने लग जाता है और आंखुओं के द्वारा नंचारी
भाव धूलने लग जाता है तब गुरु अपने नैर के अंगुह में उसको स्पर्श कर पाते हैं तब वह अपने आप में पुर्णता प्राप्त
कर जाता है तब वह जीवन का आनन्द ले पाता है।

* शिष्य को कोई पहचान नहीं होती वह केवल शिष्य होता है न उसकी
इसका धर्म होता है न कोई बधान होता है न मां होती है न बप होता है जब तुम मेरे
कोई बधान नहीं हो सकता।

जाति होती है न
पास ही तो दूसरा

* अधकार का अर्थ है ज्ञानता।

ज्ञानता का अर्थ है ज्ञान की न्यूनता केवल जीवा
कोई कला नहीं है आप सास ले रहे हैं या जिन्दा है या चल रहे
हैं वह कोई कला नहीं है कला है कि आप जीवन को किस तरह
से गतिशील करते हैं और जीवन को गतिशील करने की क्रिया
है वह अपने आप में पूर्ण ज्ञान है चेतना है और किस वह नहीं
है तो फिर अधकार है।

* जिसमें ज्ञान है वही जीवन में पूर्ण है जिसमें ज्ञान
है विवेक है वह ज्ञानता है कि मुझे क्या करना है और मैं क्या कर
रहा हूँ। क्या मैं प्रेम फैला रहा हूँ क्या धृणा फैला रहा हूँ या
ज्ञानन्द फैला रहा हूँ, चेतना फैला रहा हूँ दूसरों को सुमार्ग पर
गतिशील कर रहा हूँ या कुमार्ग पर गतिशील कर रहा हूँ—यही
विवेक है।

* और जब अन्दर चेतना भाती है अंदर एक आलोकन
एकाश होता है धीरे-धीरे उस स्थिति पर पहुंचते हैं जहाँ
कुण्डलिनी जागत होने लगती है तब चेहरे पर एक आभा एक
विष्वता झनकने लगती है और सरस्वती कंठ में स्थापित
हो जाती है।

* मन से कोई किसी का नहीं होता है होता है
तो मन से ही ही सकता है क्यों कि मन तो अपने आप में
पूर्ण पवित्र होता है मन से ही मन का सम्बन्ध ही सकता
है मेरा मन शुद्ध है तो सामने वाले का मन भी शुद्ध है।

* सेवा के माध्यम से ही चेतना एवं स्थिति
प्राप्त की जा सकती है। और सबसे कठिन सेवा है कठिन
इसमें आज्ञा पालन ही है लेना कुछ नहीं है दना ही देना
है आज्ञा पालन ही करना है और उसके माध्यम से
ही सब कुछ प्राप्त कर लेना है।

ज्ञानशुद्ध सीरिज़



यो तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परन्तु मंत्रों के लाईयन से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्दास अनुष्टुप्प के मण से ही होता है। मगं पर पड़े बुध्रमालों को यदि अंग द्वारा लियोग्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी स्थप से शान्त हो जाते हैं।

1. लम्बे घने व सुन्दर बालों के लिए प्रयोग

सिर्फ बाल होने ही काफी नहीं होते हैं, सौन्दर्य में विश्वार तभी आता है जब बाल गुबासूरत हो, लम्बे हों, घने व काले हों। बिना उपयुक्त गुणों के बालों के कारण चेहरे का आकर्षण समाज भी हो सकता है। आपने अनुभव किया होगा कि आप जब प्रातः स्वयं को तैयार करते हैं, तो चेहरे को अकर्षण बनाने के साथ ही यदि आलो का भी सजा बेते हैं, तो आपके सौन्दर्य में कई गुना बढ़ि हो जाती है।

इसके विपरीत आप यहीं हों, आपके बाल उलझे हों, तो आप स्वयं में और अधिक थकान अनुभव करेंगी और उस समय आप प्रभावपूर्ण ढंग से अपने कारों को करने में सफल नहीं हो पायेंगी।

ज्यादातर यहीं अनुभव किया जाया है, कि पुरुष हो धा न्वी यदि वह आकर्षण ढंग से तैयार है, तो उसके आसपास का वातावरण भी उत्साहवर्धक रहता है तथा ऐसे व्यक्ति तनाव का अनुभव भी कम करते हैं।

और फिर आपके समक्ष तो मंत्रों की शक्ति है जिसका प्रयोग कर आप विशिष्ट ही लगेंगे।

अपने बालों के सौन्दर्य हेतु मोती शंख में जल भर कर ताप्तात्र में स्थापित करें। फिर उसके समक्ष नित्य ज्यारह दिन तक निम्न मंत्र का उच्चारण २१ बार करें, मंत्र जप के प्रत्यात मोती शंख में रखा हुआ जल बालों पर लगा लें।

मन्त्र

ॐ कर्त्ता के शत्र दीर्घि प्रसुन्दराय ॐ ।

मन्त्रह दिन पञ्चात मोती शंख को लाल रंग के वस्त्र में लपेट कर, किसी निजेन स्थान में रख दें।

साधना समय : 150/-

जूल '2008 मंत्र-तंत्र-चंद्र विज्ञान '46'

साधना समय : 60/-

2. चेहरे को सौन्दर्य गुरुत बनाए कि वह आपको बिछाएं न हो

हर स्त्री को मन में यहीं इच्छा रहती है वह सुन्दर लगे तथा हर कोई उसे देखे और देखता ही रह जाए लेकिन उसकी सौन्दर्यता ज्यादा समय तक नहीं रहती है उस के साथ उसके सौन्दर्य में भी बदलाव आ जाता है आज के युग में नई नई प्रकार की कीम, फैशियल के छारा सुन्दर बना जा सकता है लेकिन यह एक दो दिन बाद चेहरा आपका बेजान हो जाता है क्योंकि यह सभी सामान नकली रहते हैं यह आपको अन्दर से सौन्दर्यवान नहीं बना सकते हैं सौन्दर्य क्या है इसे बहुत ही कम ही स्त्रीयां अपने जीवन में उतार पाती हैं वह हमेशा यहीं सोचती रहती है कि मैं उससे ज्यादा सुन्दर नहीं हूँ ऐसा नहीं है आप भी सौन्दर्यवान बन सकती है अपना यीकन वापस ला सकती है। एक बार इस प्रयोग को करके तो देखे किर आप पूर्ण योवनगुरु हो जाएंगी।

सौमदार के दिन प्रातःकाल उठकर किसी पात्र में कुकुम से स्वास्तिक बनाकर उसके ऊपर सौन्दर्य गुटिका को स्थापित करें। गुटिका पर कुकुम, अक्षत, चंदन चढ़ा कर पूजन करें। धी का दीपक लगाकर ओख बन्द करके प्रार्थना करें। फिर उपने चेहरे पर चंदन विस्कर उसका पतला लेप चेहरे पर लगा दें और गुटिका के समक्ष ३१ बार निम्न मंत्र का जप पन्द्रह दिन तक करें—

ॐ श्रीं सौन्दर्य मिद्ये फट् ।

नित्य साधना के पश्चात मोती शंख का लेप अपने चेहरे पर लगा रहने दे आधे घण्टे आद चेहरे को धो दें, बन्द्रह दिन के पश्चात गुटिका को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

सदगुरुदेव की कृपा से बाल-बाल बचे

हे गुरुदेव ! सर्वप्रथम मैं आपको कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ कि मैं जिन्दा हूँ, यह घटना २५.१२.१३ की रात के नगम्भग आठ बजे की है। मैं और हमारे प्रायवेट स्कूल के अध्यापक सुभाष गी तथा अन्य मित्र पास के गांव दीवाणा से हमारे गांव अकांवाली आ रहे थे। मैं स्कूटर चला रहा था। धुंध के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। रास्ते में नहर पड़ती है। तथा नहर के पास एक मोड़ है। मुझे धूंध के कारण वो मोड़ दिखाई नहीं दिया तथा हमारा स्कूटर नहर के पहले दस फीट गहरे गडडे में गिर गया। मैं सबसे नीचे तथा बाकि मित्र मेरे ऊपर गिरे। मुझे बिल्कुल भी चोट नहीं आई। इतनी ऊचाई से गिरने के बावजूद भी मेरे मुँह से एक ही शब्द निकल रहा था — गुरुदेव अनन्दर से उँ वरम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः का अजपा जप तो निरन्तर चलता ही रहता है। मैं हेरान हूँ कि मैं बच के से गया। वे सब गुरुदेव की कृपा है। उन्होंने कई बार प्रवचन में कहा है कि हें मेरे मानस पुत्रों। अगर मृत्यु आएगी तो भी वो बार-बार मुझे पूछेगी और मैं मृत्यु तुम्हारे पास नहीं आने वैगा। उसी प्रवचन के शब्द मेरे कान में उसी गम्य ठीक उन्हीं की आवाज में गूंजे, एक बार फिर सदगुरुदेव को साधांग वण्डबत प्रणाम।

— स्वर्ण सिंह निखिल, अकांवाली, फतेहाबाद, हरियाणा.

दीक्षा से पुत्र की प्राप्ति

मेरी आयु ३५ वर्ष की है, तथा संतान प्राप्त करने के लिए हमने बहुत अधिक खर्च किया पर लाभ कुछ नहीं हुआ, बल्कि डाक्टर ने यह बता दिया कि तुम्हें संतान नहीं होगी। अन्न में हमने सदगुरुदेव जी से परामर्श लेकर पुत्र प्राप्ति दीक्षा मितम्बर १८ में फोटो के माध्यम से जोधपुर में तीन तथा फरवरी १९ बिलासपुर शिविर में पूर्वकृत दोष निवारण दीक्षा प्राप्त करने के बाद मुझे गर्भधारण में सफलता मिली। अभी रात्रिपुर शिविर में गर्भस्थ शिशु चेतना दीक्षा ली, तब मुझे दिनांक १४ को पुत्र रन्न प्राप्त हुआ, बच्चा स्वस्थ एवं सुन्दर है।

पुत्र प्राप्ति दीक्षा के बाद साधना के तीसरे दिन

सदगुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंद जी रवान में कमण्डल में जल लेकर आए तथा अपने हाथों से पिला कर एवं सफलता का आशीर्वाद देकर चले गये। २६ वें दिन सदगुरुदेव ने स्वयं निस बच्चे का हमको स्वान में दर्शन कराया था उसी चेहरे बाला पुत्र रन्न हमें प्राप्त हुआ। इस प्रकार परम पूज्य गुरुदेव ने हमें निःसंतान होने से बचा लिया तथा डाक्टर का कथन असत्य सिद्ध हुआ।

— कुमुम बत्रा प्रधान, अंकोली, बसना, महाराष्ट्र, (म.प्र.)

स्वान में आन्योदय दीक्षा

मैं सन १६ से मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मैं एक गरीब गुरुस्य शिष्य हूँ। मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण मैं हमेशा मन में यह सोचता था कि इस संसार में जिसके पास धन है, वही शिविर में भाग ले सकता है और वही बड़ी साधना एवं दीक्षा ले सकता है। जब से मेरे सदगुरुदेव जी महाप्रयाण हुये, तब से उनका दर्शन मुझे नहीं होता था, जिससे मैं आत्मा से रोता था। मैं अपने आप को असहाय मानने लगा था और मैं कुछ विशेष दीक्षा के लिए भी लालायित था। मैं अपने मन में सोचता था कि अब मुझे दीक्षा कौन देगा और कौन मुझे इस जीवन में सहारा देगा लेकिन इसी बीच मैं परम पूज्य गुरुदेव अरविन्द श्रीमाली जो से भी मिला, उन्होंने मुझे आन्योदय दीक्षा लेने का निर्देश पर्ची पर दिया। मैं फिर उनका दर्शन कर घर चला गया। कुछ दिन बाद मैं फिर इस चिन्ता में डूबने लगा कि मेरे पास पैसे नहीं हैं। मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, मैं दिन रात सदगुरुदेव जी का चिंतन-मनन करता और उन्हीं से कहता कि आपको लीला आप ही जानें, मैं क्या कर सकता हूँ। एक दिन अचानक बहसुहृत में परमपूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी ने मुझ तुच्छ गरीब शिष्य को दर्शन दिये और बोले कि मुझे सब



कुछ पता है कि तुम्हें क्या चाहिये, और उन्होंने अपना दहिना वरदहस्त मेरे साथ पर रखते हुये और शक्तिपात करते हुए भास्योदय दीक्षा प्रदान की। गुरुदेव जी ने स्वप्न में आकर मुझे दीक्षा प्रदान की तो मैं धन्य-धन्य हो गया।

— संजीत कुमार पोष्टार, जमुना कोलरी, शहडोल (म. प्र.)

अब गुरुदेव ने मेरे प्राण बचाये

हैपावली का दिन था, मुझे पूजा हेतु कूल लेने शहर से चाहर स्थित पौधशाला जाना था, दिन ढलने वाला था और धर्म शास्त्रनुसार सूर्योस्त के पश्चात कूल तोड़ना उचित नहीं है, इसी चिंता को लेकर मैं साइकिल से बड़ी तेजी के साथ चला जा रहा था, और हृदय से खदगुरु का चिन्तन कर रहा था, तभी पीछे से एक मोटर साइकिल वाला जो शायद नहीं मैं था और अस्त्यं गति से आ रहा था मेरी साइकिल से टकराया। और मेरे पीछे शुगर निल की ओर से आ रहे मजदूरों के मुख से चौखं भिकली, परन्तु कुछ पलों तक मैं पता नहीं कहां खो गया, बस इनना एहसास हुआ कि मेरी साइकिल पर कोई अन्य व्यक्ति भी सवार हो गया है। इन्होंने नेज टक्कर लेने के बाद आश्चर्य इस बात का था कि न तो मेरी साइकिल का डैलेस बिंगड़ा था और न मैं सका था, जबकि मोटर साइकिल वाला व्यक्ति बोडी ही दूरी पर जाकर सड़क पर गिर गया था और उसके माथे पर चोट भी थी। मजदूरों ने मुझे रोककर अच्छी तरह से देखा कि कहाँ मेरे चोट तो नहीं लगी, पर मेरे शरीर पर खरोंच तक नहीं थी, आश्चर्यजनक बात यह भी थी कि साइकिल भी कहाँ से दूटी-फूटी नहीं थी जबकि मोटर साइकिल वाले की अगली लाइट फूट गई थी। उस बात को लेकर बहु मौजूद लोग हृतप्रभ थे, परन्तु मैं जानता था कि यह सब मेरे गुरुदेव का ही कमाल है। सच गुरुदेव, आप अपने शिष्यों की परायण पर रक्षा करते हैं।

— पंकज भारद्वाज, खातियान, धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.)

मुरुकूपा से पढ़ाई के लिपु पैसे लिले

मैंने रायपुर के राजकुमार कालेज से १२ कक्षा पास की, उसके बाद मैंने P.E.T. व I.I.T. की परीक्षा दी, पहली बार मैं P.E.T. में तो पास हो गया पर I.I.T. में नहीं हो पाया। मैंने शिम्मत नहीं हारी बर्फिर से एक साल तैयारी की, कठिन परिश्रम के बाद मैं दोनों परीक्षाओं में जास हो गया। मेरा ऐडमिशन कानपुर I.I.T. कालेज में हो गया। अब समस्या थी कि तोस हजार प्रति वर्ष ४ साल तक भरने थे जिसकी हानि परिवार में व्यवस्था नहीं थी। पापाजी तो शिम्मत हार रहे थे

कि हम तो नहीं पढ़ा पाएंगे, पर मेरी मम्मी ने शिम्मत नहीं हारी क्योंकि वो परमपूज्य गुरुदेव की जिल्या है। उन्होंने मुझे साल्कना बीं व पारद श्री यंत्र के सामने कमल गड़े की माला से मां लहरी की साधना की व प्रतिदिन यही प्रार्थना की कि कि है मां।



बच्चे को पढ़ने की व्यवस्था करा

या। तभी अचानक दिल्ली की एक संस्था का पता चला जो होनार बच्चों की आर्थिक स्थपत्य से मदद करती है। यहाँ अर्जी भेजी तो ६ हजार स्पष्ट उन्होंने भेजे। फिर इलाहाबाद बैंक वाले स्वयं कालेज में आए। उन्होंने बच्चे को बताया कि जितने लोन की आवश्यकता है हमरा बैंक देगा सर्विस लगने के बाद लोन पूरा बांधिया कर देना। इस तरह से हमने लोन लेना शुरू किया व पढ़ाई चल रही है। चार साल बाद मेरा बीं टेक पूरा हो जाएगा।

धम्ना है हम लोग जो इस कलियुग में ऐसे गुरुदेव हैं जिन्हे हैं जो हमारी परेशानियों को, हमारी समस्याओं को दूर करने के लिए देवताओं की साधना द्ये सिखाते हैं जिससे हम सभी के कार्य सफल हो जाते हैं। मैं चाहता हूं कि आज के इस युग में अधिक से अधिक दृढ़ी लोग इस पवित्र पत्रिका नंतर तंत्र धन्त्र विज्ञान को समझ सकें।

— अनुल ताम्रकार, CC लवकृश्विहार, इन्दौर (म.प्र.)

स्वप्न में गुरुदेव ने दीक्षा दी

मैंने ५ करबरों इनाड़ाबाद के शिविर में महामृत्युंजय दीक्षा ली थदगुरु बडे महान हैं और किसी भी रूप में दर्शन दे सकते हैं। यह घटना २३ करबरी की रात्रि ४ बजे की है। हमने स्वप्न में देखा कि मेरे घर से बोडी दूर उत्तर दिशा में एक संत का आश्रम है, मैं उसमें जैठा हूं, उन संत ने अभी कुछ दिन पूर्व शरीर न्याय दिया था, वे १२५ वर्ष के थे, वहाँ पर स्वदगुरुदेव निश्चिनेश्वरानन्द जी के रूप में प्रकट हुए, उनके साथ एक और संत थे, संभवतः वह दाया गुरु स्वामी सच्चिदानन्द जी रहे होंगे। गुरुदेव ने शिर पर एक लाल फूल एवं अपना हाथ रखा। उसके हाथ गुरुदेव की आँखें लाल हो गईं और वे अपनी आँखें मेरी आँखों के निकट लाते गये। फिर थोड़ा दूर करते, फिर निकट लाते जिससे मेरे शरीर में कम्पन होने लगी। तब उन्होंने अपना ऊंगला मेरे आँख के पर रखा और फिर अन्तर्धीन हो गये। उनसे बिछुड़ने के बाद मैं बहुत रोया और जब मींद खूनी तो मेरा ताकिया आँखोंसे भी गिरा था। मैं तो धन्य हो गया, गुरुदेव आएको कोहि कोहि प्रणाम।

— शक्तिप्रताप सिंह, करीबी चौमुहानी, बाराणसी ३, प्र.

क्रिया योग

योग विद्या द्वारा देह और मन को समाधि की स्थिति तक पहुंचाने की क्रिया का ही नाम है क्रिया योग जो पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की क्रिया है।

सांसारिक विकार और मानसिक तनाव को दूर कर दी मनुष्य एकाशचित हो सकता है शारीरिक विकारों का मूल कारण भी मानसिक विकार ही है जब तक ये विकार रहते हैं वे ह और मन के सम्बन्ध बराबर संतुलित नहीं हो पाता, तभी व्यक्ति अपने जीवन में एक चढ़पटाट युक्त होते हुए, हर समय असन्तुष्ट आलस्य युक्त रहता है आत्मानन्द और आत्मानुभूति उसे अनुभव नहीं हो सकती इसी कारण शारीरिक निवृत्ति के साथ आयुर्कृत्तिका की स्थिति आती है।

क्रियायोग जीवन से ऊलग केवल कथि मुनियों और मर्नायियों की ही साधना क्रिया नहीं है क्रिया योग से सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन को सम्पन्न कर सकता है उसके लिए उसे अपने जीवन में एक विशेष संतुलन बनाना पड़ता है क्रिया योग कुण्डलिनी जगण का विशिष्ट स्पृह है और जब क्रियायोग के मार्ग पर साधक आगे बढ़ता है तो उसकी देह में विद्या परिवर्तन होने लगते हैं कुण्डलिनी का एक-एक चक्र धीरे-धीरे जागत होता है वह साधक हर समय अपने देह और मन को स्वस्थ तरीका जा और उसमें अनुभव करने लगता है

क्रियायोग द्वास्त्रोदय विवेचन

तपस्या, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान - ये क्रियायोग

कहलाते हैं। वैसे क्रियायोग का शास्त्रिक अर्थ है - कर्म के आश्रय से योग का अभ्यास करना। शरीर, प्राण एवं इन्द्रिय आदि का उचित लप्त से अभ्यास द्वारा वशीकरण की तरफ कहा गया है। प्रणव आदि पवित्र भगवन्नाम के जप एवं उपनिषद् इत्यादि विवेकज्ञानोत्पादक सत्-शास्त्रों के निष्प्रियत अध्ययन को स्वाध्याय कहा गया है। एवं सब कर्मों के कर्मफल की ईश्वर को अर्पण करना ईश्वरप्रणिधान है। इन तीनों का सामृद्धिक अभिधान क्रियायोग या क्रमयोग है, जिसके लिए गीता में कहा गया है - योगः क्रमयु कौशलम्।

प्रथम परिच्छेद में योग प्रसि के मुख्य उपाय अभ्यास एवं वैराग्य के साथ विशिष्ट विधियों का विवाह है, किन्तु उनके आश्रय से समाधित चित्त-युक्त उगम अधिकारी ही योग साधना कर सकता है। मध्यम वर्ग के अधिकारी जिनका चित्त अमीर सांसारिक भोग-वासनाओं एवं राज-द्वेष आदि से चंचल एवं विकिस है, उन्हें उस रीति से योग की प्राप्ति दुर्लभ है। विकिस चित्त-युक्त जिज्ञासु क्लेश क्षीण करके अभ्यास-वैराग्य पूर्वक समाधि की भावना कर सके, वही क्रियायोग का विवाह है।

तपस्या शारीरिक, स्वाध्याय वाचिक एवं ईश्वरप्रणिधान मानसिक क्रियायोग है।

तत् - 'नातपस्विनो योगसिद्धयति' इस के अनुसार

अतपस्वी को योग सिद्ध नहीं होता। अनादिकालीन वलोश एवं कर्म के संस्कारों से संकुचित चित्त का मल तप के बिना विरल नहीं हो सकता। अतः क्रियायोग की प्राप्ति के लिए तप उसका प्रथम सोपान है, किन्तु यह तपश्चर्चर्या इस प्रकार की होनी चाहिए, जिससे शारीरिक शातु-वैषम्य से योग-साधना में विघ्न न पड़े अर्थात् शरीर तथा इन्द्रियों में आशा उत्पत्त न हो और मन प्रभव रहे—ऐसा तप योगेच्छा से सेव्य है। इस प्रकार शीत-ऊष्ण, क्षुधा-पिपासा, सुख-दुख, हर्ष-शोक एवं मान-अपमानादि समस्त दण्डों की वशा में विक्षेप शून्य स्वास्थ्यकारक एवं चित्त की निर्मलता हेतु तप सात्त्विक कहलाता है। सात्त्विक तप से ही योग-साधना में स्थिर प्रवृत्ति होती है। शारीरिक पीड़ा, व्याधि, इन्द्रिय-विकार एवं चित्तमालिन्य का उत्पादक तामसी तप योग में निन्दित है, क्योंकि व्याधि, शारीरिक पीड़ा आदि चित्त की प्रसन्नता एवं योगमार्ग के विघ्न हैं।

जिस प्रकार स्वर्ण को अग्नि में तपाने से भातु-मल रहित होकर रवांग स्वच्छ एवं शीम हो उठता है, उसी प्रकार तपश्चात्या की अग्नि में शरीर एवं इन्द्रियादि तम होकर रज एवं तम का मल नष्ट हो जाने से सत्त्वगुण के प्रकाश में दृढ़ि होती है।

तप शारीरिक, वातिक एवं मानसिक तीन प्रकार के होते हैं—

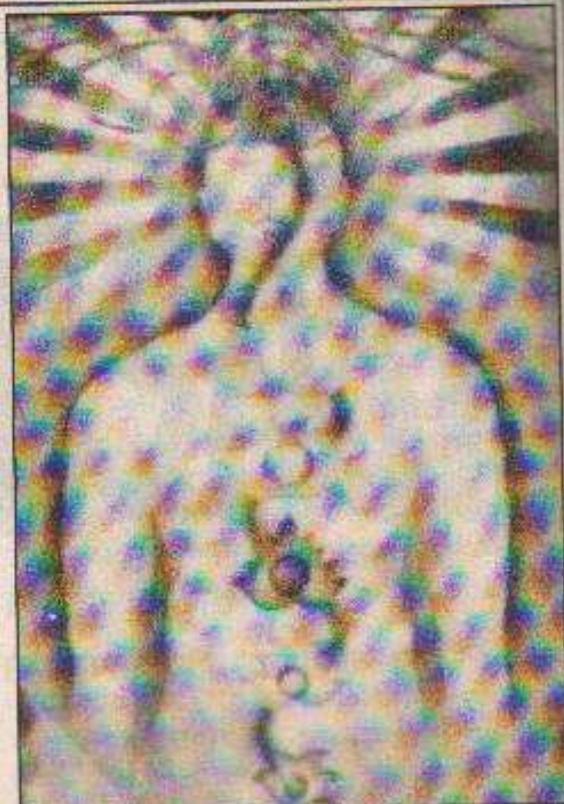
शारीरिक तप

देवता, बाह्यग, शुरुजन एवं ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्र, सरल, ब्रह्मचर्य एवं अहिंसापूर्ण शीवनयापन शारीरिक तप कहलाता है। आसन, प्राणायाम तथा शुद्ध सात्त्विक आहार-विहारादि शारीरिक तप के अन्तर्गत ही हैं। भगवद्गीता में इन्हें युक्त आहार-विहार कहा गया है। आहार-विहार युक्त साधक की योग साधना दुखनाशक होती है—

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्ट्यं कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखात्॥

युक्तहार से तात्पर्य शुद्ध, सात्त्विक योगोपयोगी एवं परिमित भोजन से है। योगाभ्यासी को आहार के विषय में पूर्ण सचेत रहना चाहिए, क्योंकि अन्न का शरीर एवं मन पर प्रकृष्ट प्रभाव पड़ता है। अन्न सात्त्विक एवं पवित्र साधनों से अर्जित होना चाहिए। स्वाद के वशीभूत न होकर, शरीर में आसक्ति एवं ममता त्यागपूर्वक, शरीर एवं चित्त को केवल भजन कार्य में उपयोगी बनाने वाले स्निग्ध, मधुर, प्रिय एवं क्षुधा-परिमाण



के चतुर्थ भाग से न्यून आहार करना युक्ताहार या मिताहार कहलाता है। मिताहार का विशेष विवरण हठयोग के ग्रन्थों में दृष्टव्य है।

युक्त विहार

अत्यन्त वकान की उत्पत्ति से भजन में विव्वकारक लम्बी एवं कठिन यात्रा वर्जित है। चलना-फिरना बिलकुल बंद कर देने से भी तमस्य आलस्य एवं प्रगाढ़ का आविर्भाव होता है। वे भजन में बाधक हैं। अतः घूमने फिरने का कार्य इन्हीं मात्रा में होना चाहिए, जिससे शारीर स्वस्थ एवं प्रसन्न रहे। इससे साधना सफलतापूर्वक होता है।

युक्त चेष्टा

नित्य नियमित कर्तव्य एवं नियत सत्कर्मों को करते रहना तथा अधिक शारीरिक श्रम न करना एवं कर्तव्य त्याग न करना युक्त चेष्टा है।

युक्त स्वप्नावबोध

आवश्यकता से अधिक या न्यून मात्रा में न सोना युक्तस्वप्नावबोध है। तमवृद्धि बचाने के लिए रात्रि में उचित एवं चंत्र विज्ञान '50' ४८

वर्णनाण से अधिक नहीं सोना चाहिए। निद्रा को ऋमिक अल्प करना चाहिए (स्वास्थ्य आदि पर लक्ष्य रखकर), कृच्छ, चन्द्रायण आदि उग्र तप साधारणतया योग में वर्जित हैं। तप का सारबान विवरण गीता ६३, ३-६ में दृष्टव्य है।

आवश्यकतानुसार केवल सत्त्व, प्रिय एवं सबके व्यायोम्य सम्मानपूर्ण वाणी में व्यवहार करना वाचिक तप है। वाणी को संयत रखने की दृष्टि से प्रथमपूर्वक स्त्रीह में एक दिन का मौनव्रत रखना प्रशस्त है।

मानसिक तप

मन का संयम मानसिक तप है। हिंसात्मक विनाश भावनाओं को तथा अपवित्र विचारों को मन से नूर करने का प्रथम करना तथा ऐंट्री, कस्तु, मुद्रिता आदि शुद्ध, पवित्र भावों को मन में धारण करना मानसिक तप है।

शरीर एवं हिन्दीयों को अपनी इच्छानुसार कार्य न करने देकर अपने वश में रखना ही तपस्या है।

स्वाध्याय

स्वाध्याय से तात्पर्य भगवान के पवित्र प्रणव आदि नामों तथा गायत्री आदि मंत्रों के जप तथा उपनिषद, गीता आदि मोक्ष शास्त्रों के अध्ययन से है। इससे भी वृनिनिरोध होता है तथा योगसाधन में श्रद्धा होती है।

ईश्वरप्रणिधान

ईश्वरप्रणिधान भी योग का साधन है। मनसा, वाचा, कर्मणा जो कुछ भी कर्म करे, उन सबको ईश्वर को अर्पित कर देना ईश्वरप्रणिधान है। जैसा कि निम्न श्लोक में कहा गया है—
कामतोऽकामतो वायि व्यत्करोमि शुभाशु भम् ।
तत्त्वर्व त्वरि दद्वयन्त त्वत्प्रवृत्तः करोम्यहं ॥

अर्थात्, फल की इच्छा से या निष्क्राम भाव से जो भी शुभ या अशुभ कर्म में करता हूँ, वह सब मैं आपको अर्पित करता हूँ, क्योंकि (हे अन्तर्यामी परमेश्वर) मैं आपके द्वारा प्रेरित होकर कर्म करता हूँ, अर्थात् इसमें मेरापन कुछ नहीं है।

अथवा ईश्वरप्रणिधान का दूसरा अर्थ फल प्राप्ति को इच्छा के परित्यागपूर्वक कर्मों का अनुष्ठान है। जैसा कि गीता में भगवान ने कहा है—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा क्लेषु कवचत् ।
मा कर्मफलहेतुभ् मा ते सद्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

वस्तुतः साधनपाद में मध्यम अधिकारियों के हेतु अष्टांग योग के साधनों का विधान है। तप, स्वाध्याय एवं

क्रिया योग जीवन का वरदान है, इससे शरीर में स्थित सभी ग्रथियां जाग्रत हो जाती हैं, और उसका पूरा शरीर चैतन्य एवं दिव्य बन जाता है, जिससे वह पूर्णता की ओर तेजी से अग्रसर होने लगता है।

क्रिया योग के द्वारा व्यक्ति अपने शरीर में सूक्ष्म शरीर निकाल कर पूरे संसार में विचरण कर सकता है, पूर्व जन्मों को देख सकता है।

ईश्वरप्रणिधान तो ब्रह्ममाण पांचों नियमों के ही अन्तिम तीन भाग है, किंतु श्वावहारिक जीवन को शुद्ध एवं सात्त्विक बनाने में ये विशेष रूप से सहायक हैं। इनसे चित्त शुद्ध एवं निर्मल होकर अष्टांगयोग सुकर हो जाता है।

तप से शरीर, वाणी एवं अन्तःकरण की शुद्धि होती है। स्वाध्याय से तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति एवं चित्त की एकाशता का सम्पादन होता है। ईश्वरप्रणिधान से कर्मों में कामना एवं कानूनक भूमि अनासक्ति तथा ईश्वर की कृपा उपलब्ध होती है। इसी से इन्हें क्रियायोग नाम देकर अष्टांग योग के पूर्व अनुष्ठान करने को बनाया गया है। वैसे तप— स्वाध्याय-क्रियायोग का व्यापक अर्थ लेने पर योग के जाठों अंग इन्हीं में अन्तर्भूत हो सकते हैं।

वर्तमान जीवन और क्रियायोग

वर्तमान जीवन में क्रियायोग की प्रथम स्थिति तक पहुँचने के लिए धारणा, ध्यान, त्राटक, आवश्यक है और जब वह अपने दैनिक जीवन में इन तीनों स्थितियों का अभ्यास प्रारम्भ करता है तो वह क्रिया योग की भाव भूमि बनाता है।

धारणा

प्राणायाम, आसन आदि के द्वारा अपने चित्त को स्थिर करने की क्रिया को धारणा कहते हैं, इसमें प्राणायाम महत्वपूर्ण है।

यह सामान्य नियम है कि एक स्वरस्य मनुष्य

स्वाभाविक रूप से एक मिनट में पन्द्रह बार श्वास लेता है, इस श्वास लेने की क्रिया के चार क्रम होते हैं।

१. श्वास के भीतर जाने को पूरक कहते हैं।

२. श्वास को भीतर रोकने को कुण्डक कहते हैं।

३. श्वास को बाहर निकालने को रेचक कहते हैं।

४. श्वास को बाहर रोकने को विराम कहते हैं।

इस प्रकार जब साधक श्वास-प्रश्वास की गति को अपने ब्रह्म ने कर लेता है, तो शरीर के अन्दर प्रवाहित होने वाली प्राणों की सारी सुकृत गतियाँ उसके वर्षीय भूत हो जाती हैं, और साधक अद्भुत कल्पनातीत दृश्यों को देखने में समर्थ हो पाता है, इसले केवल उसकी आयु ही नहीं बढ़ती, अपितु वह जब तक चाहता है, तब तक जीवित रहता है, इससे कुण्डलिनी जागत होने लगती है तथा मरिस्त्रक विचार शून्य हो कर एकस्थ हो जाता है चंचल मन वर्षीय भूत होने लगता है।

ध्यान

क्रिया योग का दूसरा प्रारम्भिक चरण ध्यान है, जब अक्षिं आसन प्राणायाम आदि के द्वारा धारणा में सफल हो जाता है, तब वह ध्यान की ओर बढ़ता है किसी भी विषय या बिन्दु पर दिमाग को केन्द्रित कर देने की क्रिया की ध्यान कहते हैं।

ध्यान के लिए पूर्ण रूप से शान्त और एकान्त स्थान होना चाहिए, शान्त और एकान्त का तात्पर्य है, किसी प्रकार का कोलाहल न हो, ध्यान में विघ्न पैदा करने वाला कोई कारण उत्पन्न न होता हो, तथा स्वच्छ वातावरण हो, इसके लिए जंगल, नदी का किनारा, समुद्र तट या घर का कोई एकान्त स्थान होना चाहिए।

आटक

आटक करने के लिए अपने सामने दीवार पर या कागज पर एक छोटा सा लाल बिन्दु लगा देना चाहिए और बिन्दु पलक द्वापकाये उसे अपलक देखते रहने की क्रिया को आटक कहते हैं, ब्रह्मन करके साधक को लगभग ३२ मिनट का आटक करने का चाहिए।

आटक करने से मन सभी विषयों से हट कर एकाग्र, शांत और स्थिर हो जाता है, जब मन चंचल होता है, तो तरह तरह के कुविचार मनुष्य को हेर लेते हैं ऐसी हालत में आटक के द्वारा ही ध्यान प्राप्त कर इन सभी कुविचरों से मन को हटाया जा सकता है, दिमाग को विचार शून्य बनाया जा सकता

है, और पूर्ण रूप से ध्यान करने पर साधक का द्वादश पवित्र, दिव्य और निर्मल हो जाता है, इससे उसे सभी प्रकार के दुर्घटों और तनावों से मुक्ति मिल जाती है।

इस प्रकार का आटक करने से पूरे शरीर में हलचल होने लगती है, और शरीर के अन्दर स्थित मूलाधार आदि चक्र जागत होने लगते हैं।

समाधि

मन को सभी प्रकार के विषयों से हटा कर आटक और ध्यान के द्वारा जब पूर्णतः एकाग्र कर दिया जाता है तो उसे समाधि कहते हैं समाधि में साधक को यह मान नहीं रहता कि मैं ध्यान कर रहा हूं, वह अपने इष्ट के प्रति एकाकार हो जाता है, और उसे केवल अपने ध्येय का ही मान होता है, इसी को समाधि कहते हैं, जब साधक समाधि अवस्था में पहुंच जाता है तो उसके चेहरे के चारों ओर प्रकाश का आभा मंडल बन जाता है।

क्रियायोग के दो प्रयोजन हैं – समाधि की भावना करना एवं कलेशों को क्षीण करना।

क्रियायोग से अशुद्धि का क्षय होता है। समस्त अन्तबहु इन्द्रियों की राजस चंचलता एवं तामस जड़ता ही उसकी अशुद्धि है। यही अशुद्धि कलेशों की प्रबल अवस्था है। अतः अशुद्धि का आवरण हटने से ही कलेश क्षीण होते हैं। कलेश क्षीण होने से समाधि की और अभिमुख होता है अर्थात् समाधि की भावना होती है।

शंका हो सकती है, कि यदि क्रियायोग से कलेश क्षीण हो सकते हैं, तो विवेकरूप्याति व्यर्थ है अथवा प्रसंख्यानानि कलेशों को दग्ध करने में समर्थ होता है, तो क्रियायोग से कलेशों का तनुकरण व्यर्थ है।

इसका समाधान यह है, कि क्रियायोग से कलेशों को क्षीण किये बिना प्रसंख्यानानि रूप विवेकरूप्याति उत्पन्न नहीं हो सकती, क्योंकि प्रबल एवं विरोधी कलेशों से सम्बद्ध चित्त विवेकरूप्याति उत्पन्न करने में असमर्थ है। क्रियायोग के अनुष्ठान से चित्त अभ्यास एवं वैराग्य से क्रमग्राम सम्प्रशात समाधि का उदय होता है। सम्प्रशात समाधि के अभ्यास की दृढ़ता से उसकी अन्तिम अवस्था में विवेकरूप्याति का उदय होता है। क्षीणकृत कलेश प्रसंख्यानानि के द्वारा भृष्टवीजवत् उत्पादकशक्ति शून्य बनते हैं। तब परवैराग्यजन्य संस्कारों की वृद्धता से चित्त का विवेकरूप्याति रूप अधिकार भी समाप्त होकर समाधि का उदय होता है।

सुमंगलकारक सर्वकामपूलप्रद सर्व विद्याहर्ता

ଭାବାମ୍ବାଦି



- * अणपति विट्ठनहर्ता व ऋद्धि क्रिद्धि प्रदाता है
 - * अणपति कभी देवों में प्रथम पूज्य है
 - * सब प्रकाश के मंगल कार्यों में अणपति पूजन आवश्यक है
 - * द्वित और द्वितीय की बाधाना अणेक बाधाना है
 - * सबसर्वती और लक्ष्मी दोनों की क्रिद्धि अणपति बाधाना के ही कंभट है

आङ्गुये, सभी साधक गणपति साधना को
शिव-माल श्रावण मास में सम्पन्न करें।

जो ज्ञान तथा आनन्द के स्वरूप है, निर्मल स्फटिक तुल्यजिनकी आकृति है, जो समस्त विद्याओं के परम आधार है, उन हयग्रीव गणेश की मैं उपसना करता हूँ, जो आदि ओंकार है, वेद की ऋचाएं भी जिनकी स्तुति करती हैं, जिनके सिर पर अर्क चन्द्र शोभायमान है, समस्त देवता जिनके चरणों में नवासनक है, उन श्री गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

श्री गणेश आदि स्वरूप, पूजा कल्पाणकारी, देवताओं के भी देवता माने गये हैं, जिनकी उपासना एवं पूजा का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है, सभी प्रकार के पूजनों में प्रथम पूजन का अधिकार गणपति का ही माना गया है, इसके पीछे दोस शास्त्रीय आधार हैं, किसी भी कार्य की पर्ण रूप से सिद्ध करने

ज्ञानाग्रन्थमध्यं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयद्वीषमुपास्महे ॥
अंगोकापामाध्यं प्रवदन्ति संतो याचः क्षुतीजामरिद्युग्मान्ति ।
जपजाननं देवपणामन्ताडिषि भजेऽनुभवेन्द्रकापावत्तसम् ॥

के लिए समुचित प्रयत्न बरना पड़ता है, लेकिन कई बार यही प्रकार के प्रयत्नों की पराक्रांत होने पर भी ऐसे नीके पर कोई न कोई बाधा आ जाती है, इस प्रकार की बाधा को हटाने के लिए, जिससे कार्य निविष्ट रूप से पूर्ण हो जाय, और जैसे-हैसे पूरा न होकर जिस सफलता के साथ कार्य पूरा करने की

इच्छा है उसी रूप में कार्य पूरा हो, इसके लिए ही गणपति पूजन विधान निर्धारित किया गया है।

गणेश पूजा ही वर्णों ?

प्रतिमा और जान की भी एक सीमा अवश्य होती है, व्यक्ति अपने प्रवल्लों से किसी भी कार्य को श्रेष्ठतम् रूप से पूर्ण करते हुए उत्तम पक्ष की ओर विचार करता है, लेकिन उसकी बुद्धि एक सीमा के आगे नहीं दौड़ पाती है, बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती है, और यही मूल कारण है कि हमारे शास्त्रों में पूजा, साधना उपासना को विशेष महत्व दिया गया है।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु, और भद्रेश द्वारा सम्पादित की जाती है, लेकिन सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे, और विष्णु न आए – यह भी गणेश के ही जिम्मे है, विष्णुकर्ता और विष्णु द्वारा दोनों ही गणेश हैं, आस्तीनी प्रकृति के अभक्तों के लिए गणेश विष्णुकर्ता हैं, तो उनकी पूजा उपासना करने वाले भक्तों के लिए विष्णुहर्ता और कृष्ण-सिंहि के प्रवाता हैं, इसीलिए श्री गणेश को सर्वविष्टीहरण, सर्वकामफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद और सुमंगलमंगल कहा गया है।

सभी प्रकार के देवता विभिन्न शक्तियों से सम्पन्न हैं, लोकन विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट रूप की सम्पन्न देवताओं का स्मरण, पूजन, साधना सम्पन्न करनी पड़ती है, इसीलिए मैं किसी भी कार्य को निविर्धन, पूर्ण फलयुक्त, मंगलमय रूप में पूर्ण करने हेतु भी गणपति का पूजन किया जाता है।

गणेश का स्वरूप शक्ति और शिवतत्व का साकार स्वरूप है, और इन दोनों तत्त्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है, गणेश शब्द की व्याख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है, गणेश का 'ग' मन के द्वारा, बुद्धि के द्वारा ग्रहण करने योग्य, वर्णन करने योग्य सम्पूर्ण धीर्तिक जगत को स्पष्ट करता है, और 'ग' मन, बुद्धि और वाणी से परे, ब्रह्म विद्या स्वरूप परमात्मा को स्पष्ट करता है, और इन दोनों के इशा अर्थात् स्वामी गणेश कहे गये हैं।

श्री गणेश के द्वादश नाम

सुमुखश्वेतवन्तरश्च कविलो गजकर्णकः ।
सम्बोदरश्च विकटो विज्ञनाशो विजायकः ॥
धूमकेतुर्याध्यक्षो भालचन्द्रो गणराजनः ।
द्वादशेतावि नामानि यः पठेच्छुणु द्वादशिः ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रतेशे निर्जने तथा ।

ॐ 'ज्वल' 2010) मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '56'



और पूजा
और सि
वाली है
है, वहाँ
साधना

करती है
उसके १
पत्नी दो
अपने नि
साधना

कर, उन
साधने १
फिर न
पौला व
थाली वे
एक-एक
गणपति
है।) प
सिद्ध प

बनाकर
और द
बने हुए
पर शु

संग्रामे संकटे बैंब विद्वन्तस्त्व न जावते ॥

यह श्लोक गणेश पूजन और उनकी साधना उपासना के महत्व को विशेष रूप से स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य यह है, कि व्यक्ति विद्या प्रारम्भ करते समय, विवाह के समय, नगर में अथवा नये भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाढ़र जाने समय, संग्राम अर्थात् शत्रु और विपत्ति के समय, यदि श्री गणेश जी के इन बारह नामों का स्मरण करता है, तो उसकी उद्देश्य की पूर्ति में अथवा कार्य की पूर्णता में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता, गणेश जी के ये बारह नाम १ सुमुख, २ एकदन्त, ३ कपिल, ४ नजकर्ण, ५ लम्बोदर, ६ विकट, ७ विघ्ननाशक, ८ विनायक, ९ धूमकेतु, १० गणाध्यक्ष, ११ भालचन्द्र, और १२ गजानन हैं।

इनमें से प्रत्येक नाम का एक विशेष अर्थ है, और विशेष भाव है, संक्षिप्त में यही कहना उचित है, कि साधक को अपने पूजा कार्य में गणेश की पूजा एवं इन नामों के जप को एक निश्चित स्थान अवश्य देना चाहिए।

मंत्र साधना और तत्र साधना का मार्ग गुरु गम्य माना गया है, जो साधक गुरु परम्परा से गणपति सप्तर्णों की विद्या प्राप्त करते हैं, उन्हें ही उपासना में प्रवेश का अधिकार है।

Justice Reigned

सर्वमंगल गणपति तो स्वयं विद्वानों को दूर करने वाले और पूर्णता देने वाले देवता हैं, और उनकी दोनों पदनियां ऋषि और रिक्षि हैं, जो सम्पूर्ण वैभव, यश, प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली हैं। जिस घर में इन दोनों महादेवियों की स्थापना होती है, वहाँ स्वयं गणपति साक्षात् स्वरूप में उपस्थित रहते हैं।

साधना प्रयोग

यह एक दिन की साधना है। स्त्रियां यदि साधना करती हों, तो सुबह स्नान कर अपने बालों को धो लें और उसके बाद ही साधना में भाग लें, यदि संभव हो तो पति-पत्नी दोनों ही इस साधना में शाम ले सकते हैं। कुवारी कन्याएं अपने सिर के बालों को धोकर योग्य वर की प्राप्ति के लिए इस साधना को सम्पूर्ण कर सकती हैं।

सर्वथा शुक्र और पवित्र हो कर, पीले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुह कर पीले आसन पर बैठ जाएं, सामने यदि संभव हो तो गणेश जी का चित्र स्थापित कर दें, फिर लकड़ी का बाजोट अपने सामने बिछावें और उस पर पीला कपड़ा बिछा दें, बाजोट पर एक थाली रखें, इसके बाद थाली के मध्य में एक स्वस्तिक बनावें, और उसके चारों तरफ-एक-एक स्वस्तिक केसर से अंकित करें।

इसके बाद शणपति पंचानन को स्थापना करें, (इसमें गणपति विश्वाह, ऋषि गुटिका, सिंहि गुटिका, शुभ फल होते हैं।) पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि ये सभी मन्-सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित हों।

इसके बाद मध्य के स्वस्तिक पर चावलों की ढेरी बनाकर गणपति को स्थापित करें, गणपति के बांई ओर कद्धि और दाहिनी ओर रिद्धि को स्थापित करें, गणपति के ऊपर बने हुए स्वस्तिक पर लाभ और नीचे की ओर बने हुए स्वस्तिक पर श्रभ की स्थापना करें, चावलों की ढेरी बनाकर उसके

ऊपर इन सभी सामग्री को अनाये हुए ब्रूम से स्थापित कर दें।

इसके बाद सामने पांच धो के दीपक और पांच अंगरबत्तियाँ जलावें। पहले से ही १०५ पुष्प मंगवाकर रख लेने चाहिए, पूरे परिवार के लिए १०५ पुष्प प्रयोगि हैं, पर एक बार पुष्प चढ़ाने के बाद उसी पुष्प को दोबारा नहीं चढ़ाया जा सकता।

इसके बाद निम्न मंत्रों से प्रत्येक विश्राह पर २१-२१ पुष्प चढ़ावें —

१. जणयसि - उमे जन जणयत्वे नमः
इस मंत्र से भगवान गणेश पर २१ पुष्प चढ़ावें।
 २. क्रद्धि - उमे हेम वर्णायि क्रद्धुवे नमः
इस मंत्र से क्रक्षि पर २१ पुष्प चढ़ावें।
 ३. सिद्धि - उमे सर्वज्ञात्मभूतिवायि सिद्धुवे नमः
इस मंत्र से सिद्धि पर २१ पुष्प चढ़ावें।
 ४. लाभ - उमे सौभाग्यपदाय धन-धान्य युत्काश्य
लाभाय नमः
इस मंत्र से लाभ पर २१ पुष्प चढ़ावें।
 ५. शुभ - उमे पूर्णायि पूर्णमवाय शुभाय नमः
इस मंत्र से शुभ पर २१ पुष्प चढ़ावें।

इस प्रकार पांचों पर पुष्प चढ़ा कर, फिर जल की छिड़क स्नान कराये और सभी का केसर से तिलक करें, इसके बाद सभी को एक साथ लड्डू का भोग लगायें और निम्न स्तोत्र का १०५ बार पाठ करें।

कामेश्वरी महालक्ष्मी ब्रह्माण्ड वश कादिणीम् ।
 सिद्धैश्वरी सिद्धिवात्री शत्रूणा भव दायिनीम् ॥
 अद्वि देवी पीत-वस्त्रां उथत-भानु सम-प्रसाम् ।
 कुल देवी लग्नमित्या सर्व-काम-प्रवाण शिवाम् ॥
 सिद्धि-सूरेण देवी त्वां विजयु ग्राण-बल्लभाम् ।
 काली-रूप धूतां उग्रां रक्त-बीज-निपातिनीम् ॥
 विद्या रूप धरां पुण्यां शुभ लाभ प्रद स्थिताम् ।
 दुर्जा-रूप-धरा देवो देत्य-दर्प-विजाशिळीम् ॥
 मूषक वाहना रूढां सिंह-वाहन-संयुताम् ।
 अदि सिद्धि, महादेवि पूर्ण सौभाग्यं देहि से ॥

इस स्तोत्र के १०५ पाठ करने आवश्यक हैं, यदि एक ही बार में यह सम्भव न हो सके, तो साधक २१ पाठ के बाद पांच-सात मिनट का विश्राम कर सकता है।

जब पाठ समाप्त हो जाए, तो घर में शुहू से बनी हुई मिठाई गोणश पंचानन को भोग लगायें, और आरती करें। फिर परे परिवार के साथ बैठ कर भोजन करें।

कामता सिद्धि गणपति साधना

साधना की वृजित से अलग-अलग रूपों में गणपति का स्मरण और चिन्तन विभिन्न फलों की प्राप्ति में सहायक है, तंत्रसार में गणेश के भिन्न-भिन्न ध्यान का फल इस प्रकार है-

पांच समरेत सत्तमभूतकार्य । एवं
दृश्यार्थ मंत्री हृषीरण समरेत तम्
कृष्ण समरेत्तमारण कर्मणीशम्
उच्चारेत् धूमजिम् समरेत तम् ॥
बन्धु कपुष्णाविनिम् च कृष्ण
समरेत बलार्थि किल पुष्टिकार्य ।
समरेत धन्तार्थी हरिवर्णमेत
मुक्तो च शुश्वरं मनुवित समरेत तम्
एवं प्रकारेण जग्नि त्रिकार्यं
ध्यानार्थं किल सिद्धिलुतो भवेत् सः ॥

अर्थात् साधक को चाहिए, कि वे स्नामन कार्य में गणेश जी के पीत कांति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वर्णकरण आदि कार्यों में गणेश जी के असण कांति वाले स्वरूप का चिन्तन अनुकूल रहता है। भारण कार्य में कृष्ण कान्ति वाले गणेश जी का ध्यान फलदायक माना गया है, इसी प्रकार उच्चारण कार्य में धूमज्वर्ण वाले गणपति का स्मरण करना चाहिए, आकर्षण कार्य में बन्धुक पुष्प के समान लाल वर्ण वाले गणपति का चिन्तन करना चाहिए। बल एवं पुष्टि कार्य के लिये शान्त गणपति का ध्यान अनुकूल माना गया है। धन प्राप्ति के इच्छुक साधकों को हरित वर्ण वाले गणपति का ध्यान करना चाहिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिये शुक्ल वर्ण वाले गणपति का ध्यान पूर्ण फलदायक होता माना गया है।

गणेश मंत्र साधना

गणपति उपनिषद के अनुसार गणपति का सर्वत्रिष्ठ और सर्वप्रिय मंत्र निम्न है-

॥ उमे जग्निपतये नमः ॥

साधक या गृहस्थ व्यक्ति को चाहिए कि वह इस मंत्र का जप निरन्तर करता रहे, तोते समय भी इस मंत्र का सतत जप किया जा सकता है, यह मंत्र अपूर्व सिद्धि एवं फलदायक है।

द्वात्रिशाखर मंत्र

यह मंत्र अन्यत ही अनुकूल और तुरन्त प्रभाव देने वाला माना गया है। ब्रह्मवैष्णव पुराण में बताया गया है, कि श्री गणेश जी को यह मंत्र सबसे अधिक प्रिय है-

मंत्र

॥ श्री हौं वलीं गणेशवराय ब्रह्मस्वस्पदाय चारवे सर्व सिद्धि
प्रदाय विष्वेशाय नमो नमः ॥

श्री गणेश जी के इस मंत्र में ३२ जट्ठर हैं। यह सन्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा शर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का शीघ्र ही फलदायक मंत्र है। इसके पांच लाख जप से मंत्र सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इस मंत्र के सिद्धि होने पर घर में विध्वन नहीं आते, उसे असाधारण क्षेत्र में पूर्ण सम्पन्नता तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इस मंत्र की साधना में विशेष विधि

विधान की कावश्यकता नहीं है। नित्य २१ मात्राएं, फेरे पर इतना ध्यान रहे, कि यह इस तब तक नियमित रूप से चलता रहे जब तक पांच लाख मंत्र जप पूर्ण न हो जाय। मंत्र जप करते समय सामने विजय गणपति का विश्रह हो तो विशेष फलदायक होता है।

घोडशाधारी मंत्र

यह मंत्र भी विशेष महत्वपूर्ण माना गया है, इसकी साधना भी ऊपर लिखे अनुसार ही सम्पन्न होती है। ब्रह्मवैष्णव पुराण में पांच लाख मंत्र जप बताया गया है, जिससे कि जीवन में अपने लक्ष्य को तुरन्त प्राप्त करने में साधक सफलता प्राप्त कर लेता है।

मंत्र

॥ उमे जग्निपतये विष्वेशायिनो द्वाहार ॥

ऊपर लिखे महागणपति से सम्बन्धित कुछ मंत्र व साधनाएं स्पष्ट की हैं, जो कि प्रत्येक गृहस्थ अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर सकता है, ये साधनाएं पुरुष और स्त्री समान रूप से सम्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने दो मित्रों को पवित्रा सवस्य बनाय तथा कार्ड कं ६ पर अपने दोनों मित्र का पते लिखकर भेजे कार्ड मिलने पर ८३/- की बी. पी. पी. डाक आपको मंत्र सिद्ध प्राप्ति दिया जाएगी। कामना सिद्धि गणपति विश्रह देने तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्रा भेजी जाएगी।

आवण मास्य गणेश साधना

तंत्र दोष बाधा निवारण हेतु

उच्छिष्ट गणपति साधना

किसी घर या किसी व्यक्ति के ऊपर जब भी तंत्र बाधा या थोड़ा होता है, तो उस व्यक्ति के जीवन में सर्वनाशकीय दशा सामने आती है। उससे प्रभावित व्यक्ति चाहे वह लखपति या करोड़पति ही क्यों न हो दीन-हीन और दिव्र बन जाता है। घर में तमाचा, कलह, विवाद और अशान्ति का वासावरण बना रहता है। मान-प्रतिष्ठा, यथा सभी धूल में निल जाती है। आज के युग में आप के स्वरूप जीवन से हृद्य करने वाले शत्रु, मित्र या आस-पास के रहने वाले लोग कभी भी थोड़े से मन-नुटाव को कारण बना कर आप पर तंत्र प्रयोग कर सकते हैं। ये तांत्रिक प्रयोग आप के जीवन को तहस-नहस कर देने के लिए पर्याप्त होते हैं और आपका हस्ता-खेलता जीवन बरबाद होकर रह जाता है।

इसके निवारण के लिए आप उच्छिष्ट गणपति का प्रयोग करें। इस प्रयोग के माध्यम से आप तंत्र बाधा से बच सकते हैं।

आप ग्रातः स्नान आवि नित्य क्रिया के बाद अपने पूजा स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठें। धूप और दीप जला लें। अपने सामने पंचपात्र में जल भी ले लें। इन सभी सामग्रियों को आप चौको पर रखें जिस पर लाल वस्त्र बिछा हुआ हो। पहले स्नान, तिलक, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प

**उच्छिष्ट गणपति का लाटपर्यहृष्ट खड़ी एव
छोटी मुद्रा में दानुसाहारक रूप में गणपति,
सामान्यता बैठी छोटी मुद्रा के गणपति की
पूजा की जाती है लेकिन दानुसाहारक साधना
में उच्छिष्ट रूपरूप की साधना की जाती
है। क्योंकि गणपति का यह रूप
खिलेहताराय अरथात् विद्वन्हुर्ता दृष्टवर
का रूप है। साधक भी यह साधना छोटी
मुद्रा में होठता का भाव लिए सम्पूर्ण करें।**

अ. 'जून' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '59'

त्वां विद्वन्शत्रुदत्तनेति च सुन्दरेति ।
भक्त ग्रियेति सुरवदेति वर प्रदेति
विद्या प्रदेत्यवहरेति च वे सुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।

आदि से गुरु चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। उसके बाद गुरु मंत्र की दो माला मंत्र जप करें।

गणपति पूजन

फिर गुरु चित्र के समाने किसी प्लेट पर कुकुम या केसर से स्वस्तिक चिह्न बनाकर उच्छिष्ट गणपति यंत्र को स्थापित करें।

धोनीं हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

ॐ	जगत्तत्त्वं	भूतजग्नाधिक्षेदित्तं
क्षयित्य	जम्बू	फलचरणं
उमस्युतं		शोकविज्ञाशकारकं
मरात्मि	दिव्योऽवर	पादं पञ्चाद्रम् ॥

फिर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें—

ॐ गं संजस्तमूर्तये नमः स्नानं समर्पयामि ।
ॐ गं एकदशतावय नमः तिसकं समर्पयामि ।
ॐ गं सुसुखावय नमः अक्षततात्र समर्पयामि ।
ॐ गं तस्योदशतावय नमः धूपं दीपं आग्नापद्मामि, वर्षयामि ।
ॐ गं विद्वन्शत्रुदत्तये नमः पुर्वं समर्पयामि ।

इसके बाद अक्षत और कुकुम मिलाकर निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर चढ़ाएं—

ॐ लं नमस्तत्त्वे नमः । ३५५ त्वमेव तत्त्वमसि ।
३५६ त्वमेव केवलं कत्तरिसि । ३५७ त्वमेव केवलं भत्तरिसि ।
३५८ त्वमेव केवलं हत्तरिसि । ३५९ गणाधिष्ठितये नमः ।

एक आचमनी जल यंत्र पर चढ़ाएं।

गणपति पूजन के बाद निम्न मंत्र का मूँगा माला से ५ माला मंत्र जप ११ दिन तक नियमित रूप से करें—

मंत्र

॥ ३५९ गं हुं तंत्र बाधा निवारणाय श्रीं गणेशाय स्वाहा ॥
प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र और माला को लाल वस्त्र में बांधकर किसी नदी या तालाब में डिसर्जित कर दें। यह प्रयोग ग्रातः ४.१० बजे से ६.४५ के बीच में पूर्ण कर लेना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट - 340/-

आयुर्वेद सूधा

गर्भ में लू लग जाना, भूख ठीक से न लगना, उल्टी, दरत सामान्य बात है। इनके उपचार के अतिरिक्त प्याज जैसी हर जगह मिलने वाली औषधि में और भी कई गुण विद्यमान हैं, जिन्हें प्रत्युत किया जा रहा है—

मंकाबिन : क्या आपको भूख बही लगती?

भूख न लगना अस्वस्य शरीर का संकेत है। भूख न लगने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे—कठज, व्यसन, कोई तन्त्री कीमारी, शारीरिक व्यायाम का अभाव आदि। यदि व्यायाम नहीं कर सकें, तो भोजन के पहले कुछ तेज गति से ठड़ल लें। पेट साफ हो, कठन न हो इसका ध्यान देना चाहिये। आगे भूख लगने के कुछ आजमावे सूच प्रस्तुत हैं—

१. सम्पादन की कलियों पर पिसी हुई सौंठ एवं काला नमक लपेट कर सप्ताह भर खाने से भूख में बुझि होती है।

२. एक गिलास पानी में एक नींबू का रस, एक चम्मच अदरक का रस और घोड़ा नमक मिलाकर पीने से कुछ दिनों में लाभ मिलता है।

३. येब का रस नित्य पीने से अच्छी भूख लगती है।

४. एक नींबू लेकर उसे चार भाग में विभक्त करते हुए चौरे लगाएं, नींबू के टुकड़े पूरी तरह से अलग न हों। नींबू के एक फांक में काली मिर्च, एक में सौंठ, एक में शक्कर, एक में नमक लगाकर रात्रि के समय ढक कर रख दें। सुबह तवे पर नींबू की गर्म कर चूसने से भूख में बुझि होगी।

५. प्याज, अदरक, नींबू रस, काला नमक, काली मिर्च, मुना जीरा, ४-५ लहसुन की कलियों, मुनी हींग (शुद्ध गधक भी मिलाये तो और भी लाभप्रद है) को पीस कर उसकी गोलियां बना लें। नित्य तीन बार दो-दो गोली चूस कर खायें।

प्याज स्थाने बही, यह आयुर्वेदिक औषधि है।

कई लोग प्याज-लहसुन को वर्जित व त्याज्य समझते हैं, परन्तु इसके पीछे स्पष्टीकरण नहीं है, हाँ यह अवश्य है कि ऐसा कर वे प्रकृतिप्रदत आरोग्यकारी पदार्थों के लाभ से विचित रह जाते हैं। गर्भ में प्याज शीतलता प्रदायक है, हृदय के लिये हानिकारक कॉलेस्ट्रोल को कम करने वाला है, बलकारक और वीर्यवर्धक है। अधिकतर लोग कच्चा प्याज

उसकी बदबू के कारण नहीं खाते। इसके लिये प्याज को काट कर उसमें घोड़ा नमक मिलाकर धोकर प्रयोग करें, इससे योद्धा दुर्गन्ध कम हो जाती है। प्याज को नींबू के रस में या दही में मिलाकर भी खा सकते हैं। मुह से प्याज की महक हटाने के लिये भोजन के बाद लींग या इलायची खायी जा सकती है।

प्याज छारा कुछ सामान्य उपचार

१. अनिद्रा — यदि शीत करता हो, तो प्याज को भूल कर/उचाल कर खायें। गर्भ का मौसम हो तो कच्चे प्याज को दही/नींबू के रस के साथ रोज भोजन के साथ लें, तली चीजों का सेवन कम कर दें। कुछ दिनों में अच्छी नींव आने लगेगी।

२. अतिसार (इस्त लगना) — इस रोग के लिये प्याज व दही के साथ चावल खायें। प्याज, नींबू, पोदीना एवं अदरक का रस निचोड़ कर उसमें सेवा नमक, मुना जीरा और शक्कर हालकर एक गिलास पेय बनायें। इस प्रकार से दिन में तीन बार पीने से एक दिन में ही लाभ नजर आयेगा।

३. कान का दर्द — प्याज व लहसुन को बराबर मात्रा में लेकर उसका रस निकाल लें। इस रस में इतना ही सरसों का तेल मिलाकर पका लें और फिर छान लें। ददि सम्मव हो तो उसमें योद्धा सी अफीम भी मिला दें (आवश्यक नहीं है) इस तेल का बूंदे कान में डालने से दर्द मुक्ति होती है।

४. कब्ज — कब्ज को सब रोगों की जड़ कहा जाया है। एक प्याज काट कर उसमें चार-पाँच लहसुन की कलियों मिलाएं, योद्धा काली मिर्च व काला नमक, व एक नींबू का रस निचोड़ कर दोनों समय इस प्रकार भोजन के साथ सेवन करें।

विशेष, कब्ज से मुक्ति के लिये नशीली चीजों का सेवन बढ़ कर देना चाहिये, जो भी भोजन करें यूब चबा-चबा कर करें। अधिक चाय या जर्दा भी कब्ज को बढ़ाता है। कब्ज से दूर होने के लिये भोजन ताजा करें, बासी नहीं और भोजन में अधिकाधिक दही या छाँड़ का प्रयोग करें। प्याज की सक्ती,

इरे पत्तों सहित, पालक व लाल टमाटर के साथ खाएं।

५. कोलेस्ट्रोल - अधिक तेल, धी आदि का प्रयोग करने से हृदय रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे हृदय गति कई बार मंद पड़ जाती है। एक प्याज की चार-पाँच लहसुन की कलियों के साथ सेथा नमक व नींबू डालकर दोनों समय भोजन के साथ लेना लाभकारी है।

हृदय रोगों के लिये एक अन्य प्रशीक्षित प्रयोग है। इसके लिये २० ग्राम प्याज का रस, १० ग्राम लहसुन का रस, २० ग्राम शहद, ५ ग्राम अंजुन की छाल के चूर्ण को मिला कर चाटें। (सम्पव हो तो थोड़ी मुक्तापिष्ठी भी मिला लें) कुछ दिन में शीघ्र लाभ होगा।

६. नक्सीर - अक्सर गर्मी के कारण नाक से खून बहने लगता है। इसे नक्सीर कहते हैं। इसके लिये प्याज के रस में फिटकरी का चूर्ण मिलाकर नाक में टपकावें। साथ ही वहाँ में प्याज मिलाकर भोजन के साथ खायें।

७. प्रग्नें - स्वन्नदेष, वीर्यपात आदि के उपचार के लिये पिसी हल्दी में दो गुना शहद और वस गुना मात्रा में प्याज का रस मिला कर रख दें। नित्य सुबह-शाम इस मिश्रण को थो-तीन चम्पच चाट लें। दो माह तक सेवन करने से परिणाम नजर आता है। इसके अतिरिक्त तेल, खटाई, तली वस्तुएं, चाय, पान, बीड़ी, जर्दा, व नशे का प्रयोग न करें। रात्रि की अपेक्षा भोजन सूर्यास्त के पहले-पहले ही कर लें और भोजन में कच्चे प्याज का प्रयोग अवश्य करें।

८. बाल झड़ना - इसके उपचार हेतु ५० ग्राम प्याज के रस में १० ग्राम आंवला चूर्ण, १० ग्राम बड़ेड़ा चूर्ण, १० ग्राम आम की गुठली का चूर्ण मिला लें। इसमें थोड़ा छाछ मिलाकर सिर में लगाएं। सुखने पर काली मिठी में छाछ मिलाकर सिर धोवें। बाद में बाली आंवला तेल सिर में लगायें।

९. मुहुंसे व झाई - नींबू का रस, प्याज का रस, मिलसरीन, हल्दी चूर्ण इन सबको दस-दस ग्राम लेकर पेस्ट बना लें। राता को सोते समय चेहरे पर मलें। प्रातः, मुँह धोकर चेहरे पर कपूर मिले हुए नारियल तेल को लगाएं, लाभ होगा।

१०. बायु - बायु के कारण शरीर में कई लोगों को वर्द रहता है। उपचार : प्याज का रस, लहसुन की कलों और अरण्डी का तेल बराबर मात्रा में लेकर उसकी चटनी बना लें। इसे हल्की आंच पर धून कर उसमें नमक, काली मिर्च, जीरा, हींग मिलाकर इस चटनी को दोनों समय भोजन के साथ लें।

११. वर्मन/उल्टी - कई बार भोजन ठीक से न पचने पर उल्टियां शुरू हो जाती हैं। उपचार : प्याज, नींबू, पोदीना,

अदरक का रस बराबर मात्रा में लेकर उसमें भुना जीरा, काली मिर्च, सेथा नमक मिलाकर दो बताशे (शक्कर के) के साथ रोगी को चटावें। उल्टी सुक जायेगी।

जर्मी में तरबूज भी साम्राज्यी है

१. नित्य एक जिलास तरबूज का रस पीने से वेशाक की जलन दूर होती है, आंतों को चिकनाई मिलती है, आंते सबल बनती हैं, जिससे कब्ज जैसे रोगों में राहत मिलती है।

२. तरबूज की शिकंजी पीलिया में आराम करती है।

३. तरबूज का अधिकाधिक सेवन करें तथा इसके बीजों को भी साथ ही घोट कर पीने से गुर्दे की पश्चरी दूर होती है, और मूत्र के नरिये टूट-टूट कर बाहर निकल जाती है।

४. खाली पेट तरबूज की बीजों का सेवन करने से मासिक धर्म की रुक्कावट दूर होती है।

बीजम अतु मेल का प्रकोप

गर्मी में तेज धूप व तापकम की अधिकता से लू (गर्म हवा) लग जाती है। इसमें शरीर का ताप बढ़ जाता है, प्यास अधिक लगने लगती है, मुँह चुखा रहता है, प्रबराहट दोनों लगती है, दस्त लग जाते हैं, सिर दर्द होने लगता है।

लू से बचाव - लू लगे ही नहीं इसके लिये गर्मी में बाहर जाले समय जेब में एक प्याज रखें और दोनों समय भोजन में कच्चा प्याज व पोदीना खाना चाहिये। घर से बाहर जाते समय खब यानी या छाछ पीकर जाना चाहिये।

लू लग जाने पर उपचार - यदि लू लग ही जाये तो रोगी पर निम्न उपचार किये जा सकते हैं -

१. चार कच्चे आम की पानी में उबालकर उसका रस निकाल कर उसका पना (शर्बत) बना लें। इसमें थोड़ा नमक, भुना जीरा, पिसा पोदीना मिलाकर पिला दें। लू का असर समाप्त हो जाता है, उल्टी भी बंद हो जाती है। आम व पोदीने के पने का नित्य सेवन करने से कमी लू नहीं लगती।

२. कटिवस्त्र के अलावा अतिरिक्त कपड़े निकाल दें। फिर पूरे शरीर पर पानी में कपड़ा भिंगो कर फिराये। शीतल व हवादार स्थान में लेट जायें, कूलर आदि हो तो अनुकूल है।

३. प्याज का रस हाथों की हृद्येलियों और पैरों के तलुओं पर मलें।

४. प्याज, पोदीने व नींबू के रस को नमक व शक्कर के साथ मिलाकर मिलाने से भी शरीर की क्षति पूर्ति होती है और यह जीवन रक्षक घोल की तरह कार्य करता है।

५. भूख लगने पर खिचड़ी के साथ वहाँ और नींबू युक्त प्याज के टुकड़े खाने को दें।

सामाया

ताईक तथा सर्वजन सामन्य के लिए समय के बे सभी रूप यहा प्रस्तुत है जो किसी भी शक्ति के जीवन में उत्तरीय अवनाति के कामण होते हैं तथा किन्हें जान कर आप सबय अपने लिए उत्तरीय का मार्ग प्रदर्शित कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को तीन फूलों में प्रस्तुत किया गया है - श्रेष्ठ, मध्यम और नीचा। जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये चाहे वह व्यापार से सन्बंधित हो, नौकरी से सम्बंधित हो,

घर में शुभ उत्सव से सम्बंधित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बंधित हो, आप इन श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपले भाग्य में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी लारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का

पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निन समय का उपयोग तो रुदा से निषिद्ध है, ल्योकि यदि बनते हुए कार्य का प्रारम्भ भूल वश भी निन समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है। अतः प्रत्यक्ष व्यक्ति को चाहिए, कि निन समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे।

* लिखे दिनांक 18 अ० तक ही लिख अवश्य का निर्णय प्रिष्ठे अंक में दिया जा चुका है। (लाइसेंस अप्रैल अ०, पैज 62)

दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (18, 25 जून 2, 9 जुलाई)	ब्रह्ममुहूर्त 5.12 से 8.24 तक दोपहर 11.36 से 2.48 तक शाय 3.36 से 4.24 तक साय 6.48 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	प्रातः 8.24 से 11.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक दोपहर 2.48 से 3.36 तक शाय 4.24 से 6.48 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक
सोमवार (19, 26 जून 3, 10 जुलाई)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 7.30 तक प्रातः 9.12 से 11.36 तक रात्रि 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	प्रातः 9.00 से 9.12 तक दोपहर 11.36 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 12.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक
तिथिवार (20, 27 जून 4, 11 जुलाई)	दोपहर 10.00 से 11.36 तक साय 4.30 से 6.00 तक साय 6.48 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 3.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 3.00 से 4.30 तक साय 6.00 से 6.48 तक
बुधवार (21, 28 जून 5, 12 जुलाई)	ब्रह्ममुहूर्त 5.12 से 8.00 तक प्रातः 6.48 से 10.00 तक दोपहर 2.48 से 5.12 तक साय 7.36 से 9.12 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक दोपहर 10.00 से 12.00 तक दोपहर 1.30 से 2.48 तक साय 6.00 से 7.36 तक रात्रि 9.12 से 12.24 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 12.00 से 1.30 तक साय 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
गुरुवार (22, 29 जून 6, 13 जुलाई)	प्रातः 6.00 से 7.36 तक दोपहर 12.00 से 11.36 तक साय 4.24 से 6.00 तक रात्रि 9.12 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 1.30 तक साय 6.00 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक
शुक्रवार (23, 30 जून 7, 14 जुलाई)	प्रातः 6.00 से 7.48 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 12.24 से 3.36 तक साय 7.36 से 9.12 तक रात्रि 10.48 से 11.36 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 7.36 तक दोपहर 10.00 से 12.24 तक साय 4.24 से 7.36 तक रात्रि 11.36 से 1.12 तक	दोपहर 10.30 से 12.00 तक दोपहर 3.36 से 4.24 तक रात्रि 9.12 से 10.48 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शनिवार (24 जून 1, 8, 15 जुलाई)	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 10.30 से 12.24 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	दोपहर 12.24 से 4.24 तक साय 6.48 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 10.30 तक साय 4.24 से 6.48 तक रात्रि 10.48 से 2.48 तक

वर्षाहु मनों नाठीं कृष्णाहु मिहिर कैदहु

किसी भी कार्य को प्राप्त करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में गंशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बायाएं तो उपस्थित वही हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्राप्ति किस प्रकार होगा, दिन की अमालि पर वह स्थित को तानावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय उपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं अच्छ युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके अमाल प्रस्तुत हैं, जो वराहमित्र के विविध इकाशित-अप्रकाशित दृश्यों से रंगकित हैं, जिन्हें यहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पत्ति करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

15 जून	निखिलेश्वरानन्द स्तवन के प्रथम पांच इलोकों का पाठ कर कार्य हेतु बाहर जाएँ।	30 जून	गोमती चक्र औं भाष्म लेकर बाहर जाएँ।
16 जून	नमक की पांच द्वेरियों बनाकर, पांचों पर पुष्प, अक्षत, कुंकुम चढ़ाकर जाएँ।	1 जुलाई	उड़द की बाल दान मेंदे, कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
17 जून	काला तिल दान में दे, कार्य में उपस्थित होने आली बांधाएं न्दून होंगी।	2 जुलाई	खदाक्ष माला को धारण कर कार्य हेतु बाहर जाएँ।
18 जून	प्राप्त, काल सूर्य देव को जल चढ़ाकर ही बाहर जाएँ।	3 जुलाई	अपने मस्तक पर प्राप्त ही अष्टगंध का तिलक गुरु मन्त्र बोलते हुए लगायें।
19 जून	आज दिवस पर्यन्त यथा सम्भव अधिक से अधिक गुरु मंत्र का जप करें। सम्भव हो तो दुर्लभोपनिषद कैसेट का श्रवण करें।	4 जुलाई	मठी भर सफेद सरसों लेकर, अपने शिर के चारों ओर तीन बार युग्माकर, किसी दीधे में हाल कर कार्य पर जाने से बाधाएं समाप्त होंगी।
20 जून	आज गणेश चतुर्थी है, भगवान गणेश को प्राप्त, काल लड़का भोग लगाएँ।	5 जुलाई	‘निखिलेश्वरानन्द पंथक’ का पाठ करने से गुरु कृपा होगी और आपके कार्य सफल होगे।
21 जून	गुरु जन्म दिवस के स्वप्न में प्राप्त, निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु निष्ठन करें। साप्तर्याण्यनुसार गुरु सेवा करने का संकल्प लें।	6 जुलाई	हनुमान जी के विघड के समक्ष तेल का दीपक प्रज्ञयेति कर कार्य पर जाने से सफलता प्राप्त होगी। मंत्र – ‘ॐ नमः शिवाय’
22 जून	किसी भी कार्य से पूर्व इस इलोक को '५' चार पहुँच जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कायालिनी दुर्गा शमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते	7 जुलाई	चावल और कुंकुम मिलाकर चारों दिशाओं में फेंकते हुए निष्ठन मंत्र का जप करने से कार्यों में सफलता की संभावना बढ़ती है। मंत्र – ‘ॐ तत् त्वं नमः’
23 जून	पूरे दिन 'ह्रीं' मंत्र का मानसिक जप करें, सफलता प्राप्त होगी।	8 जुलाई	एक गिलास पानी लेकर गुरु दिशा की ओर खड़े होकर, ‘ऐ बीज मंत्र का ध्यारण बार उच्चारण कर, जल को अभिमंत्रित कर दीजें।
24 जून	‘हनुमान विघड’ (न्यौछावर ६०/-) को जल से स्नान कराकर, सिंदूर से पूजन करके ही कार्य हेतु जाएँ।	9 जुलाई	दोच लौग एकत्र कर, उन्हें कागज में बांधकर अपने कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना कर किसी मंदिर में छढ़ा दें।
25 जून	लाल पुष्प को पूरे दिन अपने पास रखें।	10 जुलाई	तुलसी जी के वृक्ष में जल डालकर प्रदक्षिणा करें, कार्य में सफलता की सम्भावना बढ़ेगी।
26 जून	बाहर जाने से पूर्व निष्ठन इलोक का सात बार पाठ करके ही बाहर जाएँ —	11 जुलाई	आज राति स्नान कर, गुरु दिशा के समक्ष आरती करें, शवन पूर्व गुरु मंत्र का जप करें, गुरु परिणाम होंगे।
27 जून	‘सौक्ष्मा’ (न्यौछावर ५१/-) को किसी पात्र में स्थापित कर पूजन करें, सफलता मिलेगी।	12 जुलाई	प्राप्त, उठते समय अपने दोनों हाथों को सच्चे पक्षले देखें उसके बाब ही कार्य आरम्भ करें।
28 जून	प्राप्त, काल उठते ही पांच बार गायत्री मंत्र का जप करें।	13 जुलाई	भगवान शिव को लौट का भोग लगाए एवं शोही सी खौर गाय को खिलाएं।
29 जून	पापल के पत्ते पर स्वस्तिक का कुकुम से निर्माण करें, उस पत्ते को किसी भी मंदिर में छढ़ा दें, सफलता प्राप्त होगी।	14 जुलाई	

जीवन के पात्र

* कल्पना यादव, कानपुर से पत्र लिखती है गुरुवर तुम्हीं बता दो किसकी शरण में जायें, किसके चरण में गिरकर अपनी व्यथा सुनायें अज्ञान के तिमिर ने आरो तरफ से धेरा कथा रात है प्रलय की होगा नहीं सबेरा पथ और प्रकाश वो तो चलने की शक्ति पाये माना कपूर है हमे कथा कष्ट रह सकेगे मुस्कान प्यार अमृत कथा ने नहीं सकेगे दाता तुम्हारे दर से जाये तो कहा जायें।

* अशोक कुमार नायक, रायगढ़ से लिखते हैं कि मुझे आपका पत्रिका में सम्मोहन के बारे में आत्म सम्मोहन साधना पढ़ा बहुत अच्छा लगा लेकिन उस तरीके से आत्म सम्मोहन करना कठिन है आत्म सम्मोहन का मनोत्पक साधना विधि है तो साधकों के लाभार्थ प्रकाशित करने की कृपा करें।

* सतोष पाण्डेय, बिहार से लिखते भौतिका है कि मनुष्य के जीवन में सात रंगों का महत्व किस प्रकार से है किस रंग को प्रभाव मनुष्य में किस प्रकार से पढ़ता है यह अताने की कृपा प्रदान करें। निससे सभी साधकों को इस बारे में ज्ञान प्राप्त हो।

आपका सुझाव बहुत ही सुन्दर है, भविष्य में पत्रिका में ऐसी साधना ही जाएगी।

- सह सम्पादक

* रुपेन्द्र सयाल, पटियाला, पंजाब से लिखते हैं कि पत्रिका अप्रैल अंक पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर कर रहा है इस बार मुख्य पृष्ठ पर गुलाबों के मध्य हमारे शाही गुलाब श्री गुरुदेव को देखकर मन में भी कई गुलाब खिले। प्रवचन इकड़ोंरने बाला था। कृपया यह भी बताया करें कि प्रवचन कहा, किस शिविर एवं कब दिया गया है। साधनाओं में भैरव साधना, पंचतत्व साधना, सूर्य साधना अच्छी लगी पूज्य गुरुदेव का जीवन चरित्र यदि चित्रावली के माध्यम से पत्रिका में दें, तो सभी साधकों एवं शिष्यों को अच्छा लगेगा।

* विलीप घडेश्वरी, सदरबाजार, (ब्यावरा म.प्र.) से पत्र लिखा है कि साधक के जीवन की सबसे बड़ी पूजी उसका आत्मविश्वास होता है, उसका दृढ़ निष्ठव्य, उसकी निष्ठा ही उसे मंत्र-तंत्र साधना के क्षेत्र में सिल्ह बनाती है यही युग्म यदि सामान्य व्यक्ति में हो तो वह भीतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, पत्रिका में इस प्रकार की साधना प्रकाशित नहीं हुई है यदि इस प्रकार की आत्म बल वृद्धि साधना आप जल्दी प्रकाशित करें जिससे सभी साधकों में आत्म विश्वास पैदा हो तो सभी साधक निःसिवुल रत्न बनकर आपको दिखाएंगे।

* बालमुकुन्द राम विहार से भौति आपसे पत्रिका के सम्बन्ध में एक बात कहनी है कि आप मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में एकमुखी हनुमत कवच तथा पंच मुखी हनुमत कवच हिंदी अर्थ सहित देने का कष्ट करें। दुग्ध कवच, लक्ष्मी स्तोत्र आदि प्रकाशित करने का कष्ट करें।

हनुमत व दुग्ध आदि देवताओं से सम्बन्धित कवच स्तोत्र का प्रति महीने प्रकाशन निर्धारित विवरों पर किया जाता है और आगामी वर्ष में भी किया जाएगा।

— सह सम्पादक

* साधर मिह शर्मा, लखनऊ से पत्र भेजा है श्रीमान सस्थापक महोदय आपकी पत्रिका में तीव्र साधनाओं में बगलामुखी, काली आदि में सद्या लाख जप या क्रम करने पर हवन प्रक्रिया की विधि मंत्रों सहित देने की कृपा करें। क्योंकि हर साधक हवन विधि नहीं जानता है अतः में आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हवन विधि पत्रिका में प्रकाशित करने की कृपा करें।

* विलहरलाल, हरवोई, (उ. प्र.) से लिखते हैं कि मुझे पत्रिका सदस्य बने २ वर्ष हुए हैं पत्रिका में प्रकाशित लेख, साधना एवं अन्य आलेखों की जितनी प्रशंसा कि जाय करूँ है, हम पत्रिका एवं गुरुदेव को पाकर अपने जीवन को गोरबान्धित अनुभव करते हैं इस घोर आधुनिक एवं अंधकार की दुनिया में पत्रिका एक नहीं हजारों दीप स्तम्भ कि तरह है जो लोगों कि विभिन्न प्रकार की ज्ञानता को नष्ट करके उच्चज्ञान की अमृत का पान करा रही है यह बहुत ही गौरव कि बात है यह संस्था एक अनुठी संस्था है जो कार्य यह पत्रिका परिवार कर रही है वह एक दिन पूरी दुनिया को स्वर्ग बनाकर ही दम लेगी न कही हैर्या होगी न कही भेदभाव न ही कोई दुरःख चारों ओर प्रसन्नता एवं आनंद ही जानंद होगा।

लक्ष्मी आपके यहाँ स्थायी हो सकती है
लक्ष्मी अर्थात् धन, सौभाग्य, सुख, श्रीवृद्धि
उसी हेतु है यह अद्वितीय एवं तुष्टि
प्रभावकाली प्रयोग

कुबेर सा धा ना

यह अवर्त् सम्पत्ति, वै भव-निधि,
जिसके बिना सब कुछ इस युग में अधूरा ही
है। युग-धर्म भी यही कहता है, कि जो
सम्पत्ति कमा सकता है और उसे अपने पास
स्थिर रख सकता है, वही योग्य व्यक्ति है।

कुबेर धनाध्यक्ष हैं, और इनकी साधना
दरिद्र को करोड़पति, नवनिधि का स्वामी
बना सकती है, तो फिर वर्यों न यह साधना
सम्पन्न की जाय?

लक्ष्मी को चलायमान, अस्थिर कहा गया है, और
जो व्यक्ति लक्ष्मी को स्थिर कर देता है, उसके अपने जीवन में
किसी प्रकार की कमी रहती ही नहीं, वह अपने लिए तो धन
संचय करता ही है, अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कुछ
कर सकने में समर्थ रहता है, धनी व्यक्ति ही समाज के लिए
कुछ कर सकता है, धन से सब कुछ तो नहीं, लेकिन बहुत
कुछ ऐसा किया जा सकता है, जिससे व्यक्तित्व के प्रकाश की
आभा जगमगा सकती है, दुखों का भार कम हो सकता है।

रूप से प्र

कुबेर

सम्पन्न

पूजन मध्य

पुष्ट्राजनि

प्रावेना म

रूप से स

है, जिस

प्राप्त की

कुबेर सा

आ ही न

नहीं रह

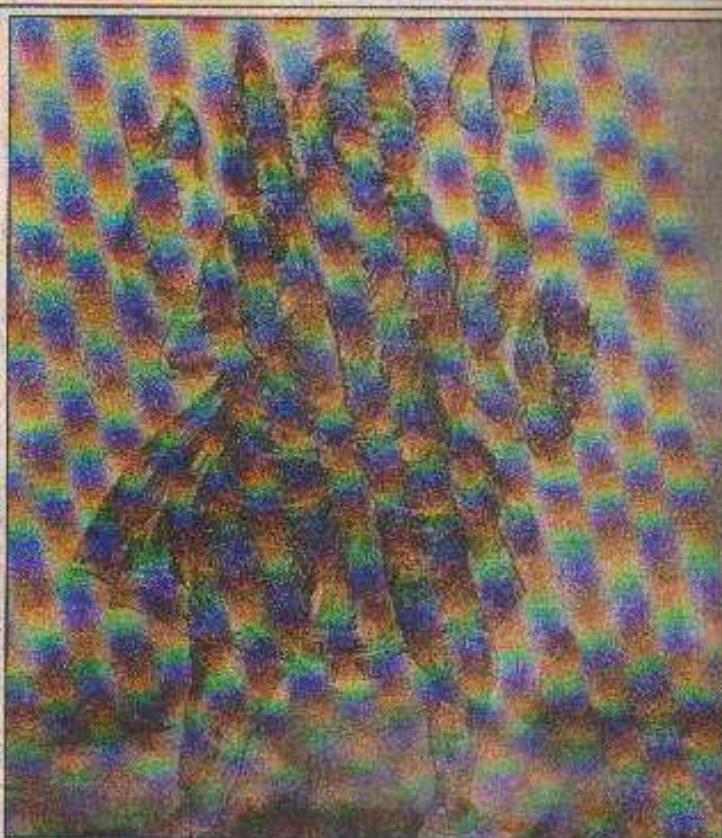
सह

पृथि

विदि

मनुष्य जन्म लेता है तो अपने साथ पूर्व जन्मों के कर्मों के क्रप्रभाव, दुष्प्रभाव लो लेकर उत्पन्न होता है, और इसके साथ इस जन्म के प्रभाव के साथ उसके कार्य, उसकी साधनाएँ इत्यादि जुड़ जाते हैं, और जीवन की एक धारा बन जाती है, इसीलिए तो व्यक्ति को ऐसे कर्म, कार्य, साधनाएँ सम्पन्न करनी चाहिए, जिनसे जीवन सुधर सके, और यहाँ उसका कर्तव्य भी है।

एक प्रकार के व्यक्ति तो पूरा जीवन अपना पट भरने, बीबी-बच्चों को पालने में ही पूरा कर देते हैं, उनके पास इतना धन ही नहीं होता, कि वे जीवन के सभी रंगों को देख सकें, अनुभव कर सकें और इसरों के लिए व समाज के लिए भी कुछ कर सकें, दूसरे प्रकार के व्यक्तियों पर धनदेव की कृपा होती है और वे नितना प्रयास करते हैं, उससे अधिक ही कमाते हैं, और पूरा जीवन आनन्द से बिताते हैं।



दान के अधिदेव कुबेर

कुबेर देव की महत्ता तो निश्चली ही है, ब्रह्मा और शिव द्वारा विशेष रूप से आशीर्वादमुक्त होने के कारण इनका स्थान शिव के साथ ही है, नूर्य के समान तेज है, विशेष ढात यह है, कि देवताओं को भी धन के लिए कुबेर की ही प्रार्थना करनी पड़ती है, कुबेर का जहाँ स्थान होता है वहाँ साक्षात् महालक्ष्मी राज्यश्री के रूप में निवाल करती है।

कुबेर नवनिधियों, पश्च, महापश्च, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्धस के स्वामी हैं, यश, गुणिक, किन्नर, देवनिधियों के अधिपति हैं, तथा अप्सराएँ इनकी सेविकाएँ हैं।

एक-एक निधि अनन्त वैभव प्राप्त करा सकती है, और कुबेर तो नवनिधियों के स्वामी है, कुबेर के साधक पर शिव-कृपा विशेष रूप से रहती है, और यह रक्षा ब्रह्मा द्वारा अवश्य की जाती है, शुक्र अद्योत सौन्दर्य, सीमांग्य, सांसारिक सुख, गृहस्थ-आनन्द, मदन, वात्रा, संगीत के देव, कुबेर के सहयोगी हैं, अतः कुबेर साधना से शुक्र का सीमांग्य भी पूर्ण

जहाँ कुबेर है—वहाँ
लक्ष्मी है, नवनिधियाँ
हैं, अप्सराओं का
आनन्द है, शूर्य का तेज
है, योर्या देवक हैं,
हसीलिए तो कुबेर का
उथान ब्रह्मा, विष्णु,
महेश के समकक्ष माना
गया है।

**वास्तव में ही यह
यंत्र अपने आप में
यंत्रयाज है और मंत्र-
मंत्र के सभी ग्रंथों में इस
यंत्र को सबसे अधिक
महत्व दिया गया है।
यह अलग बात है कि
यह यंत्र अपने आप में
गापनीय रहा है।**

रूप से प्राप्त होना है।

कुबेर साधना

कोई भी यज्ञ, पूजा, उत्सव, कुबेर की पूजा के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता, उत्तर दिशा के ऊधिपति कुबेर का पूजन मध्य में तो होता होता है, पूजन के अन्त में जब मंत्रों द्वारा पुष्टांजलि अर्पण की जाती है, तो वह मूल रूप से कुबेर का प्रार्थना मंत्र ही है।

जिसने कुबेर की साधना और उपासना नियमित रूप से सम्पन्न की है, उसे अपने जीवन में जो चाहा वह मिला है, जिस व्यापार में, कार्य में हाथ दाला, उसी में सफलता प्राप्त की है, और धन-लाभ किया है।

आकस्मिक धन प्राप्ति तथा गुप्त धन प्राप्ति हेतु भी कुबेर साधना का ही विद्यान है, क्योंकि कुबेर सिद्धि बिना धन आ ही नहीं सकता, और यदि आ भी जाता है तो वह स्थिर नहीं रह सकता।

कुबेर साधना, शिव-साधना तथा शुक्र साधना का भी कल देती है, कुबेर साधना बालकों के लिए आरोग्य लाभ एवं विराम्यु की साधना भी है, यदि घर परिवार में बच्चे बार-बार अस्वस्थ होते हों, तो कुबेर की विद्यिवत पूजा करके बालकों को पूजन का जल पिलाने से ख्वासश्च लाभ होता है।

साधना विधि

सत्य तो यह है कि साधनाएं जटिल और कष्टप्रद होती ही नहीं हैं, मूल रूप से तो साधक पर निर्भर है, कि वह किस भाव से, किस रूप में, किस समर्पण से, किस विधि से साधना सम्पन्न करता है, मंत्र जप करते समय ध्यान कहीं और होता है, तो फिर साधना में सफलता केसे मिलेगी?

कुबेर भी शिव समान सरल वेव है और इस साधना को तो प्रतिदिन के पूजा क्रम का अंग ही बना लेना चाहिए।

प्रतिमाह शुक्रल पक्ष की त्रयोदशी कुबेर त्रयोदशी ही मानी जाती है, इस दिन साधक बिना मुहूर्त देखे कुबेर साधना सम्पन्न कर सकता है।

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित्युक्त शुक्र रूप से अंकित कुबेर यंत्र तथा कमलगङ्गा माला आवश्यक है, इसके साथ ही नारियल, कुंकुम, केसर, मौली, ताम्रपात्र में जल, दूध, पुष्प, प्रसाद इत्यादि की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, इस त्रयोदशी के दिन स्नान कर, शुक्र पीले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुङ्ह कर बैठें, और अपने सामने कुबेर यंत्र को चावलों पर स्थापित करें पति-पत्नी दोनों साथ में यह साधना कर सकते हैं, सर्वप्रथम कुबेर का ध्यान करें —

ध्यान —

मनुजबाह्यविमान वरस्थितं गरुडरत्ननिभं

जिधिनायकम् ।

शिवसर्वं सुकृदादिविभूषितं वरजदे उधतं भज तुवितम् ॥

ऋष्यादिन्यास्त् —

ॐ विश्ववाऽवद्ये नमः शिवसि ।

व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से काम करता है, किन्तु वह यदि दैविय शक्ति की सहायता मंत्रों के माध्यम से प्राप्त कर लेता है, तो शीघ्रता से वह अपने अभीष्ट की पूर्ति कर सकता है। अतः साधना व्यक्ति सम्पन्न करे और शीघ्र उसे साधना का प्रभाव दिखाई देने लगे, ऐसी ही साधना है इस द्वारा के लिए सर्वश्रेष्ठ कुबेर साधना ।

बृहतीलनदसे नमः सुखे ।
शिवमित्रधर्मेष्वर देवताये नमः हृषि ।
विलियोगाय नमः । सर्वज्ञे ।
इति शब्दाविन्वासः ।

हृष्टाविषड्हन्यास्त् -

उ३ वक्षाय दृष्टाय नमः ।
उ४ कुवेशय शिरसे स्थाहा ।
उ५ वैश्वरणाय शिराय वरद ।
उ६ धनधार्याय धिष्यतये कवचाय हुम् ।
उ७ धनधार्य समृद्धि मे ज्ञेत्रत्रयाय वौषट् ।
उ८ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् ।
इति दृष्टाविषड्हन्यासः ।

कर्म्यास्त् -

उ३ वक्षायां गुभाभ्यां नमः ।
उ४ कुवेशय तर्जनीभ्यां नमः ।
उ५ वैश्वरणाय मध्यमाभ्यां नमः ।
उ६ धनधार्याय धिष्यतये अतामिकाभ्यां नमः ।
उ७ धनधार्य समृद्धि मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
उ८ देहि दापय स्वाहा करत्तत्तकर पृथग्भ्यां नमः ।
इति कर्म्यासः

अपने सामने एक शुद्ध धी का दीपक लगाकर यंत्र पर दुःखधारा देते हुए निम्न मंत्र से अभिषेक करना चाहिए -

मंत्र

॥ उ३ श्रीं उ४ हीं श्रीं हीं कर्त्ती श्रीं कर्त्ती विलेश्वराय नमः ॥
पुष्य भी अर्पित करते रहना चाहिए ।
अब आपने दोये हाथ में कमल गढ़े की माला लेकर निम्न मंत्र का जप करें । शास्त्रोक्त विधान सबा लाख मंत्र जप का है परन्तु साधक ५ माला प्रतिदिन मंत्र जप अवश्य ही करें, पूरे श्रावण मास यह क्रिया चलते रहनी चाहिए ।

मंत्र

॥ उ३ क्षं क्षीं क्षमाधिपतिः अगच्छ वक्षाय कुवेशय फट् ॥
जप समाप्त होने पर पुनः पुष्य अर्पित करते हुए साधना में हुई त्रुटियों के लिये क्षमा मांग लें ।

यदि आपका भवन या व्यापारिक स्थल का निर्माण हो रहा हो, तो अगले दिन यंत्र को उसमें स्थापित कर दें अश्वा लाल वस्त्र में बांधकर तिजोरी में रख दें ।

माला को लाल कपड़े में बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें ।

सबा महीने के बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें । वास्तव में यह साधना अद्वितीय है, तांत्रिक ग्रंथों में इस साधना का विशेष महत्व है ।

जिस स्थान पर यह साधना सम्पन्न होती है, वह स्थान भी लक्ष्मी का प्रिय स्थान बन जाता है ।

साधना सामग्री पैकेट - 400/-

विश्वा क्रष्ण के पुत्र होने से कुबेर वैश्रवण कहलाये और बचपन से ही शिवलिंग स्थापित कर भगवान शिव की कठिन तपस्या में लग गये । अनेकों वर्ष बीत जाने पर उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान महादेव मां पार्वती सहित प्रकट हुए और कहने लगे - हे वैश्रवण ! तुम्हारी तपस्या से मैं परम प्रसन्न हूं, तुम अपना अभीष्ट वर मांगो । ऐसा बचन सुनते ही उन्होंने अपनी आंखें खोली लेकिन भगवान शिव के तीव्र प्रकाश से उनकी आंखें फिर बन्द हो गईं । कुबेर ने कहा कि मुझे ऐसी शक्ति दीजिए जिससे मैं आपको निरन्तर पा सकूं । भगवान ने कृपा पूर्ण हाथ से कुबेर को स्पर्श किया और कुबेर को विश्व दृष्टि प्राप्त हो गई । नेत्र खुलते ही उनकी पहली दृष्टि परम सुन्दरी मां पार्वती पर पड़ी और वे मोह वश उन्हें ही देखने लगे । उसी समय पार्वती के नेत्र ज्वाला से उनकी बाँई आंख ज्योतिविहीन हो गई और शरीर कुबड़ा हो गया । तदनन्तर भगवान शिव ने कहा कि यह तो तुम्हारे पुत्र समान है, तुम्हारे तेज को देखकर आश्चर्य से निहार रहा है । भगवान शिव ने वर दिया कि तुम निधियों के स्वामी हो और गुद्धक, यक्ष, किञ्चन के अधिपति हो, देवताओं के कोषाध्यक्ष हो और जो तुम्हारे द्वारा स्थापित शिवलिंग का पूजन अर्चन करेंगे वे कभी निर्धन नहीं होंगे तथा तुम अल्कापुरी में सदेव निवास करोगे । इस प्रकार कुबेर को भगवान शिव की कृपा से वह महापव प्राप्त हुआ ।

दूरी पर
कहकर
तांत्रिकों
यही आ
योगियों
हैं, जैसे
तप स्थ
आस-प
के लिये
अद्भुत

वर्णन
वशाप्त
उनके
फक्क
अत्यत
उठा ।
साधन
ही वे
पड़ ग
ज्वाल
विश्वा
भूमि
करोगे
वेदी के
के द्वा

तांत्रिक वारियल

उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण नगर वाराणसी से थोड़ी ही दूरी पर स्थित है मां विद्यवासिनी का प्राचीन मंदिर। मंदिर न कहकर चैतन्य शक्तिपीठ कड़ना ही अधिक उचित होगा। तांत्रिकों की तीर्थ स्थली, जो कामाख्या तक नहीं जा सकते वे यहीं आकर कृत्य कृत्य हो उठते हैं, बगल में बढ़ती हुई गंगा, योगियों, तपस्वियों की मां। इसमें वे इसी प्रकार किलोल करते हैं, जैसे मां की गोद में शिशु। ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरी तपः स्थली और मां का आवश्यकता करता चैतन्य धड़कता विश्रृंह। आस-पास फैली गुफायें मानों मानो ने अपने आने वाले लाडलों के लिये स्वयं रुचि ले लेकर बनाया हो। सम्पूर्ण वातावरण अद्भुत अलौकिक रमणीक।

उन्हीं विनों परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के दर्शन की इच्छा लेकर मैं वाराणसी आया। सुना था वे दशाख्वामेघ धाट पर चिना साधना में तल्लीन है। मेरी इच्छा उनके दर्शन करने की हो उठी थी। उनके अद्भुत आत्मलीन फलक-दृष्टिस्त्र की चर्चा योगियों के मध्य विस्मय और अन्यत श्रद्धा से होती सुन मैं उनका शिष्य बनने को आतुर हो उठा। मैं वाराणसी पहुंचा उन्होंने कहा इस समय मैं अपनी साधना में लौन हूं, अतः चार माह बाद मिलना। उसके बाद ही वे दीक्षा देकर साधना रहस्य समझायेगे। मैं ऊहापोह में पढ़ गया कि अब चार माह कैसे व्यतीन करूं। उन्होंने मेरी ऊहापोह देखकर मुझे सामान्य गुरु दीक्षा दे दी और कहा विद्यवासिनी देवी के क्षेत्र में जाकर साधना करो। उस चैतन्य भूमि में दो-चार माह रहने से स्वतः ही परिवर्तन अनुभव करोगे।

गुरुदेव की आज्ञा लेकर मैं वाराणसी से विद्यवासिनी देवी के मंदिर की ओर प्रस्थान कर गया। वहाँ पहुंच कर शक्तिपीठ के दर्शन किये और साधना हेतु उपयुक्त स्थान खोज अपनी

साधना में तल्लीन हो गया। गंगा के तट पर खुले आकाश के नीचे मेरा निवास था। भिक्षाटन से जो कुछ मिलता उससे उदरपूर्ति कल्पे में शेष समय अपनी साधना में व्यतीत करता। वर्षा का काल निकल चुका था किन्तु जाड़ आने में विलम्ब था हसी से नौसम अत्यन्त सुखद था। कुछ दिन बाद मैंने अनुभव किया कि तीर्थ स्थान होने के कारण वहाँ आगमन अधिक रहता है जो साधना के लिये अनुकूल नहीं। साधना की जोपनीयता भंग हो जाने का भी भय बना रहता था। मैंने वही बात वही पर भजन पूजन में लौन वयोवृद्ध साधु श्री भोलानाथ जी से कही। वे मेरी बता से सहमत थे और उन्होंने ही मुझे सुझाव दिया कि मैं थोड़ी दूर पर स्थित कालीखोह की ओर चला जाऊं। वह स्थान तांत्रिक साधनाओं की ऊर्जा से भरा हुआ है। कर्मोक्ति देश के श्रेष्ठ साधक व साधिकाये इस स्थान पर तांत्रोक्त दंग से साधनाओं में लौन है। प्राकृतिक रूप से भी वह दीन ऐसा है कि व्यक्ति सहन ही एकात् बास का भूगम स्थान हूँड़ सकता है।

मुझे उनकी बाणी में गुरुदेव का ही संकेत मिला और मैं उनसे विदा लेकर काली खोह की ओर बढ़ गया। सचमुच पूरा का पूरा क्षेत्र तंत्र की ऊर्जा से भरा हुआ है। प्रारम्भ के लो तीन दिन तो कौतूहल वश वहाँ के स्थान वेखने में निकल गये। तीसरे दिन जब मैं भिक्षा मांग कर बापस आपने स्थान पर लौट रहा था तो टीक उसी स्थान से जहाँ से घने नंगल आरम्भ होते हैं मुझे एक स्वस्थ व आकर्षक लगभग २५ वर्ष की युवती खुड़ी मिली। उसका कद मझेला और रंग गेहूआ था। चेहरा अंडाकार लावण्य, और ममता से भरा हुआ था। उसने धावरा और चौली पहन रखी थी। उसकी भेषभूषा से कोई भटकीलापन नहीं टपक रहा था। उसकी आंखों में अत्यधिक सौन्दर्य और चम्बकत्व भरा था, जिसे वह सहन ही अपनी ओर मानो खींच

रही थी। मुझे देखकर वह यूँ मुस्कराई मानो मेरी ही प्रतीक्षा कर रही है, और मुझसे वही से परिचित है। मैं अचकचा गया। उसने सहज भाव से पूछा सन्देशी हो? साधना करने आये हो? मैं उसकी ओर इस तरह से सम्मोहित सा देख रहा था कि सिर हिलाकर ही उत्तर दे सका। उसने मुझसे मेरा नाम तो नहीं पूछा लेकिन वह अवश्य पूछा कि तुम किसके शिष्य हो? जब मैंने पूज्यपाद गुरुदेव का पूरा नाम उच्चरित किया तो उसके घेहरे पर एक अत्यन्त मधुर मुख्यालय फैल गयी, जैसे कोई अपने गहन परिचित का नाम चुनकर खुश हो उठता है। वह बोली, हो मैंने भी उनका नाम सुना है। सुना है वे साधना में जितनी उच्च स्थिति पर है उन्हें ही दृढ़ और कठोर भी है। अब मैं इस विषय में क्या कहता? चुप ही रह गया। उसने अपना परिचय इस रूप में दिया कि वह भी इसी क्षेत्र में साधना में संलग्न है और स्नेह से पूछा कि साधना के लिए क्या कोई उपयुक्त स्थली है? मैं उस समय तक इधर-उधर ही भटक रहा था। कोई निश्चित स्थान नहीं पाया था। तब उसने स्वयं ही नुझे एक स्थान बताया और कहा उस स्थान को देख लो, हो सकता है तुम्हें भा जाव। उसने वह भी कहा कि वह यहाँ से थोड़ी ही दूर पर कहीं गुप स्थान में साधनारत है, किन्तु मुझसे मिलने का अवसर आता रहेगा। मैं उसके अचानक स्नेह से हँतप्रभ था।

मैंने उसके बताये स्थान पर जाकर पाया कि सचमुच वह स्थान प्रकृति ने साधना के लिये ही निर्मित किया था। एक जीण शिवालय, उसके सामने मिट्ठी के ऊचे-ऊचे टीले जिनके पीछे वर्षों का पानी दक्षिण छोकर एक कृत्रिम झील सी बन गई थी। चारों ओर उगे जंगली वृक्ष, शाढ़ियाँ व खुरपतंश आदि। पूरी तरह से प्राकृतिक एवं सुरन्य बातावरण, जिसे देखकर मन भवत ही ध्यान में लीन ढौंने लगे। यह स्थान पूरी तरह से मेरी कल्पना के अनुरूप था। मैंने आनन्द पूर्वक अपना आसन लगाया, और साधना प्रारम्भ कर दी। प्रारम्भ में तो मुझे गुरु साधना ही करनी थी जिससे कि आगे भी साधनाओं के लिये यथोऽ आधार बन सके। मैंने उस शिवालय को साफ किया, और उसमें मन्त्र जप प्रारम्भ किया। मैंने साथ के झुटपुटे में मन्त्र जप प्रारम्भ किया था और धीरे-धीरे करके रात गहरा गई। बाहर मैंने कुछ लकड़ियों का प्रकाश कर रखा था। जिसकी खुदली रोशनी शिवालय तक आ रही थी। प्रायः ७ बज चुका होगा। और मेरा मन्त्र जप आगे बढ़ रहा था। कभी-कभी कोई जंगली पशु आवाज करता हुआ निकल जाता लेकिन मुझे कोई

कामाख्या शक्तिपीठ विद्यवासिनी शक्तिपीठ जैसे स्थानों की विशेषता इसीलिए है कि जब भगवान शिव के अपमान से कुछ होकर सती शक्ति पार्वती यज रुद्र में अपनी आँख दे दी और उस शव को भगवान शिव ने अपने हाथों में उठाकर कुछ मुद्रा में तीनों लोकों में विचरण करने लगे। जिन बावन स्थानों पर सती के अंग गिरे वे स्थान शक्तिपीठ माने जाते हैं।

ऐसे स्थानों पर घर परिवार से हटकर तंत्र साधनाएं करने से व्यक्तित्व में परिवर्तन तो आता ही है साथ ही प्रकृति के साथ साधक का मिलन उसे ऊर्ध्वगामी बनाता है।

विशेष भय नहीं लगता। धीरे-धीरे रात का ११-१२ बजे का समय हो गया। मुझे ऐसा लगा मेरे चारों ओर कुछ पदचाप हो रहे हैं और कानाफूली हो रही है। मैं प्रारम्भ में तो नहीं समझा किन्तु शीघ्र ही श्मशान साधना के अपने अनुभवों से समझ गया कि हो न हो ये भटकी हुई आत्माएं हैं, जो इस एकान्त में शिवालय में बास करती हैं, और मुझे पाकर के कुछ हो रही है। मैंने पूज्य गुरुदेव का स्मरण किया, बातावरण एक विचित्र प्रकार की दृष्टितासे शस्त हो गया था जिससे मैं अपना मंत्र जप अधूरा ही छोड़कर शिवालय के बाहर लगे जिसने आसन पर जाकर लेट गया, और पूज्य गुरुदेव के चिंतन में लीन हो गया। रात्रिकाल का लगभग दो बज चुका था, और उसी विनाशक अवश्या में मुझे हल्की भी नींद आ गई।

थोड़ी बैर बाद जब मेरी आंख खुली तो ऐसा लगा मानो मेरे सामने पर एक नहीं बल्कि दो-दो व्यक्ति चढ़े हैं, एक मेरे गले को दबा रहा है, और दूसरा पैरों को उमेड़ रहा है। मैं डिल भी नहीं सकता था, बोल भी नहीं सकता था। छटपटा कर इतना ही चीख सका गुरुदेव। गुस्सेदेव। मेरे इस आत्माव के बाब दबाव तो हट गया लेकिन मेरी नींद रात भर के लिये गायब हो गई। शेष रात मैंने बड़ी बैचेनी से काटी और सुबह होते ही सीधा उस स्थान पर गया जहाँ मेरी भेट उस योगिनी से हुई थी। वह भी मेरी ही प्रतीक्षा में बैठी थी, मैंने उसे रात की सारी घटनाएं बताई और बताया कि किस तरह से पूज्य गुरुदेव ने मेरे ग्राणों की रक्षा की। वह बोगिनी जिसने बाद में अपना

नाम सुंदरी बताया, कछु भीचकी सी रह गई और मुझसे मेरी साधना के विषय में बिस्तार से पूछा। उसने विडोष जोर देकर यह पूछा कि क्या तुम अपने साधना में तांत्रोक्त नारियल लेकर बेटने हो? मैंने तो यह तांत्रोक्त नारियल शब्द पहली बार सुना था। अतः मूँछों की तरह उसकी ओर देखने लगा। वह भी आश्चर्य से देख रही थी, कि यह कैसा साधक है, जो तांत्रोक्त नारियल से अपरिचित है, उसका नाम तक भी नहीं जानता। उसने जैसे मुझ पर तरस खाकर कहा अच्छा शाम को मिलना।

शाम को वह प्रसन्न मुद्रा में लगभग दौड़ती थुई मेरे पास आई और अपनी घाघरे में बनी जेब से मुझे नारियल के समान लगभग गोल सी एक बरस्तु दी। उसका रंग सामान्य नारियलों के रंग से हटकर था। उस पर एक और नाक सी उठी थी और उसके नीचे एक छिद्र था, जैसे मानव मुख। उसने कहा मैं बड़ी कठिनाई से तुम्हारे लिये खोजकर यह तांत्रोक्त नारियल लाई हूँ। एक साधक के लिये उसके जीवन में यह परम आवश्यक होता है इसको पास रखने से भूल प्रेत बाधा, तांत्रिक प्रभाव, भय व्याप हो जाए तक। मैं उसके निश्छल प्रेम से अभिभूत हो उठा। उसने मुझे मोठी छिद्रकी दी, कि कम से कम साधना प्रारम्भ करने से पहले मोटी-मोटी बातें तो जान लिया करो।

सुंदरी ने कुछ दिन बीतने के बावजूद, जब मेरी साधना सहज रूप से गतिशील हो गई रहस्य खोला कि वह मेरे पूर्वजन्म की गुरु बहन है और हम दोनों ने शाथ-शाथ अपने साधनाये सम्पन्न की थी। पूर्ण्य गुरुदेव ने उसे मेरे आने से पूर्व आगमन का संकेत दे दिया था और यह तांत्रोक्त नारियल भी उसे पूर्ण्य गुरुदेव के माध्यम से ही प्राप्त हुआ था। बाद में तो सुंदरी ने नुझे बताया कि इसी तांत्रोक्त नारियल पर अनेक प्रयोग संभव है। सावर साधनाओं में तो यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। गुरु गोरखनाथ जी की परम्परा में हुये साबर भंडो के प्रेष्ठ विद्वान श्री उद्धिया नाथ जी ने तो तांत्रोक्त नारियल से सम्बन्धित १०८ साधनाये लेकर पूरा एक ग्रन्थ लिख डाला, यह दुर्लभ बरस्तु केवल साथ संन्यासियों के लिये ही नहीं अपितु गुहस्थ लोगों के लिये भी पर्याप्त उपयोगी है, केवल उपयोगी ही नहीं अतिआवश्यक कहना अधिक उचित होगा। मैं संक्षेप में मंत्रों से चेतन्य तांत्रिक नारियल पर रखने पर होने वाले लाभों को बताना चाहता हूँ, जो मुझे सुंदरी से जात हुये—

१. तांत्रोक्त नारियल घर में रहने से स्वतः लक्ष्मी का

वास प्रारम्भ हो जाता है और आर्थिक अनुकूलता होने लगती है।

२. इस नारियल को घर में रखने से यदि घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो तो वह दूर हो जाता है।

३. इस नारियल को घर में रखने से भूत प्रेत विशाच आदि का भय व्याप नहीं होता।

४. इस नारियल को घर में रखने से वातावरण शुद्ध बना रहता है और अक्षस्मिक धन प्राप्ति की संभावनायें बढ़ती हैं।

५. जिसके घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है उसके घर के व्यक्तियों में परस्पर प्रेम माई चारा और आत्मीयता बढ़ती रहती है।

६. इस तांत्रोक्त नारियल के घर में रहने से बालकों की बुद्धि शुद्ध और निर्भल आध्यात्मिक बनी रहती है।

७. जिसके घर में तांत्रोक्त नारियल होता है उसके पूरे जीवन में किसी प्रकार का भय व्याप नहीं होता, न घर में महामारी, बीमारी आती है।

८. यदि तांत्रोक्त नारियल के घर में रहने से बालकों के बुद्धि शुद्ध और निर्भल आध्यात्मिक बनी रहती है।

९. यदि स्नान करने की आलटी में तांत्रोक्त नारियल डाल कर उस पानी से स्नान किया जाय तो किसी भी प्रकार की बीमारी समाप्त हो जाती है।

१०. यदि तांत्रोक्त नारियल को लाल कपड़े में बांध कर किसी लकड़ी के साहरे छत पर लटका दिया जाय तो इवा लगने से ज्यों-ज्यों वह लाल कपड़ा फहरायेगा ज्यों-ज्यों उसके घर में लकड़ी का वास और आर्थिक उचित होती रहेगी।

११. तांत्रोक्त नारियल के द्वारा गृहस्थ जीवन में अनुरूपता और एकता लाई जा सकती है इसके घर में रहने से लड़ाई-झगड़े, मतभेद, आदि स्वयं समाप्त हो जाते हैं और गृहस्थ जीवन में पूर्णता अनुकूलता आने लगती है।

१२. जिस घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है, उसके घर में समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः वास करती रहती हैं, और ऐसे साधक को प्रत्येक प्रकार की साधना में शीघ्र लाभ होता है।

इसके अलावा भी तांत्रोक्त नारियल में कई प्रयोग सिद्ध किये जा सकते हैं। सुंदरी ने मुझे तांत्रोक्त नारियल पर तीन अल्पन्त उपयोगी प्रयोग बताये थे।

इशावास्योपनिषद्

पविका के मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान के मई अंक में आर्य सरस्कृति के आधारभूत उपनिषदों का विवरण दिया गया था उसी क्रम में इशोपनिषद् भी प्रथम उपनिषद् इशावास्योपनिषद् के कुछ प्रमुख श्लोक और उनका महत्व स्पष्ट किया जा रहा है
ईशावास्योपनिषद्

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यस्त्विष्व जगत्यां जगत् ।
तेज त्यक्तेत भुक्षीया मा गृधः कस्य विद्वन्मः ॥१॥

आर्य — इस संसार में जो भी स्थिर और गतिशील है वह इशा अर्थात् परमश्वर की ही रचना है इस जीवन में त्यागमय भाव रखते हुए भोग करो, किसी अन्य के धन की लालसा न करते हुए विचार करो कि स्वयं का धन भी किसका है।

भावार्थ — प्रथम श्लोक में ही ईश्वर को स्वरण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि सुर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, तारे, मनुष्य, पशु, पक्षी सब को नति देने वाला परमशक्तिवान परमात्मा है। जो सबका ही रक्षार्थी है व्यक्ति इस संसार में भोग करे लेकिन उसके साथ हर समय त्यागवृत्ति रहे जो अपने पास है वह भी परमात्मा का ही है उसका भोग भी निर्लेप रूप से करते हुए दूसरे जे अधिकार को हड्डपने का प्रयास करना सही नहीं है बुद्धि ने त्याग की मार्गना हर समय रहे।

कुर्वन्नेदेह कर्मणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि लान्वयेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते जरे ॥२॥

आर्य — सब ईश्वर का है ऐसा विचार करते हुए निष्क्रिय होकर संसार में नहीं रहे, निष्काम भाव से कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की छप्ता करे, इस प्रकार निष्काम कर्म से

ज्ञ 'ज्ञन' २०१० मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '७२'

आसक्ति उत्पन्न नहीं होती इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं भावार्थ — क्षणि कहते हैं निष्काम भाव से कर्म करने से कर्म के साथ मोह नहीं जुड़ता है, जहाँ कर्म से मोह आ गया वहाँ दुखों की उत्पन्न होती है। अपने जीवन में सौ वर्ष जीने की इच्छा उसे यह सदैश देती है कि वह इस अनुसार चले जिससे वह अपने जीवन के कन्त तक स्वस्थ रहे, नर शब्द अर्थात् न ओर र अर्थात् नहीं रमण करने वाला संसार में मनुष्य है लेकिन जो मोह पाश में बन्ध नहीं गया है वही नर है, जो निष्काम भाव से कार्य करे।

असुर्वा ज्ञाम ते लोका अनर्थेन तमसायृता ।
तास्ते प्रत्याभिरच्छन्ति ये के चात्महन्ते जलतः ॥३॥

अर्थ — जो मनुष्य असूर्य भाव से युक्त होने है, जो आत्मा का हनन करते है वे जीवन के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त कर गहरे अधिकार से युक्त असूर्य लोक में जाते हैं।

भावार्थ — जीवन में कर्म कैसा हो, आत्मा के जीवन का अथवा आत्मा के मरण का। आत्मा के विकास के मार्ग पर चलना आत्मा का जीवन है, आत्मा के विसर्व मार्ग पर चलना आत्मा का हनन करना है, आत्म विकास के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अपने पूरे जीवन में प्रकाश मार्ग पर उत्साह मार्ग पर संचारित होता है आत्म हनन के मार्ग पर चलने वाला अधिकार निरुपण से युक्त होता है वह जो स्वयं अपनी आत्मा की बात नहीं समझ सकता क्योंकि आत्म अर्थात् मन सदैश सत्य मार्ग पर चलने को ही प्रवृत्त करता है। यहाँ यही सदैश है कि अपनी आत्मा की बात सुनो, जिससे जीवन में अधिकार न रहे अपनी शतायु पूर्ण करने के पश्चात भी सूर्य मदृश देवनाओं में आत्मा विलीन हो जाए, न की अंधकार युक्त ऐसे लोक में जहाँ

वह मोक्ष प्राप्ति के लिए छटपटाती रहे मृत आत्मा ही जीवन है।

अर्जेजवेकं मनसो जयीयो नैनदेवा अप्यनुवन्पूर्वमर्थत् ।
तद्विवेषं न्यायात्मेति विभूतस्मिन्पो मातस्तिश्वदधाति ॥४॥

अर्थ – परमात्मा कंपन नहीं करता, गति नहीं करता पर यह मन से अधिक वेगबान है इन्द्रीयों द्वारा प्राप्त नहीं कर सकती परन्तु यह हन्दियों से भी पूर्व विद्यमान है यह परमात्मा विद्यर बोला हुआ भी अन्य दौड़ते हुओं को पीछे छोड़ देता है ठीक वेसे ही जैसे बायु जो स्वयं हल्की है, अपने से भारी जल को उठा लेती है।

भावार्थ – परमात्मा की असीम शक्ति के सम्बन्ध में इस उलोक में समझाया गया है कि वह संभार के कण-कण में होते हुए भी तीव्र गति बाला है हन्दियों से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है, अपनी हन्दियों की वश में करते हुए जो अपनी आत्मा को समझ लेता है वह परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इस मन को माया नोह अभिमान वासना से मुक्त डलना अधिक हल्का बना दे कि वह बायु रूप में छोकर जल रूपी ईश्वर को प्राप्त कर सके।

तदेजति तद्वैजति तद्वैरे तद्विनितके ।
तद्विनितरस्य सर्वस्य ततु सर्वस्यास्य वरहातः ॥५॥

अर्थ – यह परमात्मा गतिशील भी है और विद्यर भी है वह दूर भी है, निकट भी है, वह सब के अन्तर मन में भी बसा है और वह सब के बाहर भी वर्तमान है।

भावार्थ – परमात्मा अर्थात् आधिकारि इतनी अधिक महान है कि वह स्थिर होते हुए भी गतिशील है भी गतिशील होते हुए भी स्थिर है नब मनुष्य ये विचार कर लेता है कि बाहर भीनर सब कुछ ईश्वरीय शक्ति हैं मैं तो उस विशद सत्ता का एक छोटा सा भाग हूं तो उसकी प्रवृत्तियों में शुश्रित आती है वह निष्काम भाव से काम करता है अपनी शक्ति पर अभिमान नहीं करते हुए आधिकारि ईश्वर के प्रति नतमरक रहता है वही सही रूप से जीवन जी सकता है।

वस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो ज विजुजुप्सते ॥६॥

अर्थ – गहराई से देखते हुए विचार करना कि सब

क 'ज्ञ' 2000 मंत्र-तत्र-यंत्र विज्ञान '73' ॥

मृतों में जड़ चेतन सब प्रकृति में आत्मा का बास है इस गहराई से विचार करने वाला व्यक्ति पापकर्म की ओर प्रवृत्त नहीं होता यहां नहीं करता ईश्वर से रक्षा की इच्छा रखता है।

भावार्थ – मनुष्य विक्षण अर्थात् गहराई से देखे उसके भी आगे अनु विक्षण अर्थात् प्रत्येक वस्तु पर विचार करे विचारशील व्यक्ति संसार में श्रमित नहीं होता विचारशील व्यक्ति हर स्थिति में हर प्राणि में परमात्मा को देखता है प्रकृति परमात्मा की बनाई हुई है उसके निर्माण पर गहराई से विचार करता है जो गहराई से विचार करता है वह पाप अर्थात् नष्ट करने की क्रिया कर नहीं सकता है। इसीलिए मन और विचार ही मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं।

वस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मेवाभूतिजानतः ।

तत्र को मोह कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥७॥

अर्थ – ईश्वर का जान होने से यारे व्यक्ति आत्माका हो गए क्योंकि प्रत्येक कण में ईश ही बसा है उनके व्यक्तियों में स्थित आत्मा ईश एक ही है ऐसा गहराई से विचार करने वाले व्यक्ति के लिए मोह केसा, शोक केसा ?

भावार्थ – मृत्यु का तात्पर्य है नाश जब कोई वरन्तु जो जाती है अथवा किसी प्रिय की मृत्यु हो जाती है तो मनुष्य शोक ग्रस्त होता है मनुष्य को यह गहराई से विचार करना है कि भीतिक जगत में एकाकार प्रकृति में और प्रकृति अपने नियमित आत्मा में लौन हो जाती है। संसार में विषय सुख मिलता है तो मोह में फंसता है, विषय सुख दूट जाता है तो शोक अवस्था में दुखी होता है, यह जान जो कि सब कुछ आत्मा से उत्पन्न होकर आत्मा में ही समाप्त हो जाता है वह निर्विज्ञ और निष्काम भाव से जीवन जी सकता है।

स वर्ज्जाच्छुक्रमकायमज्ञामस्ताविरं शुद्धमपापविदुम् ।

कविमन्त्रीष्ठी

परिभ्रूः स्वयंभूत्यायात्यतोऽयनिव्यवधान्ताभ्यतोऽयः

समाप्तः ॥८॥

अर्थ – इश सब के व्याप्त है यह शुद्धता की चरणसीमा है उसकी कोई काया नहीं है उसे शुद्ध एव पाप रहित कहते हैं वह ईश कवि है और भीतिक संसार उसका काव्य है। वह सब जगह व्याप्त होते हुए भी स्वयं भू अर्थात् अपने आप में है, कोई उसे पैदा नहीं करता शाश्वतकाल से जो सृष्टि चल रही है

निरन्तर सृष्टि का प्रभाव, व्यवस्था, प्रबन्ध परमात्मा इश ही कर रहा है।

भावार्थ – ईश्वर की महानता के सामने नल मस्तक होने हुए मनुष्य को इस भ्रम से निकलना चाहिए कि वह निर्माण कर सकता है विनाश कर सकता है, उसके कारण से ही जगत चल रहा है मनुष्य जगत नहीं चल सकता वह तो एक यात्रा कर रहा है अनाविकाल से जो व्यवस्था चल रही है और जो अनादिकाल तक चलेगी, ऐसा व्यवस्थापक ईश्वर ही है। मनुष्य क्या कर सकता है अपने की अभिमान से मुक्त रखे कि वह व्यवस्थापक है, ईश्वर ही सर्व समर्थ स्वकर्ता सर्वविदा परिपूर्ण और सर्वविद्याम है।

अरन्धं तमः प्रदिशस्ति वेऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो व उ विद्यावां रताः ॥ १॥

अर्थ – जो अविद्या अर्थात् भौतिक और देहसुख को उपासना करते हैं वे गहन संधकार में जा पड़ते हैं और जो केवल विद्या अर्थात् अध्यात्मवाद की उपासना करते हैं भौतिक जगत की परवाह ही नहीं करते वे उससे भी अधिक गहर संधकार में जा पड़ते हैं।

भावार्थ – मनुष्य अपने जीवन में समन्वय भाव से केंद्र जिये वह भौतिकता में भी इनना अधिक नहीं खो जाए कि उसे जीवन के बद्धन निश्चल से, दूर रिक्षासि ने भौतिकता से ही विचार करे केवल देह सुख के लिए ही अपने भाव को कर्म धूल रखे ऐसा करने से उसे पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती, जीवन में निराशा आती ही है तब वह अंधकार में जाना है। इसके साथ ही इस उलोक में यह भी कहा गया है कि मनुष्य अध्यात्म में भी इतना अधिक दुःख ही जाए कि वह शौकिक जगत की परवाह ही न करे ऐसा व्यक्ति तो ईश्वर का उपमान ही करता है, ईश्वर ने निश्चय ही वह जीवन निष्काम कर्म करने के लिए प्रदान किया है।

अनवर्देव रहु विव्याकथदाहु रविव्यवा ।
इति शुभ्रम धीराया व लरत्तिविविदे ॥१०॥

अर्थ – विद्वान् लोगों ने कहा है कि विद्या अर्थात् अध्यात्मवाद मीर जिद्या अर्थात् भौतिकवाद से अलग-अलग फल प्राप्त होता है इन दोनों विषयों पर विशेष विचार एवं व्याख्या आवश्यक है।

भावार्थ – संसार के भोगों को प्राप्त करने के लिए दूषित विचारों को प्रयोग में लाना पड़ता है और अधिकाधिक भोग से मृत्यु के मार्ग पर त्वरित गति से आगे बढ़ता है वह कभी भी पूर्णत मुक्त नहीं हो पाता ठीक इसी प्रकार अध्यात्म विद्या की उपासना करने वाला यदि आत्म तत्त्व को नहीं जान पाया, केवल चिंतन और मनन की करता रहा तो भी वह मुक्त नहीं हो पाता, वह तो बार-बार मृत्यु का विचार कर और भी अधिक व्ययित हो जाता है अथवा प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में विद्या और अविद्या दोनों पर ही विचार अवश्य करना चाहिए।

विद्यां चाविद्यां च वस्तद्वेवोभवं सह ।
अविद्या मृत्युं तीत्वा विद्ययामुत्तमश्रुते ॥११॥

अर्थ – विद्या और अविद्या इन दोनों तत्त्वों को जो एक साथ जानते हैं वे अविद्या अर्थात् भौतिकता से मृत्यु की ओर ते जाने वाले प्रभाव को पार कर जाते हैं और विद्या अर्थात् अध्यात्मिक ज्ञान से प्राप्त अमृत को प्राप्त करते हैं।

भावार्थ – दोनों का ही समन्वित ज्ञान व्यक्ति को कर्तव्य भी करता है अविद्या का ज्ञान उसे निरन्तर कर्मशील बने रहने को प्रेरित करता है व्यक्ति संसार में सब प्रकार की क्रियाओं को सम्पन्न करे लेकिन उसके साथ ही साथ हर समय विद्या अर्थात् अपनी शुक्लि का विकास अध्यात्म की ओर आत्म तत्त्व की ओर भी अवश्य करें। इसी को मृत्यु से अमृत्यु की ओर की यात्रा कहा गया है। ये निश्चित हैं कि जो जन्म लेगा वह मृत्यु को प्राप्त होगा ही लेकिन जो भोग और मोक्ष दोनों में समन्वय रखता है वह ही वास्तव में योगी है वही परम तत्त्व को प्राप्त कर सकता है।

प्रत्येक साधक के घर में वेद,
उपनिषद्, रामायण, गीता गांधी अवश्य ही
होने चाहिए ।

प्रत्येक साधक के घर में देवताओं
और सदगुरु का चित्र प्रगुण स्थान पर
अवश्य ही लगा होना चाहिए ।

प्रत्येक साधक के घर में निराय आरती
अवश्य ही संरपण होनी चाहिए ।

प्रत्येक बालक को गुरु मंत्र, चेतना
मंत्र और गायत्री मंत्र का ज्ञान अवश्य
कराना चाहिए ।

मेष

ही, यह उपर्युक्त रखें होंगे। अत व्यवस्था के अवसर पाठ करें

पृष्ठ

योहा पर्वतशील लक्ष्य वालों वाली ज्ञानस्थ है, नित निरन्तर लपरवा माह अस्यान १०,११ मिथ्या

आप पर्वतशील अपने किसी वाले न दूसरे लपरवा माह अस्यान ५,१५ कठोर

में किसी कारोबार यात्रा

काश्मीरी काम

मेष

(धू. वे. घो. ली. टू. लो. आ)
ज्योतिर्षय दृष्टि से हानि अपने प्रमात्र से बहुत कुछ करेगा ही, यह आप पर निर्भर है, कि आप किस धैर्य से उसका सामना करेंगे, धैर्य रखें, आलस्य न करें अन्यथा महत्वपूर्ण अवसरों से भी बचित होंगे। धन का व्यय करना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रखें, कि आपके जन्य कर्तव्य भी हैं। व्यापार को समझाओं, मुकदमों के कारण तनावस्तु न हों, आपका बल आपकी दृढ़ता है, विजयर रखें। सुख के अवसर परीक्षा करेंगे, नित्य शिव महिमन स्मोक वा पाठ करें। माह की शुभ तिथि १३, १५, २४, है।

सूर्य

(ई. ३. पु. वा. दी. टू. वे. घो.)
परिश्रम का फल तो अवश्य मिलता है, लेकिन कभी-कभी थोड़ा परिश्रम अधिक करना पड़ जाता है। आशासनों से जीवन गतिशील नहीं होता है, ठोस कार्यों को सम्पन्न करना भी होता है, लक्ष्य की पूर्णता आप से बहुत दूर नहीं है, अपने कार्यों में तोकता लाएं, कारोबारी मामलों में उत्साह रहेगा तथा यात्रा के योग बनेंगे। जीवनसाधी का सहयोग प्राप्त होगा। शशुप्रक्ष विश्वासघात कर सकते हैं, नित्य घर से आहर जाने समय थोड़ी भी राख आपने दरवाजे पर निश्चेत्रे के बाद ही पैर बाहर निकालें। बाहुन प्रयोग में किसी प्रकार की लपरवाही न बरतें। परिवार में प्रसन्नता का बातावरण रहेगा। इस माह आप 'कात्यायनी साधना' सम्पन्न करें, इस माह किसी तीर्थ स्थान में जाने का योग है। इस माह की अनुकूल तिथियाँ – १०, १५, २१, २५.

मिथुन

(का. ली. टू. घ. ल. घो. छ.)
इस समय आपके पितार गविष्ठा में चल रहे हैं, भगवान की आप पर बहुत कृपा है और यह सबव आप जो भी कार्य करेंगे उसमें आपको सकलता मिलेगी, समाज में आपका मान-सम्मान होगा तथा किसी नये मेहनान के आने से परिवार में प्रसन्नता का बातावरण रहेगा। आप किसी के बहकावे में आकर के अपने कार्यों को बहुत मत करना। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए समय बड़ा ही कठिनाईयों वाला रहेगा। इस समय नोरिकम और संरक्षण करने पर ही सकलता हाथ लगेगी। इस माह आप 'निखिल मुद्रिका' धारण करें तथा २१ दिन के बाद उसे नदी में प्रवाहित कर दें। इस माह की अनुकूल तिथियाँ – ५, १३, १९, २२, २८.

कर्क

(ली. टू. लो. घा. ली. डे. झ.)
किसी विरोध कार्य के होने से मन प्रसन्न रहेगा तथा परिवार में किसी के सहयोग से आपके बहुत से भोवे हुए कार्य पूरे होंगे, कारोबार में लाभ होगा, तथा किसी विशेष कार्य से आपको बाहर यात्रा पर जाना पड़ेगा। घर में मानविक योग बनेंगे। नित्य प्रातः सूर्य

देव को जर्व चढ़ायें, सफलता प्राप्त होगी और इस माह आप 'गुरु दस महाविद्या साधना' सम्पन्न करें। आपके लिये अनुकूल तिथियाँ हैं – ११, १५, १९, २१, २६.

झिंह

(मा. भी. घू. ले. नो. दा. दी. टू. आ)
किसी से भी आप सहयोग की आशा न रखें, निर्भी के ऊपर विश्वास न करें, आपको धोखा हो सकता है, इसलिए उनसे ज्यादा सहयोग कि आशा न करें। इस समय आपके योग प्रबल हैं, इसलिए आप खुद ही अकेले हर क्षेत्र में सफल हो सकते हैं, समय का सही उपयोग कर किसी छोटे कार्य को करें, अवश्य ही सफलता मिलेगी। व्यर्थ के विवरों से बचें, किसी के बहकावे में न आयें। नीबनसाधी से आपको सहयोग मिलेगा, घर में किसी के बीमार होने की संधारना है। शत्रु पक्ष आप पर हाथी होगा, इसलिए आप पहले से ही शावधानी बरतें। इस माह 'बगलामुखी साधना' आपके लिये अनुकूल रहेगी। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं – १, १६, १९, २५, २९.

कठन्या

(ठो. घा. दी. पु. घ. घ. ल. दे. घ.)
यह समय आपके लिए माननिक रूप से प्रसन्नता दूर करेगा, लेकिन नए कारोबारी मामलों के आरम्भ होने से शिखिलता रहेगी। सूख-सुविधा के साधनों में दृढ़ होंगे। परिवार के सदस्यों की ओर से जलावधान न हों। अधिक वर्ष के व्यक्तियों के लिए यह समय लाभ की दृष्टि से अनुकूलता प्रदान करने वाला सिल्ल होगा। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा, घर के मामले में आप इस समय अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा भास्यावान साक्षित होंगे। परिवार में किसी नये मेहमान के आने से प्रसन्नता का बातावरण रहेगा। विद्यार्थी वर्ष के लिए समय बहुत ही अच्छा है, इस समय का सही उपयोग करेंगे तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी, इस समय आप 'सरस्वती साधना' सम्पन्न करें, अनुकूल तिथियाँ – १, १५, २१, २६, २९.

तुला

(सा. ली. रु. ता. ती. टू. ते.)
इस समय आपका साध्य नहीं हो रहा है, इसलिए आप हर जदम पूँक-पूँक कर ही रहें तथा शत्रु आप पर हाथी हो रहे हैं, इसलिए किसी से विवाद न करें और आपने क्रोध पर नियंत्रण रखें, तथा किसी बात पर भी क्रोध न करें, उसे शानि पूर्वक निपटा ले अन्यथा आपको हानि होनी, शत्रुओं से सावधान रहें तथा उनकी हरकतों पर निगाह रखें क्योंकि वे आप पर किसी भी समय द्वारा कर सकते हैं। इस समय भाग्य आपका साध्य नहीं हो रहा है, इसलिए आप 'छिन्नमस्ता साधना' सम्पन्न करें, अनुकूल तिथियाँ – १, १७, २०.

कृष्ण

(तो. घा. ली. घू. ले. नो. दा. दी. टू.)
साधनाल्पक दृष्टि से यह समय आपके लिए बहुत ही अच्छा है, इस समय का उपयोग आप साधना में करेंगे तो आपको जल्दी ही सफलता मिलेगी, क्योंकि इस समय आपका योग बहुत ही अच्छा

सदों, अमृत, गंगा, पूर्व, द्विष्टक, तिष्ठि योग।
इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

20 जून	- तिष्ठि योग
22 जून	- तिष्ठि योग, सर्वार्थ तिष्ठि योग
23 जून	- तिष्ठि योग
25 जून	- शीघ्रव्य योग
26 जून	- शोभन योग
27 जून	- अमृत तिष्ठि योग, सर्वार्थ तिष्ठि योग
1 जुलाई	- शुक्र योग
4 जुलाई	- तिष्ठि योग, सर्वार्थ तिष्ठि योग
6 जुलाई	- शिरश योग
7 जुलाई	- तिष्ठि योग
12 जुलाई	- अमृत तिष्ठि योग, सर्वार्थ तिष्ठि योग
15 जुलाई	- तिष्ठि योग

चल रहा है और अगर आप किसी भी साधना को मन लेनाकर करेंगे तो आपको जल्दी ही सफलता मिलेगी। अगर आप को क्रोध आय तो किसी पर करे नहीं और हमेशा ही शांत रहो। इस समय जो भी व्यक्ति आपसे मिले उससे प्रेमपूर्वक ही मिले, मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही उपयोगी है। इस समय का उपयोग आप किसी भी छोटे कार्य में करेंगे तो आपको जल्दी ही सफलता मिलेगी। याचा का योग लाभदायक होगा, घर परिवार में नभी आपकी बात को मानेंगे। इस समय आप 'शुक्र यह साधना' सम्पन्न करें। अब यह ही सफलता मिलेगी। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - ३, १३, १६, २१, २४, २७, हैं।

धारा

(वै, वौ, जा, जी, था, पा, छ, जे)

सका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी, इस समय आप क्रोध पर नियंत्रण रखें क्योंकि आप अपने क्रोध से बना बनाया कार्य भी बिगड़ सकते हैं। मित्रों से आपको सहयोग मिलेगा, समाज में आपके कार्य का मान-सम्मान होगा तथा लोग आपकी इच्छात करेंगे, दैशी शक्ति के माध्यम से आप हर कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे, श्रमिक वर्ग के लिए समय संघर्षमय रहेगा, उनको हर कार्यक्रम में रुकावट आगमी व्यर्थ के विद्यार्थी से बचने का प्रयास करें। किसी धार्मिक तीर्थ यात्रा का योग बनेगा। जीवनसाधी से सहयोग प्राप्त होना तथा प्रेम-प्रसंगों में आपको अनुकूलता प्राप्त होगी। इस समय आप तारा साधना सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ - ११, १८, २३, २४, २५.

मरठर

(ओ, झा, झी, खु, झे, खो, झा, झी)

प्रेम सम्बन्धों को लेकर अच्छाने बनी ही रुक्णी तथा समाज में गान सम्मान, प्रतिष्ठा की हानि भी हो सकती है। बेरोजगार व्यक्ति नये रोजगार के बारे में प्रयास करें तो सफलता जल्दी ही मिलेगी क्योंकि इन समय आपका शान्य बहुत ही अच्छा चल रहा है। आप कास्टेटिक, कम्प्युटर जैसे सम्बन्धित कार्य करेंगे तो सफलता मिलेगी, मित्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, नीकरी पेशा व्यक्ति किसी के बहक वेमें आकर कोई गलत कार्य न करें। अपने स्वर्ण की मीलिक सूक्ष्मवृद्धि से किया गया कार्य आर्थिक अनुकूलता देने वाला तिथि होगा। इस समय आप 'महालक्ष्मी साधना' सम्पन्न करें। तिथियाँ - १, १२, २८

न्योतिथि की दृष्टि से जून - २०००

माह के पूर्वाह्न में सूर्य, मंगल, बृह और शुक्र एक ही राशि पर स्थित होने से व्यापार क्षेत्र में विशेष उन्नति होगी वही राजनीतिक सत्र पर उ. प्र. एवं विधार में स्थिति प्रणिकूल रहेगी इसके साथ ही डिलिङ अमेरिके राष्ट्रों में सत्ता परिवर्तन योग है। देश में अकाल स्थिति से राहत प्राप्त होनी मुद्रा बाजार में भारतीय मुद्रा के लिए योग अनुकूल नहीं है। पश्चिमी राष्ट्रों में व्यापक अंदोलन होते हैं।

कुम्भ

(गु, ले, लो, जा, सी, सू, से, सो, ला)

आप स्वाभाव से बहुत ही खोले हैं, दस्तिए लोग आपको अपनी बातों में फ़सालर आपसे दूर कार्य करा रहे हैं और आपको पता भी नहीं चलता। आपके बिनेस में क्या लाभ होता है तुम्हाको नहीं मालूम चलता, दस्तिए अपनी आदतों को बदले, सूक्ष्मवृद्धि से सभी कार्य निपटाएं, किसी कोरे कानाज पर बिना पढ़ हुए साइन होनी चाहे, मित्रों से सावधान रहें कुछ बात जरूर बक्तव्य हैं। श्रमिक वर्ग के लिए समय सामान्य रहेगा, कुछ बिनेस ने उतार चढ़ाव रहेगा तथा घर परिवार में प्रसन्नता का बातचरण रहेगा। किसी नये महमान के आने से घर में खुशी की लहर रहेगी, इस समय का साक्षी उपयोग विद्यार्थी लोग करेंगे तो उन्हें सफलता मिलेगी। इस समय आप 'शुक्र यह साधना' सम्पन्न करें। अब यह ही सफलता मिलेगी। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - ८, १६, १९, २२, २८.

मीठ

(ली, दू, थ, झ, झे, झो, या, वी)

परिवर्तन ही जीवन की गति है और इसे सहर्ष स्वीकार करने वाला व्यक्ति ही सफल होता है। आशा है, जाप भी इसे सहजता से स्वीकृति प्रदान करेंगे, धन के आने और जाने दोनों का मार्ग सुला रहेगा। तनाव को न धारण करें अन्यथा यह शात्रु बन आप पर ही हमला करेगा, शीघ्र से शीघ्र इसके निवान होता है। नित्य मुख पूजन सन्न्यज्ञ करें या दुर्लभोपनिषद की केसेट को घर में नित्य सुनें। समय के पैर के साथ आप कुछ ज्यादा ही उतार-चढ़ाव अनुभव करेंगे, अतः भावुक न जानें। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय बहुत ही अच्छा है। इस समय का उपयोग अपने पढ़ाई ने करेंगे तो सफलता प्राप्त होगी। इस माह की तिथि - १, ४, १२, २०, २६, हितकर होगी।

हुस मास के ग्रह पर्व एवं त्योहार

16 जून	- न्येष शुक्र शुक्रवार सत्त्वनाराय ब्रह्म, पूर्णमासी
18 जून	- आशाव बृह्ण पक्ष शीरामत्थउत्सव
20 जून	- जा, कृष्णपक्ष मंगल गोपीश अवर्ती
28 जून	- आ, कृष्ण पक्ष बुधवार योगिनी एकावशी,
29 जून	- आ, कृष्ण पक्ष गुरुवार प्रदोष ब्रह्म
1 जुलाई	- आ, कृष्ण पक्ष शनिवार उन्नेश्वरी अमावस्या
3 जुलाई	- आ, शुक्र पक्ष सोमवार चन्द्रवर्द्धन,
12 जुलाई	- आ, शुक्र पक्ष बुधवार देवशत्यनी एकावशी
14 जुलाई	- आ, शुक्र पक्ष शुक्रवार प्रदोष ब्रह्म
16 जुलाई	- आ, शुक्र पक्ष रविवार गुरुपूर्णिमा, अनन्दगहण

शक्ति मान आश्यानि मान-प्रति जागरण से, उनकी समरता तक समर करने वाला उपासना सुख के बारे करें या साधक कहा गया आश्यानि भगवती निली देव भगवान ब्रह्म शुत्र त्रैलकाम नामक आपने

शुभनेश्वरी स्तोत्र

भगवती भुवनेश्वरी दस महाविद्याओं में अन्यतम शक्ति मानी गई है जिनकी कृपा प्राप्त होने पर भौतिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता स्वतः ही प्राप्त होती है, धन धान्य, यश, मान-प्रतिष्ठा एक पक्ष है, दूसरा अध्यात्मिक पक्ष कुण्डलिनी जागरण आदि है जिसकी वे साक्षात् स्वरूप हैं उनकी उपासना से, उनकी कृपा प्राप्ति के बाद स्वतः ही मनुष्य के अन्दर स्थित समस्त ऊजाएं स्फुरित हो जाती हैं तथा मूलधार से सहचार तक समस्त चक्र उद्भूत हो जाता है आत्मज्ञान की कामना करने वाले व्यक्ति को भगवती परामर्श शक्ति भुवनेश्वरी की उपासना अवश्य करनी चाहिए क्योंकि अन्य देवी देवता भौतिक सुख के बाद कोई आवश्यक नहीं आध्यात्म शक्ति को भी प्रदान करें या कुछ देवना ऐसे हैं जो केवल आध्यात्म की ओर ही साधक को अग्रसर करते हैं किन्तु भगवती भुवनेश्वरी के लिए कहा गया है कि भोगस्त्र मोक्षस्त्र करस्त्रेव भौतिक और आध्यात्मिक सुख दोनों जिसके हाथ में विराजमान हैं ऐसी भगवती परमाराध्य है।

निलोक्यसंगल भुवनेश्वरी कवच

देवी वाच्य

भुवनेश्वरी देवेश द्या द्या विद्वा: प्रकाशिता:
भुताश्वादित्ताः सर्वा: श्रोतुमित्तामि चाम्प्रतम् ॥१॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं वृत्पुरोदितम् ।
कथ्यस्य महावेदं मम प्रीतिकरं यस्मद् ॥२॥

देवी पावती ने भगवान शिव से कहा — हे देव, आदि देव भगवान शंकर आप ने भुवनेश्वरी देवी की जी विद्याएं मुझे बनाई हैं उन्हें मैंने सुना और समझा। अब मैं निलोक्यसंगल नामक भगवती भुवनेश्वरी कवच को सुनना चाहती हूं जिसकी आपने चर्चा की थी। आप कृपा करके मेरे लिए उस कवच का

प्रगतिकरण कीजिए।

पार्वति शृणु वक्ष्यामि । सरवधरजायधारण ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मंत्रविश्वरूपम् ॥३॥
सिद्धविद्यामवं देवि सर्वेश्वर्य लम्बितम् ।
परत्राद्वाशणान्मत्त्वेष्टत्वेष्टव्येश्वर्यभागमयेत् ॥४॥

हे देवि पार्वती! साधान होकर के सुनो और समझो यह मंत्र विश्वह युक्त विलोक्यमाल नामक कवच तिक्त विद्याओं से युक्त है तथा सभी ऐश्वर्यों से पूर्ण है। जो मनुष्य इस कवच का पाठ करता है वह मनन करता है विलोक्य सम्पद को वह प्राप्त करता है।

विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण कीजिए —

ॐ उत्सव श्रीभुवनेश्वरी त्रैलोक्यमङ्गलकवचस्य
शिवज्ञापि: विशाट उन्नः वज्रद्वात्री भुवनेश्वरी देवता
धर्मर्थकाममोक्षार्थं जपे वित्तिवोजः ।

इस कवच के शिव कष्टि है, विशाट उन्नव है, जगदम्बा भुवनेश्वरी देवता है, धर्म, अर्थ, काम और भोक्ष की प्राप्ति के लिए इसका जप किया जाता है।

ऋच्यादिन्यास्त्र

निम्न संदर्भ वाक्यों का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ की उगलियों से भिन्न-भिन्न जग्नी का स्पर्श करें।

शिवकवचवे नमः शिरसे । विशाट्खल्लवसे नमः मुख्ये ।
भुवनेश्वरी देवतादेव नमः हृषि । विजित्योजनव नमः
सर्वाङ्गः । इसि ऋच्यादि नवासः ।

हो बोक्तं से शिरः पातु भुवनेश्वरी लक्षणकमः

ऐं पातु दक्षजंत्रं से हीं पातु वामलोचनम् ॥१॥
भुवनेशरी के ऐं बीज मेरे वाएं नेत्र की तथा हीं बीज
मेरे बाये नेत्र की रक्षा करें।

श्री पातु दक्षकर्ण मेरे विवर्णत्तमा सहेश्वरी ।
वामकर्ण लदा पातु ऐं प्राणं पातु मैं सदा ॥२॥
श्री बीज मेरे दाहिने कान की, त्रिवणा महेश्वरी बाये
कान की तचा ऐं बीज मेरे नाक की सदा रक्षा करें।

हीं पातु वडलं देवि ऐं पातु रसलां मम ।
वामपुटा च विवर्णत्तमा कण्ठं पातु परालिमिका ॥३॥
हे देवि, हीं बीज मेरे मुख की रक्षा करे ऐं बीज मेरी
जिवहा की, त्रिवणा परम्बीका मेरे कठ की रक्षा करे।

श्री लक्नधी पातु जिवतं हीं भुजों पातु लर्वदा ।
वल्लों करों त्रिपुरों पातु त्रिपुरेश्वर्यवर्णिनी ॥४॥
श्री बीज मेरे दोनों काथों की रक्षा करे, हीं बीज दोनों
मुनाओं की रक्षा करे, कों बाज दोनों हाथों की रक्षा करे तथा
प्रेतवर्यवायिनी त्रिपुरेश्वरी त्रिपुरा की रक्षा करे।

उ० पातु हृष्वं हों मे मध्यपदेशं सदावतु ।
क्रों पातु लाभिदेशं मे उत्पत्तरी भुवनेश्वरी ॥५॥
उ० मेरे इवय की रक्षा करे और हीं बीज मेरे कटी
प्रदेश की देखभाल करे। क्रों बीज युक्त त्रिवक्षरी भुवनेश्वरी
नामि स्थान की रक्षा करे।

लर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु लर्वदशङ्करी ।
हीं पातु युक्तपदेशं मे नमोभगवतो कटिम् ॥६॥
सर्वबीजा सबको वश मैं करने वाले मेरे पृष्ठ देश की
रक्षा करे हीं बीज मेरे गुह्य देश की रक्षा करे तथा कटी प्रदेश
की रक्षा करने वाली भगवती भुवनेश्वरी को मैं नमस्कार करता
हूं।

सहेश्वरी सदा पातु शंखिनी जानुवुग्मकम् ।
अङ्गपूर्णा लदा पातु स्वाहा पातु यदद्रवम् ॥७॥
महेश्वरी मेरी सदा रक्षा करे और शखनी मेरे दोनों
घुलनों की रक्षा करे। अङ्गपूर्णा मेरी निरन्तर रक्षा करे तथा
स्वाहा मेरे दोनों पेरों की सुरक्षा करे।

समदशाक्षरी यथादश्यपूर्णिष्वत् यतु ।

४ 'ज्ञ' 2000 मन्त्र-तत्र-यत्र विज्ञान '78' ४

तारं मावा रमाकामः शोदशार्णा ततः परम् ॥८॥
समदशाक्षरी अङ्गपूर्णा मेरे सारे शरीर की रक्षा करे
घोडश अश्वर वाली विष्णुप्रिया माया मेरी चारों ओर रक्षा करे

शिरः स्था सर्वदा पातु विशत्यगर्त्तिमिका परा ।
तरां दुर्ज्ञं वुजं रक्षित्योर्दशाहे तिदशाक्षरी ॥९॥
शरस्या सदा मेरी रक्षा करे, विशत्यग्नि ऊचे स्थान
मैं रक्षा करे, स्वाहा नाम वाली वशाशरी मेरी कठिन स्थानों में
रक्षा करे।

ज्यदुज्ञा ज्यमश्यमर पातु मां लर्वतो मुदा ।
मायावीजपरिका चैषा दशार्णा च ततः परा ॥१०॥
ज्यामवणा वाली जयदुर्गा चारों ओर से मेरी प्रसन्नता
से रक्षा करे, माया बीज युक्त दशाणा दूर दूर तक रक्षा करे।

उत्तमकञ्चज्ञाभरता ज्यदुज्ञाऽऽन्नेऽवतु ।
तारं हीं दुं च तुर्जयै ज्यमेऽष्टार्णित्यिका परा ॥११॥
उद्दिस सोने के समान आमा वाली भगवती जयदुर्गा
मेरे मुख की रक्षा करे, हीं बीज दुं बों न युक्त अष्टरना भगवती
को मेरा नमस्कार है।

शङ्कचक्र यनुवाणिधरा मा दहिणेऽवतु ।
महिषमर्विनी स्वाहा वसु वण्टिमिका परा ॥१२॥
शंख, चक्र, धनुष और बाणधारी दहिण दिशा मैं
मेरी रक्षा करे, महिषमर्वी स्वाहा नामक भगवती वषु सब
ओर से मेरी रक्षा करे।

त्रैश्वर्यां सर्वदा पातु महिषालुपलवितो ।
मावा यदावती स्वाहा स्मार्ण्य परिकीर्तिता ॥१३॥
महिषासुर धानिनी नेकित्य दिशा मैं मेरी रक्षा करे
जिन्हें माया पदमावती स्वाहा और समार्णा कहते हैं।

यद्यावती यद्यसंस्था पश्चिमे मां सवाऽवतु ।
पाशाकु शपुटा माथे ति परमेश्वरी स्वाहा ॥१४॥
कमल पर बैठी द्वई भगवती पदमावती पश्चिम दिशा
से निरन्तर मेरी रक्षा करे, पाश अंकुशधारिणी महामाया हैं
परमेश्वरी मापको नमस्कार है।

प्रथोदशार्णा ताराया अश्वाखडाऽन्नेऽवतु
सरस्वति प्रज्वस्वरे नित्यविलङ्घे सदद्वये ॥१५॥

वयोधृष्णार्ण तारा आदि रथसोधन द्रुक् शश्व पर
तिरानमान भगवती मेरी जाग से रक्षा करें, पांच भवरो बालों
वयापुरा भगवती चरस्त्रती मुहूर पर दरित हों।

स्वाहा वस्वक्षरी विद्या मामुत्तरे लदाऽवतु ।
तायं मात्या च कवचं रथे रथोत्सततं यद्युः ॥१६॥
वक्षस्यरी स्वाहा नाम बाली भगवती विद्या उत्तर
द्विः ॥ मे देरी रक्षा करें, आकाश में कवच के समान निरन्तर
मेरा पत्नी की रक्षा करें।

हृ थैं ही फट महाविद्या द्वादशाण्डितप्रदा ।
त्यस्तिरात्माभिः यात्राच्छिवकोणे स्वाहा च मामृ ॥१७॥
हृ खोड़ो और फट दीज युक्त महाविद्या द्वादशा आर्णा
जो सभी ऐवर्य की देने वालों हैं शीघ्र हो पूर्व इशाओं में आठ
वलुओं से मेरी रक्षा करें।

ऐ वतो ल्लोः सततं बाला मुदुदेशे ततोऽवतु ।
रिदुन्ता भेषवी बाला हल्तो च मां लदाऽवतु ॥१८॥
ऐ कली सोः बोज युक्त बाला मेरे मणिषाङ्क मुर्धा प्रदेश
की रक्षा करें, भर्वो बाला मेरे दोसों हाथों की निरन्तर रक्षा
करें।

इति ते कथितं पुण्यं ब्रेतोऽवसद्गलं परम ।
नारात्मास्तरं पुण्यं महाविद्यौ द्विजहम् ॥१९॥
हे वेदि पावती यह विलोक मग्न कवच तुहरे लिए
करो है। वह सबका सार है, पुण्यमय है तथा महाविद्याओं में
सारभूत है।
अस्वायि पठनात्मायः कुर्वेदोषि धनेश्व्रवस् ।
इन्द्रद्वयः सकला देवा धारणात्पठनायतः ।
सर्वसिद्धिश्वसा लक्ष्मी रथेऽवर्यवाप्तुः ।
युध्यात्मन्त्वश्चक उद्यानमूलनैव पुरुषकपुरुषक ॥२०॥
इस कवच के पाठ से कबेर शीघ्र ही अनपनि बन गया
हन्दू जाए देवना इस कवच के पाठ से और धारणा से सब
सिद्धियों के स्वामी बन गये तथा सभी ऐवर्यों को प्राप्त किया
हर मूल मंत्र ऐ मिह-गिल आठ पुष्पानंली देनी जाएँ।

संवत्सरकृतावरस्तु पूजावा, कृतसाम्नुवाह ।
श्रीतिमन्त्रोऽन्यतः कृत्वा कमला जिश्वला यहे ॥२१॥
ऐवर्य कलने से मनुष्य एक वर्ष की पूजा के फल को
प्राप्त करना है और पररपर प्रेम वक्त होकर लक्ष्मी। उसके द्वारा

मेरे स्त्रियों हो जानी है।

याणी च लियसेदुक्ते सत्यं सत्यं न लंशतः ।
यो धारयति पुण्यात्मा ब्रेतोऽवसद्गलापिधम् ॥२२॥
जो पुण्यात्मा पुरुष इस निलाक्ष्य मंगल कवच को
धारण करता है उसकी जापी में निष्ठय हो सत्य का वास
होता है।

कवचं परमं पुण्यं लोऽपि पुण्यवत्तं यदः ।
सर्वेऽवर्यद्युतो भूत्या ब्रेतोऽवसद्गलापिधम् ॥२३॥
इस विवेचन कवच को जो धारण करता है वह पुण्यवागों
में ऐपु और सभी ऐवर्य से पुक्त होकर विलोक विजयी बनता
है।

पुरुषो विलिणे बाहो जारी वामभुजे तथा ।
वह पुण्यवत्ती भूत्यादुक्तायामि लभते सुत्तम् ॥२४॥
इस कवच को पुरुष विलिणे बाहु में तथा नारी वाम
भुजा ने धारण करें। इस कवच को धारण करने से ब्रह्मा स्त्री
गी अनेक पुत्रावती होती है तथा पुरुष भी कई पुत्रों का पिता
बनता है।

ब्रह्माद्यादोजि अस्त्रजाणि लैव कुरुतवितं तं जनए ॥२५॥

ब्रह्माद्य आदि भी उस पुण्य
को नहीं काट सकते जो इस कवच को धारण करता है।

एतत्कवचमज्ञात्वा यो भजेदभुवजेश्वरसेम् ।
वापिद्वयं परमं प्राप्य भोऽविश्वलमन्त्युमाणुचतुः ॥२६॥

जो व्यक्ति इस ग्रन्थेश्वरी कवच के महान्व को बिना
जाने पाठ करता है वह व्यक्ति भी नदिता से मुक्त हो जाता है
तथा अकाल मृत्यु से उसकी जाग होती है।

यदि आपको लगता है, कि त्रिष्णु कार्य
के लिए आपने साधाना की थी, वह पूरा हो गया
है, तो वह भी अनुभूति है, वयोऽपि आपने उस
कार्य को पूर्ण होते स्वयं अनुभव किया है।
अनुभूति का अर्थ आत्र देव दर्शन अथवा
प्रत्यक्षीकरण से ही लगा लेना उचित नहीं है।

गुरुद्वारा फिल्मी

विस्थृति पर सैकड़ों प्रबोध और धर्मात्मक दीक्षाएँ
समझ हो चुकी हैं। उस लिए ऐतिहासिक घृणि-

पर ही दिल्ला साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं दिल्ली के लिए यह योजना महरम हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'शिवायक' ने पूज्य गुरुद्वारे के निवेशन में ये साधनात्मक पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती है, जो कि उस दिन शाम 7 बजे 9 बजे के बीच सम्पन्न होती है और यदि भ्रष्टा व विश्वास हो, तो उसी दिन रो साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधकों को यह पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निशुल्क उपलब्ध होती है (धोती, तुफान और पंचपात्र अपने साथ में लावे या न हो, तो यहाँ में प्राप्त कर ले।

उन लोगों पर लाभ होते जाएंगे जो लिए जिन विषयों का साधन लें

- आप अपने किसी दो नियों अथवा सूजों को (जो उन्हियों के सदरम नहीं हैं) मन्-तत्-यज्-यज् विज्ञान निकाल का दैर्घ्यक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुद्वारा में सम्बन्ध हैं वले किसी एक द्वयों ने भाग ले सकते हैं। प्रतिका वी सदस्यता का एक ठीक शुल्क रु 225/- है। परन्तु आपको माझे रु 438/- ही ज्ञान कराने हैं। प्रयोग से राष्ट्रविद्यात् विशेष मन्-यज् विज्ञान, प्राण-प्रीतिविद्या सामग्री (थव शुद्धिका आदि) आदि के निशुल्क प्रदान की जाएगी।
- गढ़ि आप प्रतिका रुदस्य नहीं हैं, तो आप खेड़ तथा अपने किसी एक नियों के लिए प्रतिका विशेष सूदलता प्राप्त कर उपरोक्त किसी राष्ट्रविज्ञान में भाग ले सकते हैं।
- प्रतिका सदस्य बनाकर आप किसी एक प्रतिवाप को क्रौंचि पर-पदा के हस्तान साधना। भले हाल यहाँ तो जीड़कर एक युनीत एवं पुश्यद्वार्यों के द्वारा दृष्टि आपके प्रयोग से एक एविजार में अथवा कुछ प्राणियों में हश्यरीय विषत्य, स्थिरात्मक दिनुका जा गया है, तो यह अपने जीवन की सफलता की प्रतीक है। उपरोक्त द्वयों तो सर्वदा निशुल्क हैं जीरु गुरु कृपा द्वारा ही गुरुद्वारा रपला साधकों को प्राप्त होते हैं। प्रयोगी छोटी चोटी का दूषण के तरजुओं में नहीं जील सकते।

• 'जूल' 2000 मन्-तत्-यज् विज्ञान '88'

23.6.2000 शुक्रवार

खालीकाल पर जीवन की विधान

उनम् काव्य और स्वास्थ्य जीवन में संबन्धित आवश्यक है। मनुष्य जीवन में दौर तभी दोनों के सहयोग से ही भविशाल होता है, दोनों में से किसी एक का भी सन्तुलन विगड़ जाए तो वही रोग कहलाता है। जीवन की व्याधि हो, तो उसके लिये चिकित्सकों के पास उपाय है, परन्तु यदि उन उपायों के उपरान्त भी कोई लाभ नहीं है, तो फिर कर्मगत वीष आड़े आते हैं, जिनका उपाय साधना द्वारा ही किया जा सकता है। आवश्यक नहीं कि रोग शारीरिक ही हो, जीवन में उत्साह की कमी, विडियोगमन, क्रीध, यकान, कापरणा, पीसपता की कमी, ये सब भी रोग होते हैं जिनका निदान भी इसी कायाकल्प साधना द्वारा सम्भव है।

शारीरिक और मानसिक सबलता और पुष्टि अर्थात् मन एवं तन दोनों को ही वैतन्य करने की यह साधना है। इस साधना से जहाँ स्वास्थ्य का प्रयोग सिद्ध होता है, वहाँ मन में विरन्नर प्रफुल्लता, जीश, आज्ञा एवं हिम्मत का संचार होता है, आत्मविश्वास का संचार होता है, जिसके द्वारा स्वतः ही कई रोग समाप्त हो जाते हैं।

प्रतिका द्वारा 'मुख्यसंस्कारी महाप्रिद्वा दोषा' के बारे में १३ और १५ जूल तक हो

आप चाहें तो विधारित विकल्पों से पूर्व ही जगना कोटी एवं न्यौछ वर गणि का नेक इन्स्टर ('मन्-तत्-यज् विज्ञान' के नाम से) ध्येयकर भी इन विवरों पर लेने वाली दीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। जापका कोटी एवं पाच सूक्ष्मों के परे दिल्ली कायाकल्प को सम्पर्य पर प्राप्त हो सके, इस हेतु आप अपना पर स्पीष्ट वास्तव द्वारा ही भेजे विज्ञानपत्र से मिलने परायाका सापेक्ष न दिल्लीमार्ग।

है। ये पर
करते हैं
सम्प्रदा
बंजारों
पर्से दु
टोटके
बाल्य
स्वास्थ्य
अपाव

25.6.2000

है और उस
की प्रतिकृ
वर्तमान भी
उत्साहवर्ध
आदि आप
साधक यह
लाभ उठा
मगलकारी
प्रयोग सम
भाग्योदय

* दीक्षा आज
आये हैं उपर
कर लेने का
अद्वैतगति
जातुलबोध वर
प्राप्त कर ले
प्राप्त कर ले
* गुरु प्रबु
का द्वेष यह
निष्पत्ति प्राप्त
सापेक्षा और
एक लालू आप
* दीक्षा में भी
का जल से
उपराजन तिथि
आएगा। यह
साथ ए दृजे
के उपराजन
किए। जापूर
रसायनक

जावर मंत्रों की शक्ति और तोड़ प्रभाव के बारे में सर्वो जानते हैं। ये ऐसे मंत्र होते हैं, जो अटपटे और बेढ़गे से, परन्तु अपर ऐसा करते हैं, जो कि भच्छे-बच्छे वैदिक मंत्र भी नहीं कर पाते। नाथ भग्नादाय के योगियों के मध्य जावर मंत्रों का विशेष प्रचलन है। बंजारों की तरह घूमने-किरने वाले इन नाथ योगियों के पास ऐसे-ऐसे खुलीभ मंत्र होते हैं, लक्षणों को आवश्य करने के ऐसे ऐसे अचूक टीटों के होते हैं, कि लक्षणों को साधक के घर में वास करने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है। यह प्रयोग ऐसा ही प्रयोग है, जिसमें लहमी स्थायी रूप से साधक के घर में वास कर सके और जीवन में आर्थिक अभाव जैसी स्थिति पुनः व्याप्त न हो।

25.6.2000 शतितार अह बाधा निराकरण प्रयोग

यह उंचवर को विद्यान है कि समस्त जाग और हानि यहों के अधीन है और इमीलिंग अनुकूल यह होने से जाग या अनुकूल सफलताएँ और यहों की प्रतिकूलता पर दुष्परिणाम भोगने ही पड़ते हैं। नक्षत्र पथ पर यहों की वर्तमान गति भीषण विचरित्रों का संकेत देती है। नये वर्ष का प्रारम्भ भी उत्साहवर्धक नहीं कहा जा सकता। इस वर्ष जनरुग्यहीं, पंचयती, पष्ट यहों आदि आपसि जनक कृयोग अनेक अवसरों पर उपस्थित होने जा रहे हैं। साधक ग्रहण को उपयोग सुअप्सर मान कर भी साधना सम्पन्न कर दूरा-पूरा जाग उठा सकते हैं। २५ जून को ऐसे योग हैं जब हस्त नक्षत्र, सिद्ध योग, वंगलकारी चतुर्थी है। इस दिन स्वर्य पर्याय दूर्युग्म देवता यह योग निवारण प्रयोग सम्पर्क करने जा रहे हैं। इस अवसर का जाग उठना निश्चय ही धार्योदय कारक है।

- दीक्षा आज के दुश्मनों ने एक प्रामाणिक उपाय हो राखला कि उच्चाहृणों को प्रकृत कर लेने का, जीवन के अलावा को, अत्यरिक्त जो दूर कर देने का, जीवन में अप्रृत्यनीय छाल, साक्षम, पौरुष एवं शीर्ष प्राप्त कर लेने का, साथला नैं लिए प्राप्त कर लेने का।

- नमून प्रवर्त श्रियोगात् द्वारा शिव जिस क्षर्ते लेनु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें लिपुष्टा प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह अपराजित और बेड़ता प्राप्त करते का एक लक्ष्य उपाय है।

- दीक्षा में जाग लेने वाले सभी साधकों का जल से अमृत अविषेक करने के अपराजित उत्तीर्ण श्रियोगात् प्रकाल लिखा गया है। यह दीक्षा इन तीर्णों द्विजों को जारी रखे प्रदान की जाएगी। दीक्षा के उपराजन उक्त उपजीवी भेद प्रदान

योजना के बाल इन ३ दिनों के लिये
दिनांकी पांच व्यासिकी
के वार्षिक लक्षण बनाकर
उत्कृष्ट लक्षण पते जिल्हाया वर्ष
उपज्ञाएँ द्वयस्त्र द्वे दीक्षा आप
जि शुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएँ

श्रुतिप्रवर्ती दीक्षा

225/-

-Rs. 1125/-

रौप्यवान् विद्युतीय बुद्धि

जीवन में सौन्दर्य का पूर्ण समावेश

संसार का हर प्राणी सौन्दर्य प्रिय होता है इसलिए अपने आप को सुन्दरतम बनाने के लिए सतत प्रयासरत रहता है क्योंकि सौन्दर्य के बिना जीवन महत्वहीन हो जाता है व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक पारिवारिक और हर स्तर का जीवन सौन्दर्य के बिना शुष्क और निरथक हो जाता है यदि जीवन में सौन्दर्य न हो, हास्य न हो, उमंग, आहलाद, प्रसङ्गता न हो, तो जीवन बोझिल, नीरस और शुष्क हो जाएगा। ऐसे जीवन को दिन-प्रतिदिन करके कठाटा जा सकता है, जिया नहीं जा सकता। यदि आपके जीवन में सौन्दर्य का समावेश हो जाए, जो सौभाग्यवाहक हो, तदमी प्रदायक हो और जीवन में पूर्णता, खौबन, स्वास्थ्य एवं उच्छ्रित प्रदान करने में सहायक हो, तो क्या आप उसे रखीकर नहीं करेंगे? और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं इस दिव्य मुद्रिका के रूप में, जिसे आपको पूजन स्थान में रखना है सब महीने और पिछे इसकी तेजस्विता को प्राप्त करने के प्रश्नात दान में दें देना है। इसी उद्देश्य को लेकर पूज्य गुरुदेव के द्वारा इस मुद्रिका का विधिवत् निर्माण किया गया है।

जीवन का लार्वशेष दान — 'जान दान'

जान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त जरूरी देने में, जन्मतांत्री में, समारोहों में, उमड़न कार्यों में, दृश्यों को, निर्मन परिवार को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ग्रन्थ के ग्रन्थालय द्वारा बोधी दी जाएगी। यह उमड़न की विधि वाली एवं उमड़न की विधि वाली विद्या है। इस उमड़न को जीवन का लार्वशेष दान कहा जाता है।

आप चाहता हैं?

आप केवल एक पत्र 'संतान पेस्ट्रिकार्ड ब्रांग्राम 3' भेज दें, कि 'मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंजाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क 'भ्रतसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका' 365/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिका के 300/- + डाक व्यय 65/-) की बी. पी. पी. से विज्ञवा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। बी. पी. पी. छुटने के बावजूद 20 पत्रिकाएं निस्टर्ट लाक छाता भेज दें।' उपरका पत्र आपे पर 300/- + डाक व्यय 65/- = 365/- की बी. पी. पी. आपे को भ्रतसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित सौन्दर्योत्तमा दिव्य मुद्रिका' गिजवा देंगे, जिससे कि आपको तह तुरन्त उपहार सुखित रूप से प्राप्त हो सके। बी. पी. पी. छुटने पर आपको 20 पत्रिकाएं मैं बी. पी. पी.

स्वस्थरहित अपना पत्र जोशापुर के पते पर भेजें।

मत्र-तत्र-सन् विज्ञान, ज. श्रीनाली मार्ग, हाईकोट ऑलोनी, लोधपुर - 342001, (राज.)

फोन - 0291-432209, फैक्ट्री फोन: 0291-432010

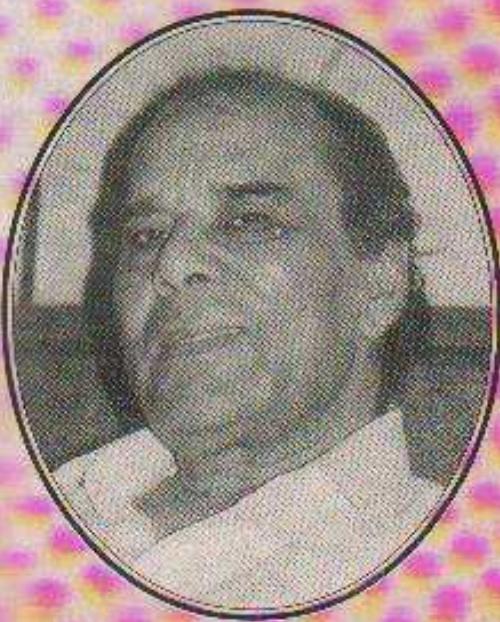
Martra-Tatva-Yantra Vigyan, Dr. Shirishali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.). India. Phone: 0291-432209

STYLING YOUR INTERIOR

सद्गुरुदेव ने बहुधा इस बात को धिक्षियों के मध्य कहा है - एकजना परा सम्बन्ध कोई आज-आज नहीं छोड़ते वर्षों तक ही उपर्युक्त सम्बन्ध प्राप्ति की गयी अवधि है आज्ञा का सम्बन्ध है, जो अपने न तो त्याग में याँच ले, न पुल दें, न भैंग रिहावां दो। ग्राणों के ये सम्बन्ध शाश्वत होते हैं, ऐसे सम्बन्धों को यदि छोड़ दिया जाता है, तो इष्ट को उपछावार से, उन्नतर की पुकार से और अपने प्रेम, समर्पण व अद्भुत से भरी अंनलि द्वारा दिखा जाना है।

शिला कदाचित गूर्न से दोषा समव खे हा गूर्न महो
सेता उन वह तो नियो प्रस का दोता ह इसमे गूर्न भा
शुभ र धन्वन्ति ह अप्य को भी चोला बदलना पठन्त ह शोर
इन्हें मे गूर्न विष्य का गिलन हेता ह और गूर्न गिलन
होता ह तदा लिंगों भी होता ह एव वह मिलन ओर विठों
विठों स्तर पर ही होता है आप्य के स्वतन्त्र ने विठों
विठों द्वारा नहीं होती।

३ नुलाई का यह दिवस शिष्यों के लिए एक पुण्य निथि की तरह है, जिसमें शिष्य सदगुर भरणे में समर्पित होता हुआ अपनी श्रद्धा को अपित करता हुआ संकलन लेता है, जिससे भवय सुखा तिर चिकास गे आपके लिये औ उपरांत भवा ध्वन कृतधर्म किया जे उसी प्रकार आपको विद्यारथ लेता है, जिसपर याची जो शरण हो जाएगी वह एक दिवान करना आपके अवज्ञनों का बन-



प्राचीन एवं प्रतिक्रिया के द्वारा अस्तित्व को बनाया जाता है। इसपर
महान् लिखक उत्था यां प्रतिक्रिया मार्गदर्शन का लगातार सं

शिष्य का चाहिए कि उस पूजन का सम्पन्न कर, जो कि इस विशेष दिवस के लिए ही उपयुक्त है।

पूजन विधि

प्रातः स्नानादि के बाद चिन्मात्रम् दिशा उत्तर की ओर मन्त्र कर बैठे व आमने पूजन हेतु गुस्से विवर स्थापित करें।

परिव्रीकरण

बार छाया ने जल लेकर दोष छाया से शास्त्रे शरीर पर ऐसे पूजन की सभी सामग्री पर जल छिड़के—

उपविष्ट दक्षिण व अथासद्या दक्षिण वा
य उत्तरास्त्र और काशी या बहुत जल लवि—।

इसके बाद छाया में जल लेकर निम्न सब बोलने हुए तीन बार जल छिड़े—

अ॒ त॑ त॒ त्रायम् त॒ त्र॒ शोश्यामि त्र॒
उ॑ त॒ त॒ त्र॒ त्र॒ शोश्यामि त्र॒ ।
अ॒ त॑ त॒ त्र॒ त्र॒ शोश्यामि त्र॒ ।

संकल्प

उ॒ विष्णु विष्णु श्रीमद्भगवतो महायुक्षस्य
विष्णोराज्ञाया प्रवर्त्तमात्म्य श्री प्रक्षण द्वितीये पराये
श्रीव्येत्याराज्ञकल्पे कलियुजे जम्मुडीये एष्यक्षेऽभ्युक्त
गोऽर्थ (अपते जो य का उच्चारण) अभ्युक्त शमर्त्तनं
(जाम) अन्मोक्षपर्यव्र विवेन गुरु द्वय रथायत्त
विमित्तम् विभिष्ठ यजाम स्मर्त्तने।

विष्णु नाम उत्तर

गमने वाजाने के उपर स्वरूप या बिना इन विभिन्न धारणा गुरु के उत्तराने पर उत्तर, तिन मोलह स्थानों पूजन की गमने में स्थापित होंगे एक-एक उच्चारण के साथ क्रम से भाएं से रखते जाएं।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	स्थाप्यत्वामि	तृतीय
विष्णुमि	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णु	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णुत्तर	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णुत्तर	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णु	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णुत्तर	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णु	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णुत्तर	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णु	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒
विष्णु	त्र॒	त्र॒	प्रथापद्मामि	त्र॒



त्र॒ विष्णुमि त्र॒ विष्णुमि त्र॒

प्रथापद्मामि त्र॒ विष्णुमि त्र॒

विष्णुत्तर त्र॒ विष्णुमि त्र॒

विष्णु त्र॒ विष्णुमि त्र॒

इसके बाद स्नान, तिलक, अम, शेषक व पुज्य में
शोद्धा गुरुओं का सामान्य पूजन करें।

गुरु कृति

इसके बाद किसी दूषपर चोकी पर गुरु जी का चित्र
प्रथमित करें और उन पर निम्न मंत्र द्वारा बोलने हुए आक्षर (चक्कल)
बहाने हुए प्रण प्रतिष्ठा करें।

ॐ अर्द्ध त्रिलोक प्रण इति नमः ॥

ॐ त्रिलोको त्रिलोक इति निष्ठेत् ॥

ॐ ही रो वैनिदिकाम ॥

ॐ त्रिलोको विद्युत्सद्वन्द्वाक्षर, ओऽन्न जित्यु भावा
पौष्टि गवायन्दा मिहाग्न्य भव्ये त्रिप्ति भित्तु एवात् ॥

ॐ इति गवायन्दा एवात् गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ जे इति केशर बद्धव गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ त्रि गव धूप गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ गव धूप गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ इति इव धूप गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ इति इव धूप गुरुभ्यो नमः ॥

स्त्री

मिन सन्दर्भ बातों हुए भव वरे कि गरे प्राण, देह,
रेम, इनिगम, कनीन्द्रिय, वाननिदिय साहत मरे चेवा, श्रद्धा,
दिवाल यद्यगुरुदेव के चरणों में नमापित हो —

मर्द धूप द्वा म प्रतिष्ठान बन्दू द्वा अरेज द्वा धूप

पाणि द्वा पायू द्वायामि प्रम इति विष्ट तर्म नम्भूत

शिल्पामां चतुर्लां चतुर्लां लग लम्पायम्भामां ॥

ज्ञाना बोलकर गुरु वरपा में पुष्य बढ़ाए। गुरु मंत्र के
स्वेच्छानुसार ४ मला नव करें और फिर गुरु आरती करें।
इस पूज्य दिवस पर गुरु चित्र के समक्ष किसी ऐसे कार्य के
संकलन लेना चाहिये, जिससे गुरुदेव प्रसन्न हो।



यह महाप्रयाण दिसस दे जो करना आश्वासन
श्रद्धा व प्रेम को ही आनंद करके पण जाता है। इस दूजन में आपको किसी विशेष ज्ञान
मालायी की आवश्यकता नहीं है, प्रत्येक शिष्य
साशक ज्ञा दिग गुरु विन के राम्भुख बैठकर उपने
पुन के भावों को स्वक करें।

* गुरु समर्पण इत्तुति *

* अब सौप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ॥

६ जीत तुम्हारे हाथों में और छार तुम्हारे हाथों में ॥ अब सौप दिया ॥

* भरा निश्चय है बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ॥

अपर्ण कर दूं दुनियां भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥ अब सौप दिया ॥

* जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जन मे कमल का कूल है ॥

भर सब गुण दोष समर्पित हों, भगवान् तुम्हारे हाथों में ॥ अब सौप दिया ॥

* धटि मानव का मुझे जगन मिले, तो तप चरणों पर पुजाए बनूं ॥

इ पूजक की इक छक रम का, हो तार तुड़ारे हाथों में ॥ अब सौप दिया ॥

* जब जब संसार का केदी छड़ा, निष्ठाम भाव से कम बरा ॥

फिर मन्त्र समय में प्राण तज़, साकार तुम्हारे हाथों हैं ॥ अब सौप दिया ॥

* गुडा में तुडा में बस भद्र यही मैं जरूर हुम नारायण हूं ॥

ह संसार के हाथों में, संसार हर हाथों में ॥ अब सौप दिया ॥

स्नाधना शिविर पर्यायी दीक्षा अंगठी

17 - 8 जून 2000

इन्वेट्रोवराननद डॉक्टर लक्ष्मी साधना शिविर

स्थान: पोलायाउन्ड छिन्नवाडा म. प्र.

सम्पर्क: - छिन्नवाडा: - * जशोक नुमान निलो. 07162-42935 * चूपी शनी 47967 * जशोक कट रिया 44151 *

शकर रव तोन्डे 46324 * गोगा प्रसाद नाशवंडी 22460

दमुआ: - बोक फ्लाव 07160-64089 * नी. के. एल बोक्टे 64319 * श्री चौ. वी. डाक्टर 64319 * गोमळ साहू 64126

परासिया: - पंचो उरोस 07161-20733 * रामन राहात

28813 * श्री जय सिंह नीम 20622 * पाण्डुराना: - श्री रमेश ग. नवकर 07164-20798 * यन्नराज गोटगल * अदिल कुमार शनी 28813 * अमरवाल 07167-2445 * अन्जु लता 44150-49040

25 जून 2000

आनन्द गुजरात

शिविर ग्राम्य साधना शिविर

स्थान: अमृतबाडी, गोपी सिनेमा के पास, आनन्द, गुजरात सम्पर्क: - कल्नमाई सोनो 02692-24042 * चुमेल सोनी 0265-644337 * गोदखरी बडाव 0265-791227 *

* गोनन चोकनो 02692-47549 * जवळनो माई * रमेश माई परमान * उत्तम भाई परमार * भरत भाई परमार * बल्लुमाई जाला * उत्तरसिंह जाला * रमेश ईपाटिंग 02637-58188

9 जुलाई 2000

कट्टवा म. प्र.

भगवतीकुमारी अष्ट इमो साधना शिविर

स्थान: नगरनिगम कम्युनिटीहाल नगरनिगम कट्टीनी सम्पर्क: - * श्री दुलारि सिंह * अशोक शियाठी * वी. वी. नेस्याल 57380 * डी. बी. लिह 51621,22. * वी. वी. वे. लोडान 59717 * डी. छोपाल खिंड

14-15-16 जुलाई 2000

इन्वेट्रोवर

गुरु पृथिवी साधना शिविर

स्थान: के. पी. इन्टर कालेज मेदान पर्म, जी. रोड बलाहावाड सम्पर्क: - * श्री एस. वे. सिंह 0532-501551 * वालिय पांडे 0511-220011 * डी. ग्रोवर कुमार यात्रा 0532-636029 * आम प्रकाश श्रामानी 0532-407092 * आर. पी. शनी 609596 * ए. ल. शनी 440792 विस्तृत जानकारी कवर पेज के पीछे दी जा रही है।

22-23 जुलाई 2000

मुम्बई

दस मार्गविद्या साधना शिविर

स्थान: आनीवासन होल, एस. एन. डी. टी. कूमार्स कालेज के पास नुहातारा रोड, सान्ताकुन पश्चिम मुम्बई

सम्पर्क: * ननेश मेशा 8050323 * गणेश लिल 4313992 * फ्रेड्रेमनानी 4929090 * डॉरेसन पांडे 8862409 * भाल्करन 911-604702 * निला नाई 912-412166 * अंगोक भाई 4963617 * बल्लेश नई 8189684

3-4 अगस्त 2000

गुरुपाला (पश्चिम)

शिव शक्ति साधना शिविर

स्थान: द्याननद मून्जाल आंडाटीरियम लजदाक केम्पा कोला चौक स्कॉटर मार्केट लुधियाना पंजाब

सम्पर्क: रजेश खना 0161-538959, 497042 एक्स्ट्रा लिंग 0161-492177 घरपाल 0161-500312 बेला कुण्डा 0161-546143 हजोन 0161-477513 गवनर्नर

13 अगस्त 2000

मुसाबाल (महाराष्ट्र)

गुलामुला साधना शिविर

स्थान:

सम्पर्क: - * गोविन्द मिह बुद्धपल 02582-24169 * रमेश नाई 02582-25672 * मक्कल भाई 02582-25702 * आर. आर. पाटील 62545 * प्रनोद यादील 02582-75306 * नंदीगाई प्लेज 0257-212073 * रितोप मोरेखाणी 0257-227053 * डी. प्रदीप रावली 02596-43265

राष्ट्रीय, प्राकृतिक सूचिया इथाने दें

आपकी यह ग्रिय पृष्ठिका 'भ्र-त्र-व्य-व्य विज्ञान' अधिन गतिशील होता है, अपार्ट यह यह कृत बूल का है तो हमने जलाई एवं अग्रात मास के रातन तथा प्रदोष दिवे जाते हैं ऐसा क्यो? हमारी ये सृष्टानामें ले लिए यह वर्षकरण आदि की अवधिकान होती है जो मरु जिह द्वारा प्राप्तवर्ती युक्त हो जाएगी सुधिका के लिए पारदर्शक मानवाना में सहम होता है जिस पर कई जाते थे नहीं देखा जाता। यह आप याकूब रहते हैं और विजय लोह रहते हैं, फिर हमें यह में आप हो जाइन पर यात्राएँ रहते हैं जो सभग पर नहीं रहते ताक और आप उस यात्रा के बाहर रह जाते हैं। प्रथमकि आपका पाटटकाड दृष्ट तक पहुँचा। न 15-20 दिन का रात्य लग जाता है किंतु युक्तिले लिए पर गन्तव्य 15-18 दिन का समय लगता है तथा यात्रा तक वर्षे १५-१८, २०-२५ दिन तक लग जाते हैं इस सारी यात्रिया में ३०-३५ दिन लगता है यहाँसे जान जाते हैं कल्पयक विलय ते पाल्पुर्वी मेजाने ते यह साधन नुहत विकल जाता है और यह यात्रा से आप बहिर यह जाता है।

इतिहायदि आपले योग्य से ही सूचिया लाप्ती है तो यह झील-सूखत किये तुल्य योरदर्कड रह कर यह देना यादें यिससे के सभग पर साक्षी ग्राहक ही कृत सुविधा अप-उत्तम, टेलीसेवा - २२२-४३२२०३ वै-वा टेलीसेवा - ०२९१-४३२०१० ते यही यात्राएँ यह अद्यता ते रखते हैं। १५-१८-१५ यात्रा के लिए ताक ये यात्रिया नियम के अन्तर्गत यात्रा है आप यात्रा के बाहर योग्य यात्रा है तो आप यात्रा के बाहर योग्य २० दिन की यात्रा याकूब यात्रा के बाहर योग्य है।

यदि आप २० दिन से कम के यात्री यात्रा है तो आप यात्रा के बाहर योग्य २० दिन के बाहर योग्य है।

परम तत्त्व प्राप्त करने की हृदया रखने वाला
 जिभायु, आधान के मार्ग पर चलने की हृदया
 रखने वाला आधिक गुरु के पात्र जाए,
 जह बलकर और शुद्ध मिले तो
 गुम्हाया आदा भोह मिट जाए
 भिलाए मिट जाए शुद्ध मिलने के बाद
 शुद्ध भी बाकी न रह जाए,
 ज रुर्ध न थोक, ज भिलता न अथाति
 वही तो मिलन है गुम्हाया और गेता।

— श्रीमद्भवति स्वामी
 इति शिखने वाला रामेन्द्र जी।

गाह : गुरुदेव नियमित दिवसों पर दीक्षा

गृह्य गुरुदेव नियम नियमित दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक नियमित दिवसों पर गृह्य गुरुदेव दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं। नियमित दिवसों पर ये दीक्षाएँ प्रातः 11 बजे से 1 बजे के मध्य तथा साथ 1 बजे से 3 बजे के मध्य प्रदान की जायेंगी।

दिनांक

7-8-9 जुलाई 2000

स्थान

गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक

21 22 23 जुलाई 2000

स्थान

सिरकाश्रम (दिल्ली)



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

